अभिनव ज्योति

संयुक्तांक – सत्र : 2019–20, 2020–21

Where the mind is without fear
and the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been broken up into fragments
By narrow domestic walls
Where words come out from the depth of truth
Where tireless striving stretches its arms towards perfection
Where the clear stream of reason has not lost its way
Into the dreary desert sand of dead habit
Where the mind is led forward by thee
Into ever-widening thought and action
Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.

-Rabindranath Tagore

NAAC Accredited 'B' Grade

शिक्षा निदेशालय, उच्च शिक्षा (इलाहाबाद) द्वारा 'क' श्रेणी प्राप्त

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई (जालौन) उ.प्र.

सरस्वती वंदना

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अन्ध- उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष- भेद तम-हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर नव स्वर दे !

-'निराला'

अभिनव ज्योति

NAAC Accredited 'B' Grade

शिक्षा निदेशालय, उच्च शिक्षा (इलाहाबाद) द्वारा 'क' श्रेणी प्राप्त

संरक्षक

प्रो० (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय

प्राचार्य

प्रधान सम्पादक

डॉ० नीरज कुमार द्विवेदी

सम्पादक मण्डल

डॉ० सर्वेश कुमार शाण्डिल्य

डॉ० शीलू सेंगर

डॉ० आराम सिंह

डॉ० शरत् श्रीवास्तव

डॉ० नगमा खानम्

डॉ० जितेन्द्र प्रताप

संयुक्तांक – सत्र : 2019–20 एवं 2020–21

सन्देश

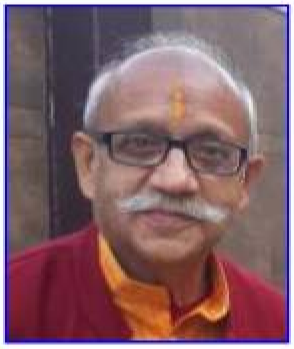

मेरे लिए यह एक गौरव का पल है जब 'अभिनव ज्योति' का संयुक्तांक (सत्र 2019–20 एवं 2020–21) महाविद्यालय प्रकाशित करने को तत्पर है। कोरोना काल ने समाज को व्यापक क्षति पहुंचाई है, इसी का परिणाम है कि इस अंक के प्रकाशन में विलम्ब हुआ। परन्तु यह संतोष का विषय है कि सम्पादक मण्डल के सतत् प्रयास से पत्रिका प्रकाशित होने की स्थिति में है। मेरा विश्वास है कि 'अभिनव ज्योति' का यह अंक छात्र–छात्राओं का मार्ग प्रशस्त करेगा, साथ ही उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास करने में सहायक होगा। मैं सम्पादक मण्डल को साधुवाद देता हूँ तथा महाविद्यालय परिवार को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। महाविद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. हरीमोहन पुरवार
अध्यक्ष / उपाध्यक्ष
प्रबन्धकारिणी कमेटी
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

सन्देश

यह जानकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभिनव ज्योति' का संयुक्तांक (सत्र 2019–20 एवं 2020–21) प्रकाशन हेतु तैयार है, क्योंकि विगत दो सत्रों में कोविड–19 के कारण समाज के विकास की गति पूर्णरूप से अवरुद्ध हो गई थी। इसके प्रभाव से हमारा महाविद्यालय भी अछूता नहीं रहा। विपरीत परिस्थितियों में भी हमारे महाविद्यालय परिवार ने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ पठन–पाठन और अन्य सभी गतिविधियों का संचालन किया, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। कॉलेज की प्रगति और पहचान ही हमारे अस्तित्व का आधार है। आइए हम सब अपनी पूरी ऊर्जा और सामर्थ्य के साथ अपनी संस्था की गरिमा को बढ़ाने में सहयोग करें–

सीढ़ियां उन्हें मुबारक जिन्हें छत तक जाना है,
मेरी मंज़िल तो आसमां है, रास्ता मुझे खुद बनाना है।

'अभिनव ज्योति' सम्पादक मण्डल के अनवरत् प्रयास व अदम्य इच्छाशक्ति से इस पत्रिका के प्रकाशन का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। अब यह पत्रिका सुधी विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत होगी। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह कोरोनाकाल में उपजे आत्मसंशय व पराजय के भावबोध को परे हटाकर विद्यार्थियों में गहन आत्मविश्वास व दृढ़ आस्था का भाव पैदा करेगी–

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले,
पर तुझे है नाश–पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना,
जाग तुझको दूर जाना।

रचनात्मकता व मौलिकता को प्रकाशपुंज बनकर 'अभिनव ज्योति' देश के इन भावी कर्णधारों के जीवन–पथ को आलोकित व सुवासित करे तथा उनमें भारत भूमि के प्रति सच्ची निष्ठा व देशभक्ति पैदा करे, यही मेरी मनोकामना है। अन्त में मैं सम्पादक मण्डल व महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ देते हुए महाविद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ0 देवेन्द्र कुमार
अवैतनिक मंत्री
प्रबन्धकारिणी कमेटी
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

सन्देश

यह बड़े ही गर्व की बात है कि जिस महाविद्यालय में विगत दो दशकों से सेवारत् था, उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज द्वारा वहीं के प्राचार्य का दायित्व भी दिया गया। सेवाकार्य के रूप में दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई मेरी मातृ संस्था है, इसी कारण मैं अपने मन में संस्था के प्रति प्रधान सेवक का भाव रखते हुये अपने दायित्वों का निर्वहन करता रहा हूँ और भविष्य में भी करता रहूंगा।

आज जब वर्तमान की देहरी पर खड़े होकर अतीत पर नज़र जाती है तो मन आह्लादित हो उठता है। विगत दो दशकों के अनुभव बड़े ही खट्टे–मीठे रहे। बहुत कुछ पाया, बहुत कुछ खोया। विगत वर्षों में कुछ समय के लिये कार्यवाहक प्राचार्य का अनुभव भी प्राप्त हुआ। महाविद्यालय की कार्यप्रणाली से लम्बा साक्षात्कार रहा, परन्तु जब किसी संस्था के मुखिया के रूप में दायित्व निर्वहन की बात सामने आती है तो सारे अनुभव धराशायी हो जाते हैं। विपरीत परिस्थितियाँ सुरसा के मुंह के समान विराट् और विकराल स्वरूप में पुनः–पुनः हमारे समक्ष उपस्थित होतीं हैं। एक तरफ तो सरकार और महाविद्यालय के प्रशासनिक कार्यों का अतिरेक और दूसरी तरफ शिक्षण–कार्य। ईश्वर की असीम कृपा से अभी तक तो इनके बीच संतुलन बना हुआ है और अनवरत् प्रयास है कि यह संतुलन कायम रहे।

महाविद्यालय का एक गौरवमयी इतिहास है, सुदृढ़ और समृद्ध परम्परा है। सुव्यवस्थित प्रबंधतंत्र है। सहयोगी शिक्षकगण एवं शिक्षणेतर कर्मचारीगण, शिक्षा के प्रति जागरुक छात्र–छात्राएं ही मेरी पूँजी है। इसी पूँजी के सहारे हमें विकास के नवीन आयाम गढ़ने हैं। कोई भी संस्था किसी एक व्यक्ति के बल पर आगे नहीं बढ़ सकती है। सबके सम्मिलित प्रयासों का ही प्रतिफल है कि हमारा महाविद्यालय आज बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के उत्कृष्ट महाविद्यालयों में सुनिश्चित है। हमारी कोशिश रहेगी कि इसे न केवल प्रदेश स्तर पर अपितु राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित स्थान प्राप्त हो।

मैं इस महाविद्यालय से जुड़े सभी ऊर्जावान व्यक्तियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए सम्पादक मण्डल के साथ समस्त महाविद्यालय परिवार के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

प्रो० (डॉ०) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य
दयानन्द वैदिक कॉलेज
उरई (जालौन)

सम्पादकीय

सन् 2019 में कोविड–19 नामक वायरस से फैलने वाली कोरोना नामक बीमारी ने वैश्विक महामारी का रूप धारण कर मानव समाज के समक्ष एक बड़ी चुनौती उपस्थित की है। चीन के वुहान से पैदा होकर सारे विश्व को अपने कब्जे में लेने वाली इस बीमारी ने निश्चित रूप से मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि सभी मानवीय पहलुओं पर व्यापक क्षति पहुंचाई है। परन्तु प्रकृति का नियम है कि किसी भी विषय के दो पहलू होते हैं नकारात्मक और सकारात्मक। नकारात्मक पहलू तो सर्वविदित हैं। इसके कुछ सकारात्मक पहलू भी रहे हैं यथा पर्यावरणीय प्रदूषण, सामाजिक दुराचार, सरकारी मशीनरी और कर्मचारियों, आमजन का सहयोग, आत्मनिर्भरता, दैनिक जीवनचर्या, वास्तविक और न्यूनतम् आवश्यकताओं का पता कर उन्हें नियंत्रित करना, योग, पौष्टिक आहार, शाकाहार आदि के माध्यम से शरीरिक प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि हेतु सजगता होना आदि। परन्तु आज, जब हम इस महामारी से मुक्त होने के कगार पर हैं, तब भी बहुत सारी गतिविधियां हमें शिक्षित करने हेतु उपस्थित हैं। महामारी के दौरान हमने जो–जो शिक्षाएं पायीं वह अल्प समय में ही भूल चुके हैं। चाहे प्रदूषण का मुद्दा हो या सामाजिक नैतिकता का सब ताक पर रख अपने पुराने फार्म में लौट आए हैं जो कि पृथ्वी के सम्पूर्ण जीव जगत के लिए सकारात्मक संकेत नहीं कहे जा सकते। हम विकास के नाम पर अने वाली पीढ़ियों के लिए एक असुरक्षित पर्यावरण छोड़कर जा रहे हैं। हमें सचेत और सजग रहकर पृथ्वी के भविष्य को संवारने के लिए सदैव तत्पर रहना होगा।

मैं आभारी हूँ पत्रिका के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष / उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार जी का जिन्होंने पत्रिका के प्रति न केवल अपनी रूचि दिखाई अपितु समय–समय पर यथावश्यक दिशा–निर्देशों से सम्पादक मण्डल को अभिसिंचित किया। मैं विशेष रूप से आभारी हूँ महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के माननीय अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेन्द्र कुमार जी का जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। मैं कृतज्ञ हूँ पत्रिका के तत्कालीन सम्पादक मण्डल (सत्र 2019–20, 2020–21) के सभी सम्मानित सदस्यगणों (डॉ. राजेश पालीवाल, डॉ. अलकारानी पुरवार, डॉ. माधुरी रावत, डॉ. नमो नारायण, डॉ. गौरव यादव, डॉ. सर्वेश कुमार शांडिल्य) के प्रति जिन्होंने संयुक्तांक हेतु सामग्री संकलन, चयनित एवं व्यवस्थित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया।

पत्रिका के कलेवर को अंतिम रूप प्रदान करने हेतु वर्तमान सम्पादक मण्डल के सभी सहयोगियों के प्रति विशेषरूप से आभारी हूँ। उन सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनका रचनात्मक सहयोग इस अंक को प्राप्त हुआ है। विवेक ऑफसेट, उरई के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह पत्रिका मुद्रित हो रही है। मैं महाविद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी
प्रधान सम्पादक

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
	विचार वीथिका		
1.	दीपक	डॉ. हरीमोहन पुरवार 'बुन्देलरत्न'	09
2.	विकास का मन्त्र है जनसंख्या नियंत्रण	डॉ. आनन्द कुमार खरे	12
3.	बुन्देलखण्ड की क्रान्ति के सूत्रधार–नाना साहब धूधूपंत	डॉ. डी.के. सिंह	14
4.	न हारे थे, न हारेंगे	डॉ. राजन भाटिया	17
5.	कोरोना और बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य	डॉ. माधुरी रावत	19
6.	अनिश्चितता हमें क्या सिखा सकती है	डॉ. साम्या बघेल	21
7.	मानवता के पथ प्रदर्शक : स्वामी विवेकानन्द	मु. जुनैद	24
8.	गंगा की निर्मलता एवं जल संरक्षण	कुमारी सुषमा	26
9.	गंगा की निर्मलता एवं जल संरक्षण	राधा शिवहरे	27
10.	अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को मरहठों की चुनौती	डॉ. हरीमोहन पुरवार 'बुन्देलरत्न'	28
11.	कोरोनो वायरस का भारतीय ढांचे पर कुठाराघात	डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान	33
12.	सन्तकाव्य के विविध पहलू	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	35
13.	महिला सशक्तिकरण और सुशासन	श्रीमती वर्षा राहुल	38
14.	पर्यावरण संरक्षण : चुनौतियां एवं समाधान	डॉ. गौरव यादव	42
15.	दैनिक जीवन में मनोविज्ञान	डॉ. माधुरी रावत	44
16.	नया युग, नई चुनौतियां : रोजगार की नई सम्भावनायें	प्रगति पाण्डेय	46
17.	व्यक्ति के जीवन में धर्म एवं राष्ट्र की भूमिका	अनुरुद्ध प्रताप सिंह	48
18.	नया युग नई चुनौतियां : रोजगार की नई सम्भावनायें	प्रगति मिश्रा	50
19.	व्यक्ति के जीवन में धर्म एवं राष्ट्र की भूमिका	नेहा	52
20.	ब्रासीलिया डिक्लेरेशन	वागीशा खरे	54
21.	Conservation of Wetlands	डॉ. विजय कुमार यादव	56
22.	Be A Student	डॉ. विजय कुमार चौधरी	57
23.	Corona	प्रतिमा पुरवार	58
24.	Nayi Taleem	ज्योति कुशवाहा	61
25.	Integrity : A Way of Life	वागीशा खरे	62
26.	National Education Policy-2020 for Self-Reliant India	डॉ. शैलजा गुप्ता	63
27.	Xenobots	डॉ. रश्मि सिंह	66
28.	Criticl Analysis of NEP 2020	डॉ. जीतेन्द्र प्रताप	68
29.	Importance of Education in women equality in India	शिवेन्द्र सिंह निगम	71

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
	काव्यवीथिका		
1.	महामानव से साक्षात्कार	डॉ. अलकारानी पुरवार	76
2.	लॉकडाउन	डॉ. के.के. निगम	76
3.	लोकसमता गीत	डॉ. मलिखान सिंह	77
4.	पाखण्डवाद पर कबीर साहब की वाणी	डॉ. मलिखान सिंह	77
5.	मैं किसान का बेटा हूँ	गौरव कुमार	78
6.	प्रवासी मजदूर	अमित कुमार	79
7.	देशभक्ति गीत	ब्रजराज सिंह	80
8.	कामयाबी की दास्तान	कुमारी शिखा	80
9.	पर्यावरण दिवस	अनुज कुशवाहा	81
10.	वृक्ष	नेहा राजपूत	81
11.	अटल विहारी वाजपेयी	नेहा राजपूत	82
12.	कलम की पुकार	विवेक कुमार यादव	82
13.	कुछ कर गुजरने का जुनून	अंजली वर्मा	83
14.	अहसास मेरे मन के	दीक्षा मारवाड़ी	84
15.	स्वच्छ भारत का लक्ष्य	अंकुर सिंह	85
16.	धर्म का स्वरूप	कृष्णपाल सिंह	85
17.	कुछ अलग करना होगा	शैलेन्द्र वर्मा	86
18.	समय	प्रशान्त कुमार	86
19.	किताबों से दोस्ती	आरिध्या गुबरेले	87
20.	सुन लो हिन्दुस्तान	डॉ. नीता गुप्ता	88
21.	हिन्दी सी तकदीर	मुहम्मद जुनैद	90
	परिषदीय गतिविधियाँ		
1.	हिन्दी साहित्य परिषद	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	91
2.	संस्कृत साहित्य परिषद	डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य	92
3.	English Association Report	डॉ. शीलू सेंगर	94
4.	राजनीति विज्ञान परिषद	डॉ. नगमा खानम्	96
5.	अर्थशास्त्र परिषद	श्रीमती वर्षा राहुल	98

अनुक्रमणिका

क्र. शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
6. भूगोल विभाग परिषद	डॉ. गौरव यादव	100
7. संगीत विभाग परिषद	डॉ. के. के. निगम	101
8. इतिहास विभाग परिषद	डॉ. मंजू जौहरी	102
9. जन्तु विज्ञान परिषद	डॉ. आलोक पाठक	103
10. गणित विभाग परिषद	डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान	106
11. वनस्पति विज्ञान परिषद रिपोर्ट	डॉ. आर. के. गुप्ता	107
12. शिक्षक–शिक्षा विभाग	डॉ. राजेश पालीवाल	109
13. मनोविज्ञान परिषद रिपोर्ट	डॉ. माधुरी रावत	112

परिसर गतिविधियां

1. राष्ट्रीय सेवा योजना : प्रगति आख्या 114
2. रोवर–रेंजर : वार्षिक रिपोर्ट 123
4. वीमेन सेल : प्रगति आख्या 127
5. Report of the Environment Committee 128
6. समारोह दृश्य श्रव्य समिति : प्रगति आख्या 138
7. राष्ट्रीय बेव संगोष्ठी की रिपोर्ट 140

सेवानिवृत्त

1. डॉ. तारेश भाटिया 142
2. श्री अनन्त कुमार खरे 143
3. श्री कौशल किशोर द्विवेदी 143
4. श्री जगदीश यादव 143

स्मृतिशेष

1. डॉ. यामिनी 144
2. डॉ. राजेन्द्र कुमार निगम 145
3. डॉ. आनन्द कुमार खरे 145
4. डॉ. योगेन्द्र बैचेन 147
5. श्री सुबोध कुमार सरोज 148

चित्र वीथिका

1. महाविद्यालय में सत्र पर्यन्त संचालित गतिविधियों की छवियां 149

दीपक

डॉ0 हरीमोहन पुरवार 'बुन्देलरत्न'
अध्यक्ष / उपाध्यक्ष, प्रबंधकारिणी कमेटी
डी0 वी0 कालेज, उरई

दीपक! ऐसा शब्द, जिसके उच्चारण मात्र से आभास होता है कि जैसे दीपावली का आगमन हो रहा हो, खुशियों की सरिता प्रवाहित हो रही हो, आनन्द का सागर अठखेलियां कर रहा हो। परन्तु दीपावली ही क्यों ? हिन्दू जनमानस के प्रत्येक शुभकर्म का प्रारम्भ ही दीप प्रज्ज्वालन से प्रारम्भ होता है। सोलह संस्कारों, पूजा–पाठ, उत्सवों, आराधना, उद्‌घाटन और अन्य कुछ भी शुभाशुभ की शुरुआत दीप जलाने से ही होती है। हम सभी अन्धेरे से प्रकाश की ओर आना चाहते हैं। जैसे बृहदारण्यक उपनिषद् (1:3:28) में वर्णन मिलता है'

"तमसो मा ज्योतिर्गमय

अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना। हमारा जीवन प्रकाश पर आधारित है। प्रकाश का मूल स्रोत सूर्य है और दीपक सूर्य का ही अंश है। ऋग्वेद की ऋचा में कहा गया है–

"सूर्यांश–संभवो दीपः"

अर्थात् सूर्य के अंश से ही दीप की उत्पत्ति हुई है। दीपक का इतिहास भी बहुत पुराना है। लगभग 5000–6000 वर्ष पूर्व से दीपक के अस्तित्व में होने के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं। तमाम गुफाओं में निर्मित शैल / भित्ति चित्रों के निर्माण के समय प्रकाश की व्यवस्था दीपक के सहारे ही की गई होगी। मोहन–जोदड़ो की सभ्यता के अवशेषों से ज्ञात होता है कि उस समय के घरों के कमरों में दीवार में दीपक रखने के लिये आलों का निर्माण होता था। सड़क के दोनों ओर प्रकाश हेतु दीप योजना होती थी। घर के द्वारों पर दीपक रखने के लिये कमानदार अलंकरण युक्त आलों का निर्माण किया जाता था। इसीलिये वहाँ की खुदाई में पकी हुई मिट्टी के तमाम दीपक मिले हैं। संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'रघुवंश' महाकाव्य में दीप वर्णन इस प्रकार मिलता है–

"संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ,
यं–यं व्यतीताय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे।
विवर्णभावं स–स भूमिपालः।।

अर्थात् स्वयंवर में वर चुनने की प्रक्रिया में इन्दुमती जयमाला लिये राजाओं की पंक्ति के बीच से चल रही है। जलती (चलती) हुई दीपशिखा (मशाल) की भांति जिस राजा के समीप से निकल जाती थी, वह राजा प्रकाश के आगे बढ़ जाने पर अंधेरी अट्टालिकाओं की भांति कांति विहीन हो जाता था।

हिन्दू समाज में दीपक का अत्यन्त महत्व है। इसीलिये हमारे धर्मग्रन्थों में कहा गया है–

"शुभं करोति कल्याणम्, आरोग्यं धन–संपदाम्।
शत्रु–बुद्धि–विनाशाय, दीपज्योतिः नमोस्तुते।।"

अर्थात् सुन्दर और कल्याणकारी, आरोग्य और सम्पदा को देने वाले हे दीप! हमारी बुद्धि के विकास हेतु, हम तुम्हें प्रणाम करते हैं।

दीपक की ज्योति जिस प्रकार से अंधेरे को समाप्त करती है और प्रकाश का आनन्द देती है, उसी प्रकार से इस स्थूल शरीर के प्राणों को 'जीवन ज्योति' कहकर पुकारा गया है।

इसी प्रकार से ईसाई धर्म में भी 'ज्योति' को शांति का प्रतीक माना जाता है। इसके जलने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। वहाँ 'ज्योति' आम–तौर पर मोमबत्ती के रूप में प्रयोग में लाई जाती है। अलग–अलग रंगों की मोमबत्तियों का प्रभाव भी अलग–अलग होता है। जैसे– हरे रंग की ज्योति–शिक्षा हेतु, गुलाबी ज्योति–आपसी प्रेम हेतु, लाल ज्योति–घर की समस्यायें दूर करने हेतु, पीली ज्योति–मानसिक समस्याओं के निराकरण हेतु और श्वेत ज्योति–शांति के लिये उपयोग में लाई जाती है।

इस्लाम धर्म में भी दीपक यानी चिराग का वर्णन मिलता है। मेरे मित्र श्री अय्यूब अहमद खां ने 'हदीस' के हवाले से बतलाया कि लगभग 1400 वर्ष पहले जब मुहम्मद साहब अल्लाताला से मिलने सातवें आसमान पर स्थित उनके घर "मैराज" पर मिलने गये थे तो यहाँ पर अपने घर में चिराग जलता छोड़ गये थे और जब वे मैराज के सफर से वापिस लौटकर आये तब भी उन्हें अपने घर में वही चिराग वैसा ही जलता हुआ मिला, जैसा वे छोड़ गये थे। इस दृष्टान्त से यह स्पष्ट है कि उस समय चिराग अस्तित्व में था।

18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी लेखक "अंटोनी गलांड" ने अपने कहानी संग्रह 'दि अरेबियन नाइट्स में अलिफ लैला की कहानी जोड़ी, जिसमें अलादीन के जादुई चिराग (दीपक) का विस्तार से वर्णन मिलता है।

वस्तुतः दीपक वह पात्र है, जिसमें रुई की बाती और तेल/घी डालकर ज्योति जलाई जाती है। दीपक का तेल/घी वाला भाग–मिट्टी, आटा, पीतल, तांबा, लोहा, स्वर्ण या रजत का हो सकता है। धर्मग्रन्थों के अनुसार मूंग, चावल, गेंहू, उड़द और ज्वार के समभाग आटे के मिश्रण द्वारा निर्मित दीपक को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि मूंग गतिशीलता, चावल–रसिकता, गेंहू–गम्भीरता, उड़द–संयुक्तता तथा ज्वार–कठोरता के गुणों का प्रतीक है। गतिशीलता, रसिकता, गम्भीरता, संयुक्तता और कठोरता आदि गुणों से युक्त दीपक जब प्रकाशित होता है तो चहुंओर आनन्द ही आनन्द होता है। पीतल के दीप आयु और आयवृद्धि कारक होते हैं।

विभिन्न इच्छापूर्ति हेतु दीपकों की दिशा भी सुनिश्चित की गई है जैसे–आयु वृद्धि हेतु–पूर्व दिशा में, धनलाभ, व्यापार उन्नति, वेतन वृद्धि आदि हेतु–उत्तर दिशा में दीपक रखना चाहिये।

इसी भाँति दीपक का वर्गीकरण उनके रंगों के अनुसार निम्नवत् है–

01. श्वेत दीप– शिव एवं सद्गुरु आराधना हेतु श्वेत रंग के दीपक का प्रयोग किया जाता है।

02. रक्त दीप–रक्त के समान लाल रंग के दीपक का उपयोग, मातृवन्दना एवं शक्ति उपासना हेतु किया जाता है।

03. पाण्डु दीप– हल्दी के समान पीले रंग के दीपक का प्रयोग, श्री गणेश एवं श्री विष्णु तथा उनके अवतारों की पूजा हेतु किया जाता है।

आमतौर पर पूजन के समय शुद्ध घी के दीपक को अपने आसन के दायीं ओर तथा तेल युक्त दीपक को बायीं ओर रखना चाहिये।

वास्तुशास्त्र के अनुसार तिल के तेल का दीपक मानव शरीर में मूलाधार चक्र एवं स्वाधिष्ठान चक्र को एक सीमा तक पवित्र करता है वहीं शुद्ध घी का दीपक पूर्णरूप से कुण्डलिनी जागरण हेतु सप्तचक्रों में

मणिपुर तथा अनाहत चक्रों को शुद्ध करता है। नारियल तेल का दीपक श्री गणेश जी को अत्यन्त प्रिय है।

दीपकों की संरचना तथा उन पर उकेरी गई आकृति अथवा उनके साथ जोड़ी गई आकृतियों के आधार पर भी दीपकों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है जैसे–श्री गणेश आकार युक्त दीप, मयूर आकार युक्त दीप, पुष्प आकार युक्त दीप, पत्ती आकार युक्त दीप, शंख आकार युक्त दीप, ओंकार युक्त दीप, हस्ति आकार युक्त दीप, कच्छप आकार युक्त दीप, वेदिका आकार युक्त दीप, चक्र आकार युक्त दीप, हंस आकार युक्त दीप, बांसुरी आकार युक्त दीप, बतख आकार युक्त दीप, मंगल कलश दीप, मनभावन दीप, कूप आकार युक्त दीप, गृह आकार युक्त दीप, आदि।

इसी भाँति दीपकों में बनाये गये मुख के आधार पर भी हम दीपकों को, एक मुखी, द्विमुखी, त्रिमुखी, चर्तुमुखी, पंचमुखी, षट्मुखी, सप्तमुखी, बहुमुखी आदि में वर्गीकृत कर सकते हैं।

धर्मग्रन्थों में देवताओं की प्रसन्नता हेतु दीपक में जलने वाली बत्ती की संख्या का भी निर्धारण किया गया है। गूगल बाबा के अनुसार श्री गणेश आराधना हेतु–तीन बाती, श्री सरस्वती आराधना हेतु– दो बाती, श्री दुर्गा आराधना हेतु– एक बाती, श्री शिव आराधना हेतु–आठ या बारह बाती, श्री हनुमान आराधना हेतु–आठ बाती, श्री विष्णु आराधना हेतु–सोलह बाती और चौमुखी कालका हेतु–चार बातियों का प्रयोग बतलाया गया है।

श्री लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्त करने हेतु गहरे दीपक तथा श्री हनुमान जी की कृपा हेतु–त्रिकोणीय दीपक का प्रयोग बतलाया गया है

तेल का दीपक बुझने के आधा घण्टे बाद तक तथा घी का दीपक बुझने के चार घण्टे के बाद तक सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बनाये रखता है। घी का दीपक तो इडा, पिंगला और सुषुम्ना तीनों नाड़ियों को जाग्रत करने में अपना विशिष्ट योगदान देता है, तभी तो कहा गया है–

"यो दीप ब्रह्मस्वरूपस्त्वम्"

अर्थात् इस दीपक को ही ब्रह्म स्वरूप समझना चाहिए।

दीपक की ज्योति के विषय में पुरुषोत्तम माहात्म्य में वर्णन मिलता है–

"रुक्षैःलक्ष्मी विनाशः स्यात् श्वेतैन्न क्षयो भवेत्।
अतिरक्तेषु युद्धानि, मृत्युः, कृष्णशिखीषु च।।"

अर्थात् कोरी रूखी ज्योति लक्ष्मी का नाश, श्वेत ज्याति अन्न का नाश, अति लाल ज्योति युद्ध कराती और काली ज्योति मृत्यु की द्योतक है।

इसी कारण दीपक को कभी भी फूंक मारकर नहीं बुझाना चाहिए। जलते दीपक से कभी भी धूप–अगरबत्ती आदि नहीं जलाना चाहिए तथा अपने अनुष्ठान में कभी भी खण्डित दीपक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

दीपक अंधेरे का नाश करता है अतः इसका एक स्वरूप भी देखने को मिलता है। जब बिजली की सुविधा नहीं थी तब रात्रि में प्रकाश के लिए 'ढिबरी' का प्रयोग होता था। इस ढिबरी में एक मोटी बत्ती होती है तथा मिट्टी के तेल से इसे जलाया जाता है। मिट्टी का तेल भरने के लिए किसी काँच की शीशी या किसी लोहे की डिब्बी (ऊर्ध्वाकार) आमतौर पर प्रयोग किया जाता है।

दीपक का यह प्रयोग सदैव करना चाहिए। पूजनोपरान्त दीपक की लौ से कपूर जलाकर पूरे घर में घुमाना चाहिये। इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है तथा सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ जाता है। इस प्रकार दीपक सभी मनुष्यों के लिये किसी न किसी रूप में उपादेय है।

विकास का मंत्र है जनसंख्या नियंत्रण

डॉ. आनन्द कुमार खरे
सह आचार्य एवं विभाग प्रभारी
समाजशास्त्र विभाग

भारत विश्व में सबसे पहला देश था, जिसने 1952 में परिवार नियोजन कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर शुरु किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि केन्द्र एवं राज्य सरकारों के सामूहिक प्रयास से पिछले कुछ दशकों में देश की जनसंख्या वृद्धि दर में सन्तोषजनक कमी आई है। इसके बाद भी जनसंख्या जिस हिसाब से बढ़ रही है, उससे 2026 तक 40 करोड़ अतिरिक्त लोगों का दबाव हमारे सीमित संसाधनों पर बढ़ जाएगा। यही नहीं, भारत जनसंख्या के मामले में चीन को भी पीछे छोड़ देगा।

भारत की जनसंख्या बढ़ने का प्रमुख कारण बढ़ती जन्म दर एवं घटती मृत्यु दर है। प्राकृतिक आपदाओं एवं महामारी पर काबू पाने और बेहतर चिकित्सीय सेवाओं के उपलब्ध होने से देश में मृत्यु दर पहले से बहुत कम हो गयी है। जन्म दर के बढ़ने की गति धीमी होने के बावजूद बढ़ती जनसंख्या विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का कारण बनी हुई है आज बेरोजगारी, गरीबी और पर्यावरण पर दुष्प्रभाव जैसी समस्याओं से हमारा देश संघर्ष कर रहा है तो इसका एक बड़ा कारण हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या है जनसंख्या विरफोट से लोगों को परिचित कराने के लिए 11 जुलाई का दिन जनसंख्या दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की संचालक परिषद् की ओर से 1989 में यह दिन मनाना शुरु किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य है व्यक्ति, समाज, सरकार और योजनाकारों के मन में इस विषय से सम्बन्धित समस्याओं के प्रति चेतना और संवेदना जगाना, साथ ही लोगों में बढ़ती जनसंख्या से जुड़ी समस्याओं और खतरों के बारे में जागरुकता फैलाना। इस विशेष दिवस द्वारा लोगों को परिवार नियोजन के महत्व के साथ–साथ माता एवं बच्चे के स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, गरीबी, शिक्षा, प्रजनन अधिकार आदि से परिचित कराया जाता है। इसके अलावा बालविवाह से जुड़ी शारीरिक और मानसिक परेशानियों, यौन रोगों से बचाव जैसे विषयों पर भी जानकारी दी जाती है। विभिन्न गैर सरकारी संगठन, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन सरकार के साथ मिलकर इस दिवस पर इन मुद्दों के समाधान निकालने का प्रयास करते हैं।

यह समझने की जरूरत है कि जब महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और राजनीतिक भागीदारी द्वारा सशक्त किया जाएगा तभी वे अपने से जुड़ी प्रजनन सम्बन्धी समस्याओं का भी समाधान कर पाएंगी। शोध ने यह साबित किया है कि जो महिलाएं सशक्त हैं वे प्रजनन सम्बन्धी निर्णय सबसे अच्छी तरह से लेती हैं। यह समय की मांग है कि परिवार कल्याण जैसे कार्यक्रमों को सामाजिक प्रमुखता देते हुए घर–घर तक पहुँचाने का कार्य सरकारों की प्राथमिकता में होना चाहिए। विशेष तौर पर पिछड़े वर्ग की महिलाओं, आदिवासी महिलाओं एवं किशोरियों को आशा कर्मचारियों की सहायता से परिवार नियोजन और यौन शिक्षा के बारे में जानकारी देने का काम सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। आने वाली पीढ़ी, चाहे वे लड़के हों या लड़कियां, सभी को जनसंख्या वृद्धि जैसे–संवेदनशील विषय की गंभीरता के सन्दर्भ में शिक्षित बनाया जाना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि जिन परिवारों की महिलायें शिक्षित हैं उनके यहाँ बच्चों की संख्या कम है। निःसंदेह पुरुषों में भी जागरुकता फैलाना जरूरी है। यह निराशाजनक है कि पुरुषों में नसबन्दी के प्रति

स्वीकार्यता न के बराबर है। इस शल्यक्रिया से जुड़ी भ्रांतियां दूर करने की अभी भी बहुत आवश्यकता है। प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़े कानूनों के बारे में भी पुरुषों, महिलाओं और किशोरियों को परिचित कराने की जरूरत बनी हुई है। इस जरूरत की पूर्ति के बाद ही वे स्वास्थ्य सम्बन्धित सुविधाओं को आसानी से प्राप्त कर सकेंगी और अपने आपको अनेक गंभीर रोगों से बचा सकेंगी। भारत में अभी भी बहुत बड़ी संख्या में लड़कियों का शादी अल्पायु में ही ग्रामीण क्षेत्रों में ही हो जाती है। यह स्थिति उन्हें जल्दी और बार–बार माँ बनने के चक्र में पहुँचा देती है यह उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होता है।

विवाह के लिए निर्धारित उम्र से जुड़े कानून का कठोरता से पालन होना चाहिए, ताकि किशोरियां शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य सुविधाओं से वंचित न रहें, हम सभी इससे अवगत हैं कि भारत एक पितृसत्तात्मक देश है। समाज में अभी भी महिलाओं की प्रतिष्ठा उनके बेटे को जन्म देने से जुड़ी है। समाज में फैली इस पारंपरिक सोच को दूर करना जरूरी है, क्योंकि अभी भी यह देखा जाता है कि जब तक महिलायें बेटे को जन्म नहीं देती तब तक उनके ऊपर पति एवं परिवार द्वारा बार–बार संतान के जन्म हेतु दबाव बनाया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से राज्य सरकारों ने ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए चौपालों, सम्मेलनों आदि का आयोजन शुरु किया है इनमें महिलाओं की ही भागीदारी होती है ताकि जनसंख्या नियंत्रण हेतु परिवारों में महिलाओं को जागरुक किया जा सके।

हमारे देश में औसत परिवारों में घर की बहू की भूमिका परिवार और परिवार नियोजन के बारे में नगण्य होती है। यह उनके हाथ में नहीं होता कि वह निर्णय लें कि उन्हें बच्चा चाहिए या नहीं या फिर कितने बच्चे चाहिए ? सुरक्षित एवं शैक्षिक परिवार नियोजन हर एक नागरिक का अधिकार है और यही लोगों को सशक्त बनाएगा भारत की आधी आबादी महिलाओं की है मगर वे सशक्त हो जायें तो देश जनसंख्या विस्फोट की समस्या से निकलकर प्रगति के पथ पर आसानी से बढ़ जायेगा। यह समझना भी आवश्यक है कि पुरुष और महिलाएं, दोनों के सशक्तीकरण से ही एक उन्नत देश का निर्माण होगा।

'राजा की वाणी'

वन–विहार के लिए आए हुए राजा का जहाँ पड़ाव था, उसी के पास एक कुएँ एक अंधा व्यक्ति यात्रियों को कुएँ से जल निकालकर पिलाया करता था। वन में राजा को प्यास लगी, उसने सिपाही को पानी लाने भेजा। सिपाही वहाँ जाकर बोला– ''ओ रे अंधे एक लोटा जल इधर दे।'' सूरदास ने कहा– ''जा भाग, तुझ जैसे मूर्ख नौकर को पानी नहीं देता।'' सिपाही खीझकर वापस लौट गया। अब प्रधान सेनापति स्वयं वहाँ पहुँचे और कहा–"अंधे भाई, एक लोटा जल शीघ्रता से दे दो।" अंधे ने उत्तर दिया–"कपटी मीठा बोलता है। लगता है कि पहले वाले का सरदार है। मेरे पास तेरे लिए पानी नहीं।" दोनों ने राजा से शिकायत की–"महाराज ! बुड्ढा पानी नहीं देता।" राजा उन दोनों को लेकर स्वयं वहाँ पहुँचा और नमस्कार कर कहा– "बाबा जी! प्यास से गला सूख रहा है, थोड़ा जल दें तो प्यास बुझाएँ।" अंधे ने कहा–"महाराज! बैठिए, अभी जल पिलाता हूँ।" आपसे पहले आपका नौकर फिर सरदार पानी लेने आए थे।

राजा ने पूछा–"महात्मन्! अपने आँखों में ज्योति न होकर भी यह कैसे जाना कि एक नौकर है तथा दूसरा सरदार और मैं राजा हूँ।" बुड्ढे ने हँसकर कहा–"व्यक्ति की वाणी से उसके व्यक्तित्व का पता लग जाता है।" अतः अपनी वाणी को सुधारकर बोलना चाहिए।

आमंत्रित आलेख

बुन्देलखण्ड की क्रान्ति के सूत्रधार नाना साहब धूधूपंत

डॉ. डी.के. सिंह
इतिहास विशेषज्ञ, झांसी

बुन्देलखण्ड में 1857 की क्रान्ति के सूत्रधार रणनीतिकार तथा कूटनीतिज्ञ बिठूर के नाना साहब धूधूपंत ही थे।

1857–58 की क्रान्ति का समग्र रूप से गहन अध्ययन करने पर ही नाना साहब के चरित्र और क्रान्ति में उनके योगदान को समझा जा सकता है। आइये उनकी भूमिका के बारे में संक्षेप में चर्चा करें। पूना के पेशवा बाजीराव द्वितीय को अंग्रेजों से पराजित होने पर निर्वासित जीवन व्यतीत करने के लिये कानपुर से कुछ दूरी पर बिठूर नामक स्थान पर रहने के लिए बाध्य किया गया। उनको उनके तथा परिवार के भरण पोषण के लिए आठ लाख रुपये वार्षिक दिये जाने की सन्धि द्वारा व्यवस्था की गयी थी।

बाजीराव द्वितीय की मृत्यु जनवरी 1851 में हुई। मृत्यु से पूर्व ही बाजीराव ने धूधूपंत उर्फ नाना साहब सदाशिव पंत उर्फ दादा साहब और गंगाधर राव उर्फ बाला साहब को गोद लिया था तथा नाना साहब को अपना उत्तराधिकारी नामित किया था। मृत्यु के समय बाजीराव द्वारा छोड़ी गई सम्पति का मूल्य लगभव तीस लाख रुपये था। बाजीराव की मृत्यु के बाद कम्पनी सरकार ने उनको मिलने वाली आठ लाख रुपये वार्षिक की पेंशन तुरन्त बन्द कर दी। नाना साहब का कहना था कि सन्धि में पेंशन "फार द सपोर्ट आफ हिम एण्ड फैमिली" लिखा है अतः फैमिली के रहते पेंशन मिलनी चाहिए। अतः उन्होने कानूनी रूप से जो प्रक्रिया की जानी चाहिए वही शुरु की।

कानूनी रूप से अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जा सकता था वह सब नाना ने किया। उस जमाने में राजों महाराजों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया इस प्रकार थी। सबसे पहले सूबे के लेफ्टीनेन्ट गवर्नर को अर्जी दी जाती थी। वहां सफलता न मिलने पर गवर्नर जनरल के यहां अपील की जाती थी। वहां भी फैसला यदि आपके पक्ष में नहीं होता था और यदि पैसे वाले हैं तो लन्दन में कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर के पास अपील होती थी और वहां पर भी सफलता न मिलने पर अन्तिम अपील इंग्लैंड के राजा या रानी (प्रीवी कौंसिल) से होती थी।

नाना साहब ने भी इसी प्रक्रिया को अपनाया था उन्होने अजीमुल्ला को अपने पैरवी के लिए भेजा था। अतः यह कहना कि अजीमुल्ला एवं नाना साहब पेंशन के लिए अंग्रेजों के सामने रोते रहे सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है एवं इतिहास विदों की संकुचित मनोवृत्ति को दर्शाता है। अपने अधिकार को कानूनी रूप से प्राप्त करने को रोना तो नहीं ही कहा जाना चाहिए। जब संवैधानिक रूप से अधिकार प्राप्त नहीं

होता तब मनुष्य में क्रोध और क्रान्ति की भावना जन्म लेती है। यही नाना साहब के साथ भी हुआ। इसके बाद जब हम नाना के क्रियाकलापों को देखते हैं तो पाते हैं कि वह कितने बड़े कूटनीतिज्ञ और क्रान्ति के प्रणेता था। अंग्रेज उनकी नियत को काफी समय तक समझ ही नहीं सके थे।

मुकदमा हारने के बाद भी नाना ने कभी भी उनसे बैरभाव जाहिर नहीं किया। उनसे गहरी दोस्ती कर उनकी छावनी में आते जाते रहे और अपनी रणनीति बनाते रहे। एस. सेन ने अपनी पुस्तक "एट्टीन फीफ्टी सेवन में लिखा–नाना द्वारा कानपुर गैरीजन को अकसर दावत दी जाती थी।" नाना ने अपने नेटवर्क को बढ़ाना शुरु किया। वह बनारस और कालपी गये। दोनों स्थानों पर मराठों की भारी संख्या निवास करती थी। फिर नाना लखनऊ गये। वहां अंग्रेजों की बड़ी भारी छावनी थी। वहां का हाल लेना जरूरी था। वहां भी वह अंग्रेज मिलिट्री अधिकारियों के साथ घुले मिले रहे। मैटक्लाफ ने लिखा कि नाना ने रेजीमेंटल घोड़ों की दौड़ को देखा। तीन दिन तक वे लखनऊ में रुके। यदि कोई इतिहासविद् नाना की इस दिनचर्या को देखकर यह धारणा बना ले कि नाना–"ईट ड्रिक और बीमैरी" का जीवन व्यतीत कर रहे थे तो कोई आश्चर्य नहीं। मगर अब अंग्रेजों को नाना पर कुछ–कुछ संदेह हो रहा था। संदेह इस कारण हुआ कि बनारस तो तीर्थस्थल था। वहां जाना तो ठीक था परन्तु कालपी और लखनऊ तो तीर्थस्थल नहीं थे वहा नाना क्यों गये। बाद में अंग्रेज अधिकारी टकर ने कहा–नाना वाज एट द रेसेज एण्ड शिपिंक कॉफी विद अवर आफीसर एण्ड आल द टाइम वाज प्लालिंग द म्यूटिनी"।

अब जब 1857 में कानपुर में क्रान्ति शुरु हुई नाना तीन सौ सवारों सब हथियार बन्द तथा दो तोपों के साथ कानपुर आ गए। कानपुर के सब अंग्रेज सुरक्षा घेरे में चले गये। नाना को पेशवा घोषित किया गया। वहां उनका राज्य स्थापित हो गया। बादशाह होने में क्या कोई कसर नहीं है। कानपुर के नानकचन्द ने अपनी गवाही में कहा था कि नाना और क्रान्तिकारी काफी समय से एक दूसरे के सम्पर्क में थे कानपुर में घिरे अंग्रेजों ने कानपुर से इलाहाबाद जाने के लिए जो प्रार्थना की वह नाना से ही की। कालपी, हमीरपुर, ग्वालियर में जो क्रान्तिकारी सरकारी बनी सब जगह "खल्क खुदा का मुल्क बादशाह का अमल पेशवा का" की मुनादी की गई थी। बांदा के नवाब अलीबहादुर द्वितीय ने भी नाना साहब को पत्र लिखकर अपना नेता माना था। क्रान्ति में नाना साहब वर्षों सक्रिय रहे, अंग्रेजों ने वैसे ही उनके ऊपर पचास हजार रुपये की भारी भरकम रकम घोषित नहीं की थी।

युद्ध में सुरक्षित स्थान की ओर जाना कोई अनुचित कार्य नहीं। नाना भी इसी कारण तराई के जंगलों की तरफ गये। हाल में प्रकाशित पुस्तक में एक इतिहासकार का संदर्भ देकर यह सिद्ध करने की कोशिश की गई है और कहा गया है कि वे गद्दी प्राप्त करने के लिए महारानी से गिड़गिड़ाते रहे हैं। यह भी सत्य के करीब नहीं है। मेरे अध्ययन में जो बातें आई हैं वे इस प्रकार हैं।

1857 जब अंग्रेजों को यह पता चला कि नाना और अन्य बहुत से क्रान्तिकारी तराई में मौजूद है तो उन्होने सोचा कि बहुत समय बीत गया है और शायद तराई के लोगों को न मालूम होगा कि नाना पर पचास हजार रुपये का इनाम घोषित है अतः इनाम के इस्तहार गाँव–गाँव लगवाए। ताकि लालच में कोई नाना को पकड़वा दे। नाना ने भी इस इनाम के इस्तहार का जबाब इस्तहार छपवाकर दिया था। यही इस्तहार अंग्रेजों को अपने गांव के कर्मचारियों से प्राप्त हुआ था। सभी अधिकारियों के पास यह इस्तहार ही पहुँचा था

पत्र नहीं। इसको पत्र नहीं कहा जा सकता इस इस्तहार को सम्पूर्ण रूप से पढ़ने पर पता चलता है कि नाना कितने वीर और साहसी थे।

नाना का इस्तहारनाम में उन सबको सम्बोधित किया है जहां उनका मुकदमा लड़ा गया था, महारानी, सांसद बोर्ड आफ डायरेक्टर, गवर्नर जनरल आदि। इस्तहारनामा बड़ा लम्बा है उनकी प्रमुख बातें ही लिखी जा सकती हैं। सारांश में उन्होंने उन सभी क्रान्तिकारियों का वर्णन किया जिनको अंग्रेजों ने माफ किया था। परन्तु उनको नहीं किया गया। उन्होंने लिखा मैंने सरकार का इस्तहार देखा है और मैं कहता हूँ कि मैं आपसे लड़ता रहा हूँ। जब तक जिन्दा हूँ लडूंगा। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं न तो कातिल हूँ और ना ही गिल्टी हूँ। मेरे सिवा आपका कोई दुश्मन नहीं है अतः जब तक जीवन है लडूंगा। आपने सबको माफ कर दिया है। नेपाल के राजा आपके मित्र हैं फिर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सके आप। आगे वह लिखते हैं–हम मिलेंगे तब मैं आपका खून बहाऊँगा। मैं अकेले होते हुए भी इतने ताकतवर साम्राज्य का शत्रु हूं इसका मुझे फक्र है।

अंग्रेजों ने इसके जबाव में लिखा–रानी द्वारा घोषित आम माफी की घोषणा के तहत वो समर्पण करे उसके जबाब में नाना ने अब पत्र लिखा और कहा कि "हिन्दुस्तान में जितनी दगाबाजी आपने की है उसको जानते हुए मैं आपके पास क्यों आऊँ। मेरे और आपके मध्य लड़ाई ही होगी, जब तक मैं जिन्दा हूँ। चाहे मैं पकड़ा जाऊँ, फांसी पर चढूँ फैसला तलवार से ही होगा।"

नाना ने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया। ऐसे क्रान्तिवीर को यह कहना कि वे इतिहास में थोपे गए बहादुर हैं, तो फिर बहादुर कौन है यह नाना के प्रति घोर अन्याय है।

मैक्समूलर के विचार

मैक्समूलर ने एक पुस्तक लिखी है–'इंडियाः व्हाट केन इट टीच अस।' इस पुस्तक को पढ़ने से उनकी भारत के प्रति अगाध श्रद्धा–भाव का पता लगता है। वे लिखते हैं कि 'मैं विश्वभर में उस देश को ढूँढ़ने के लिए चारों दिशाओं में दृष्टि दौड़ाऊँ, जिस पर प्रकृति देवी ने अपना संपूर्ण वैभव, पराक्रम एवं सौंदर्य मुक्त हाथों से लुटाकर उसे पृथ्वी का स्वर्ग बना दिया है तो मेरा इशारा भारत की ओर होगा। यदि मुझसे पूछा जाए कि अंतरिक्ष के नीचे वह कौन–सा स्थल है, जहाँ मनुष्य ने अपने अंतराल में सन्निहित ईश्वरप्रदत्त उदात्त भावों को पूर्णरूपेण विकसित किया है तथा जीवन की गहराई में उतरकर कठिनतम समस्याओं पर विचार किया है। उनमें अधिकांश को सुलझाया है।

यह सब जानकर 'कांट' एवं 'प्लेटो' जैसे दार्शनिकों से प्रभावित मनीषी भी आश्चर्यचकित रह जाएँ, वे पूछें कि वह देश कौन–सा है तो मेरी ऊँगली सहज ही भारत की ओर उठेगी और यदि मैं अपने आपसे प्रश्न करूँ कि हम यूरोपवासी जो अब तक केवल ग्रीक, यहूदी एवं रोमन विचारों में पलते रहे हैं, किस साहित्य से वह प्रेरणा ले सकते हैं, जो हमारे अंतरंग जीवन को परिशोधित करे, उसे उन्नति की ओर अग्रसर करे, व्यापक एवं विश्वजनीन बनाए, सही अर्थों में मानवीय गुणों से सुसंपन्न करे, जिससे हमारे पंचभौतिक जीवन को ही नहीं हमारी सनातन आत्मा को भी प्रेरणा मिले तो पुनः मेरी उँगली भारत की ओर उठ जाएगी।'

न हारे थे और न हारेंगे

डॉ0 राजन भाटिया
सहायक आचार्य एवं प्रभारी
शारीरिक शिक्षा विभाग

इस महामारी ने कई जानें ले ली है। हमने कई अपनों को भी खोया है। एक भय का माहौल बन गया है। बूढ़े, बच्चे हों या जवान कोई भी अछूता नहीं बचा है। इस महामारी ने हमें हर तरह से नुकसान पहुंचाया है। शारीरिक, मानसिक व आर्थिक ले लीजिये सभी तरह से पूरे विश्व में लोग परेशान हैं। हमारा भारत भी इससे अछूता नहीं है। इस महामारी ने लोगों को अपने घरों में बंद रहने के लिए विवश कर दिया है। इसका प्रतिकूल प्रभाव लोगों के शारीरिक तथा मानसिक स्थिति पर पड़ा है। नौकरीपेशा हो या व्यापारी वर्ग सभी को नुकसान हो रहा है। विद्यार्थी तो असमंजस में है क्योंकि परीक्षा का कुछ पता नहीं चल पा रहा है, जिनका अंतिम वर्ष था उनकी स्थिति तो और खराब हो गई है। ऐसी स्थिति में मानसिक तनाव हो जाना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। इन परिस्थितियों का मुकाबला हमें जमकर करना होगा। जरा सी भी चूक हमें और हमारे परिवार को बहुत भारी पड़ सकती है। इन परिस्थितियों में हमें कुछ विशेष सावधानियाँ रखनी होगी जिससे हम और हमारा परिवार इस विषम परिस्थिति से सुरक्षित बाहर आ जाये।

1. पूरे परिवार का एक रुटीन निर्धारण कर लें और अपने आपको व्यस्त रखें।

चाहे परिवार के बुजुर्ग हों या बच्चे सभी को इसका पालन करने को कहें। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक का प्लान करें और सभी इसका पालन करने की पूरी कोशिश करें। बच्चों की पढ़ाई का भी समय निर्धारित करें और उनको प्रेरित करें पढ़ने के लिए प्रेरित करें उनके साथ बैठें और उनकी मदद करें।

2. अधिक से अधिक समय परिवार के सभी सदस्य एक साथ बितायें।

इससे किसी को अकेलापन नहीं महसूस होगा। आपस में बातें करें और एक दूसरे को हिम्मत दें। बड़ों के साथ समय बितायें और उनकी पुरानी बातों को सुनें। बच्चों को भी समय दें। उनका हौसला बढ़ायें। घर का काम बाट लें और सभी मिलकर काम करें। बच्चों को भी घर के काम सिखायें। इससे सभी का समय कट जायेगा और मानसिक तनाव से भी बच सकते हैं।

3. अफवाहों से बचें

अफवाहों पर बिल्कुल भी ध्यान न दें, खासकर सोशल मीडिया पर। किसी भी खबर को आगे भेजने से पहले उसको परख लें, अगर आपको किसी प्रकार का शक हो रहा हो तो उस पर ध्यान दें। अपना ध्यान केवल सकारात्मक बातों पर ही लगाएं। नकारात्मक लोगों से बचें। इस तरह के लोग खुद तो परेशान रहेंगे ही आपको भी कर देंगे।

4. सुबह और शाम व्यायाम जरूर करें

कुदरत का कानून है कि शक्तिशाली ही बच सकता है, इसलिए अपने आपको व्यायाम से शक्तिशाली बनायें और इस महामारी का डटकर मुकाबला करें। व्यायाम करते समय खास बातों का ध्यान रखें। ज्यादा जल्दी न करें। प्लान करके व्यायाम करें।

धीरे–धीरे व्यायाम का समय बढ़ायें। घर के सभी सदस्य अपनी उम्र और फिटनेस को ध्यान में रखकर व्यायाम का चुनाव कर सकते हैं। देखा–देखी के चक्कर में गलत व्यायाम न करें। योग एक अच्छा विकल्प हो सकता है सभी के लिए। आजकल बहुत से वीडियो यूट्यूब जैसे चैनल के माध्यम से उपलब्ध हैं। इन वीडियो में दिखाये गए व्यायाम को अपने फिटनेस को ध्यान में रखकर ही चुने। संगीत के साथ भी व्यायाम किया जा सकता है, पूरा परिवार एक साथ संगीत का आनंद लेते हुए व्यायाम कर सकता है। यह एक अच्छा विकल्प है। जुम्बा डांस आजकल बहुत प्रचलन में है, इसे भी पूरे परिवार के साथ किया जा सकता है। यह भी व्यायाम की एक बहुत ही लोकप्रिय पद्धति है, इससे मानसिक तनाव भी दूर होता है।

5. संतुलित आहार लेना न भूलें

समय से भोजन ग्रहण करें और संभव हो तो संतुलित आहार लें। अगर किसी कारणवश आप संतुलित भोजन नहीं ले पा रहे हों तो भी जो संभव हो उसे समय पर खायें। कोशिश करें कि पूरा परिवार साथ मिलकर भोजन करें।

6. पानी पीना न भूलें

समय–समय पर पानी पीते रहें। अक्सर लोग पानी पर ध्यान नहीं देते जिसके कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है और कई समस्याओं का कारण बनती है। तीन से चार लीटर पानी पीएँ और अगर आप ज्यादा व्यायाम कर रहे हैं तो ज्यादा पानी पीएँ, हो सके तो इलेक्ट्रोलाइट लेना न भूलें। नीबू पानी में चीनी और एक चुटकी नमक डालकर पीएँ, इससे आपको इलेक्ट्रोलाइट मिल जायेंगे जो कि शरीर के लिए बहुत जरूरी होते हैं।

पूरा परिवार मिलकर इस महामारी का सामना करेगा तो हम सभी शारीरिक और मानसिक रूप से इसका सामना कर सकते हैं। हौसला बनाये रखें। अपनी और अपने परिवार की हिम्मत बनें। अपने दोस्तों से भी बात करते रहें। हो सके तो एक दूसरे की मदद करें। हर काली रात के बाद सुनहरी सुबह आती है। हौसला बनाये रखें। हम लड़ेंगे और जीतेंगे।

कोरोना का टीका जरूर लगवाएँ और जब भी लॉकडाउन खुले मास्क पहने और उचित दूरी का ध्यान जरूर रखें। जागरुक नागरिक बनें, खुद भी बचें और देश को भी बचायें।

जय हिन्द!

कोरोना और बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. माधुरी रावत
असि0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग

कोरोना महामारी के कारण एक अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है और चारो तरफ इसी से सम्बन्धित खबरों ने हमें आतंकित और तनावग्रस्त कर रखा है। इसने काफी हद तक वयस्कों के साथ–साथ बच्चों में भी चिंता और तनाव के स्तर को बढ़ा दिया है। इस समय बच्चे बहुत सारे परिवर्तनों को महसूस कर रहे हैं जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हो रहा है। कोरोना विषाणु के चलते इस माहौल में भावनात्मक रूप से बच्चों की तैयारी काफी कुछ उनके और उनके माता पिता के व्यक्तित्व पर भी निर्भर करती है। कई बार माता–पिता बच्चों से घातक बीमारियों के विषय में बात करने से बचते हैं अथवा उनके सामने यह दर्शाने का प्रयास करते हैं जैसे यह महत्त्वपूर्ण ही नहीं है। इसका कारण माता–पिता के अनुसार बच्चों की भलाई हो सकती है, परन्तु हमें यह जानकारी होनी चाहिए कि बच्चे अपने वातावरण में उपस्थित संकेतों को बहुत जल्दी ग्रहण करते हैं। आप कहें या न कहें पर वे स्थिति को भांप लेते हैं। ऐसे में यदि हम उनकी चिंता और डरों को यूँ ही टाल दें तो उनके मन में कुँठा उत्पन्न हो सकती है, टालने की बजाय उनसे बातचीत करें।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे हमसे आश्वासन की आशा रखते हैं, और किस परिस्थिति में कैसे प्रतिक्रिया एवं अनुक्रिया दी जाये यह हम ही से सीखते हैं। कोरोना ने जिस प्रकार की स्थिति उत्पन्न कर दी है उसको लेकर भावनात्मक प्रतिक्रिया का अभाव होना लगभग असंभव ही है। बच्चों के साथ उन्हें आश्वासन दिलाने वाले वार्तालाप के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

बच्चों को अपनी भावनाएं साझा करने का स्पेस दें–

बच्चों के मन में कोरोना को लेकर तरह तरह की आशंकाएं आना स्वाभाविक है। उनके मन में आ सकता है कि क्या अब अगली बारी उन्हीं की है ? क्या ये उन्हें भी हो जाएगा ? उन्हें बताएं कि बच्चों के इससे ग्रसित होने की संभावना बहुत कम है। उन्हें यह भी भरोसा दिलाएं कि वे अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए और अपनी आशंकाओं एवं डरों के बारे में बातचीत करने के लिए हमेशा आपके पास आ सकते हैं।

चिंता स्वाभाविक है–

चिंता एवं डर की अभिव्यक्ति करने में कोई बुराई नहीं है। बच्चे जल्द ही यह सीख जायेंगे और उन्हें यह भी पता चल जाएगा कि यह एक सामान्य प्रतिक्रिया है। आसपास के वातावरण एवं दिनचर्या में बदलाव किसी के लिए भी बेचैनी उत्पन्न कर सकता है। ऐसे में शान्ति से बिना किसी हड़बड़ी के बच्चों के साथ इस विषय पर वार्तालाप उनकी बेचैनी को कम करने में सहायक होगा। यह बात ध्यान रखें कि आवश्यक नहीं हैं कि माता–पिता के पास हर चीज का जवाब हो ही, ऐसे में ईमानदारी से यह स्वीकार कर लेना कि किसी विशेष प्रश्न का जवाब आपके पास नहीं है, कुछ झूठ–मूठ की बातें बता देने से श्रेयस्कर होता है। अपने बच्चों की भावनाओं एवं मानसिक स्थिति के विषय में समय–समय पर पता करते रहें और उनकी जिज्ञासाओं को अनदेखा न करें।

तथ्यपरक रहें

कोरोना से सम्बंधित डर अथवा चिंता दूर करने के लिए आवश्यक है कि इसे लेकर बच्चों के साथ विचारपूर्ण वार्तालाप किया जाये। इन वार्तालापों की विषयवस्तु और शब्दावली का निर्धारण बच्चे की आयु, मनःस्थिति और सूचना संसाधन की क्षमता के आधार पर करना चाहिए जिससे कि आपके द्वारा की जाने वाली बात को वे समझ सकें। चर्चा करें कि उन्होंने आसपास जो भी सुना या टीवी, सोशल मीडिया आदि पर जो भी देखा वह सब वास्तविक नहीं होता। आप उन्हें यह भी बता सकते हैं कि दुनिया भर के डॉक्टर्स इसका इलाज खोजने में लगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त सकारात्मक समाचार पर भी बल दें। उन्हें यह भी बताएं कि यह बीमारी बच्चों में फैलने की सम्भावना काफी कम है।

मीडिया सेवन पर ध्यान दें–

बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह भी आवश्यक है कि माता–पिता स्वयं भी मीडिया सेवन को दिए जाने वाले समय का ध्यान रखें। ऑनलाइन समाचार देखते समय समाचार के स्रोत पर ध्यान दें तथा भ्रामक एवं घृणा फैलाने वाले समाचारों को शेयर न करें। ऑनलाइन तथा ऑफलाइन क्रियाकलाप का अपनी दैनिकचर्या में स्वस्थ संतुलन बना कर रखें।

कोविड को लेकर दोषारोपण एवं लांछन लगाने से बचें–

यह बहुत आवश्यक है कि कोविड–19 के बारे में बच्चों को बताते समय किसी समूह अथवा व्यक्ति विशेष पर लांछन लगाने से बचें। उन्हें यह भी बताएं कि आवश्यक नहीं कि किसी को बुखार अथवा खांसी है तो उसे कोरोना होगा ही होगा।

बच्चों की उनके कार्यों पर नियंत्रण करने में मदद करें–

यह सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा ऐसे कार्य करे जिससे उसे लगे कि उससे सम्बंधित कई चीजें उसके नियंत्रण में है, जैसे कि उन्हें खुद को स्वच्छ रहना सिखाएं। उन्हें बताएं कि अपनी साफ–सफाई के जिम्मेदार वह स्वयं हैं। उनके द्वारा अपना बिस्तर अथवा अपनी किताबें आदि ठीक से रखने एवं प्रत्येक बार खाने से पहले हाथ धोने पर, कूड़ा, कूड़ेदान में डालने इत्यादि पर उनकी प्रशंसा भी करें जिससे उन्हें भविष्य में इस प्रकार के कार्य करने के लिए प्रोत्साहन भी मिले। उनके लिए सभी काम आप खुद ही न कर दें। उन्हें गलती करने का मौका दें और यथासंभव अनुभव से सीखने दें। उन्हें समय से सोने एवं जागने तथा पर्याप्त नींद लेने के फायदे बताएं। एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी है कि बच्चे उपदेश देने से अधिक नकल करके सीखते हैं। वे अपने माता–पिता एवं बड़ों को जैसा करते देखते हैं, स्वयं भी वैसा ही करने की कोशिश करते है। यह बात ना सिर्फ इस कोरोना के समय सच है बल्कि हर समय के लिए सच है, इसलिए कोरोना से बचने के लिए जो सावधानियां आप उन्हें सिखाना चाहते हैं, कोशिश करें कि बच्चे आपको वे सभी सावधानियां अपनाते हुए देखें। शारीरिक दूरी बनाये रखने का स्वयं भी पालन करें, जिससे बच्चे उसका अनुसरण कर सकें।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अभिभावक के तौर पर आपको शांत और स्नेही रहना चाहिए। बच्चे, जो भी उनसे कहा जाता है और जिस ढंग से कहा जाता है दोनों के ही प्रति बड़े संवेदनशील होते हैं। बच्चे आपके सभी प्रकार के वार्तालाप और व्यवहार से सीखते हैं चाहे वह आप उनके साथ करें या दूसरों के साथ। ऐसे में उनको बड़ों की बातचीत के अनुसरण को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार व्यवहार करना चाहिए जिससे नकारात्मकता न आये और एक दूसरे का ख्याल, रखते हुए सकारात्मक माहौल बनाया जा सके।

अनिश्चितता हमें क्या सिखा सकती है ?

डॉ0 साम्या बघेल
असि0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग

इस कोरोना काल ने हमें अनिश्चितता का स्वाद बहुत अच्छी तरह चखा दिया है। क्या होती है अनिश्चितता ? अनिश्चितता में संदेह, शंका, अविश्वास, स्थितिभ्रान्ति, यह सब शामिल हो सकते हैं। भविष्य पर नियंत्रण न होना या उसके बारे में कोई पूर्वकथन न कर पाने की स्थिति कई बार लोगों को निराशा और चिंता से ग्रस्त कर देती है। हालांकि अनिश्चितता अपने मूल रूप में नकारात्मक नहीं होती। यह एक ऐसी परिस्थिति होती है जिसके सकारात्मक या नकारात्मक कैसे भी नतीजे हो सकते हैं। वास्तव में अनिश्चितता हमारा ध्यान अस्पष्टता पर ले जाती है; ऐसी अस्पष्टता जिस पर वर्तमान में ध्यान देना सुदूर भविष्य के बारे में सोचने से अधिक महत्वपूर्ण हो।

मानव व्यवहार की एक महत्वपूर्ण घटना है 'नियंत्रण का भ्रम'। हम मनुष्य अक्सर घटनाओं पर अपने नियंत्रण और मनचाहे परिणाम लाने की अपनी क्षमता के विषय में अतिमूल्यांकन करते हैं। नियंत्रण का भ्रम कई सकारात्मक भ्रमों में से एक है जिसमें आशावाद, अभिनति आदि भी शामिल है। इनके अंतर्गत हमारे मन में यह भावना या विश्वास रहते हैं कि 'सब कुछ ठीक है' और 'सब हमारे नियंत्रण में है' चाहे हमें यह खूब पता हो कि किसी भी क्षण हमारे साथ कुछ भी हो सकता है, कोई जहरीली मक्खी आकर हमें काट सकती है या सड़क चलते कोई गाड़ी हमें टक्कर मार सकती है, पर अक्सर हम जानबूझकर ऐसी चीजों के बारे में नहीं सोचते। यह नियंत्रण का भ्रम एक तरफ तो ऐसी चीजों का श्रेय लेते हुए हमें गौरवान्वित महसूस करा सकता है जिसके साधक हम स्वयं नहीं होते (जैसे कि अपने वयस्क बच्चों की आर्थिक सफलता का श्रेय स्वयं ले लेना) लेकिन दूसरी ओर यह हमारे अंदर उन घटनाओं के लिए अपराध बोध भी पैदा कर सकता है जिनके जिम्मेदार हम नहीं होते (जैसे कि किसी प्रियजन की मृत्यु)। अस्थिरता के समय में यही नियंत्रण का भ्रम हमारे कुशल–क्षेम के अहसास में हमारी सहायता करता है और हमें यह महसूस करवाता है कि हमारे भाग्य के कर्ता–धर्ता हम स्वयं हैं। तनाव और डर के समय में भी हम अनिश्चितता की अस्पष्टता के बजाय नियंत्रण के भ्रम को ही अपनाते हैं फिर चाहे वह अपनी स्वयं की अदूरदर्शिता के कारण खोये हुए सफलता के मौकों पर हमारा गैरजरूरी गुस्सा हो या बुरी किस्मत वाले लोगों की तुलना में अपने भाग्य की सराहना हो।

यह कैसा समय है! जिसमें प्रश्न तो कई हैं पर जवाब कोई नहीं। क्या मुझे भी संक्रमण हो जाएगा ? क्या वैक्सीन पूर्णतः सुरक्षित है ? क्या हालात कभी सामान्य होंगे ? क्या हमारा भविष्य सुरक्षित है ? क्या दुनिया विषाणु से ही खत्म होगी ? इन आशंकाओं के लिए विशेषज्ञों के पास अनुमान और आकलन तो हैं परंतु कोई निश्चित सटीक उत्तर नहीं है। यही अनिश्चितता हमें परेशान करती है। सामाजिक दूरी, थोपे गए अलगाव, बीमारी के डर और भविष्य की चिंता के साथ रहने को किसी छोटे से सूत्र में बांधकर उसकी विकरालता और भयावहता को कम नहीं किया जा सकता, न ही बिना भविष्य की परवाह किए वर्तमान में

रहना कोई छोटी चुनौती है। हम सभी सब कुछ जानना चाहते हैं और भविष्यवाणी भी करना चाहते हैं उदाहरण के लिए, हम में से कई लोग कोरोना के आँकड़ों का हिसाब रखते हैं, सुबह–शाम देखते हैं कि कितने नए मामले आए, कितनी मौतें हुई, दिन में एक बार या बार–बार ऐसे अपडेट चेक करना कोई वास्तविक मदद नहीं करते फिर भी यह क्रियाकलाप लोग केवल इसलिए करते हैं क्योंकि यह उन्हें कुछ भी न कर पाने के बजाय कम से कम 'कुछ तो कर रहे हैं का अहसास दिलाते हैं।

हम मानव अनिश्चितता से घृणा करते हैं और उससे बचने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, चाहे उसके लिए हमें एक संभावित अच्छे परन्तु अंजान परिणाम के बजाय एक जाने हुए बुरे परिणाम को चुनना पड़े। 2016 में यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन द्वारा किए गए एक अध्ययन में पता चला कि प्रतिभागियों को जब बिजली का झटका मिलने की 50% संभावना थी तब उन्हें तुलनात्मक रूप से अधिक तनाव हुआ जबकि दूसरी स्थिति में जब उन्हें बिजली का झटका मिलने की संभावना 100% थी तब उन्हें उतना तनाव नहीं हुआ। अनिश्चितता की स्थिति में तनाव हमारी अनिश्चितता के प्रति गैर सहनशीलता का ही परिणाम है। यही असहनशीलता हमें अवसाद, मनोग्रसित बाध्यता जैसे मनोरोगों की ओर अग्रसर करती है।

वास्तविकता की बात करें तो हम कभी सच्चे अर्थों में सुरक्षित नहीं है। वैसे तो हमारे जीवन में पूरी निश्चितता कभी होती ही नहीं फिर भी जैसा समय आज चल रहा वह हमें हमारे खुद के अस्तित्व की व्यापक अनिश्चितता के बारे में पल प्रतिपल याद दिलाता रहता है। हम अनजानी घटनाओं और 'कुछ भी हो सकता है' पर नियंत्रण बनाये रखना चाहते हैं और कुछ न कुछ ऐसा करते रहते हैं जो हमें नियंत्रण का आभास दे। यह हमारा नियंत्रण का भ्रम ही है जो हमें कपोल कल्पनाएं बनाने के लिए प्रेरित करता है या कई बार जो घटित हो रहा है उसके विषय में हम कई मनोवैज्ञानिक प्रक्षेपण करते हैं जैसे कि क्या यह विषाणु कोई सैन्य या राजनीतिक हथियार है ? क्या इसके फैलने के पीछे कोई राजनीतिक उद्देश्य है ? क्या मीडिया केवल लाभ कमाने वाले कॉरपोरेट अथवा दवाई बनाने वाली कंपनियों या चिकित्सीय अधिष्ठानों का फायदा करवाने के लिए ऐसी खबरें फैला रही है? क्या दुनिया भर के नेता इसे फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं ? फिर इन प्रक्षणों में हम यह मानते हैं कि आज विश्व की और देश की यह हालत करने वाले वास्तविक दोषी को हमने ढूंढ लिया है और फिर हम उपाय ढूंढते हैं उस दोषी को किसी तरह दंडित करने का। इन तरीकों से निश्चितता का अभीष्ट प्राप्त करने की हमारी कोशिश नकारात्मकता का एक चक्र शुरु कर देती है जबकि अस्पष्टता से निपटने के लिए नियंत्रण का भ्रम और उसे बनाये रखना ही केवल एक मात्र विकल्प नहीं है।

आज की स्थिति में जबकि कोरोना महामारी, लॉकडाउन, प्रतिबंधों और अपनों को खोना आदि से जूझते हुए डेढ़ साल से अधिक हो गया है ऐसे में नियंत्रण का भ्रम और उसके चलते अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठी करके अनिश्चितता को कम से कम करने की हमारी कोशिशें कई बार हमें निराशा की ओर ले जाती हैं, क्योंकि हम यह मानने को तैयार ही नहीं कि अनिश्चितता हमारे जीवन का उतना ही अभिन्न अंग है जितना की मृत्यु। ऐसे कितने लोग हैं जो अनिश्चितता को एक अवसर मानते हैं ? अवसर जो हमें हमारी इस सामूहिक दुर्दशा में गहन अंर्तदृष्टि की क्षमता तक ले जाए, जिसमें हम अपनी सुभेद्यता को स्वीकार कर पाएं और हमारे सब कुछ न जान पाने की सीमित क्षमता के प्रति सहानुभूति भी ला पाएं। इस क्षमता को विकसित करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है कि हम अपने स्वयं के अस्तित्व की

जटिलता को पहचानें, समझें कि हम स्वयं अच्छे और बुरे का सम्मिश्रण हैं ; आवश्यक नहीं है कि सारी अज्ञानता और बैर बाहरी कारकों पर ही प्रक्षेपित कर दिया जाए। अनिश्चितता और अस्पष्टता के प्रति स्वीकार्यता का भाव उसके प्रति हमारी कटुता को कम कर सकता है।

अपनी वास्तविक संभावनाओं की समृद्धिता में संलग्न होने के लिए हमें स्वयं को ऐसे वातावरण में रखना होगा जिसमें अस्पष्टता, अनिश्चितता और नियंत्रण न होने के लिए जगह हो। इसका अर्थ है कि हमें जीवन–मृत्यु, अच्छा–बुरा, प्रेम–घृणा, नियंत्रण–समर्पण जैसे उभयवृत्ति वाले संयोजनों को न सिर्फ सहन करना बल्कि महत्व देना भी सीखना होगा। ये संयोजन ही हमारे अस्तित्व का आधार हैं।

वास्तव में अनिश्चितता को हम एक समस्या की तरह देखते हैं जिससे निपटने का हमें एक ही तरीका समझ में आता है कि कुछ भी करके इसको दूर किया जाए, पर इसको दूर करने के प्रयास में अक्सर हम ऐसी गतिविधियां करते हैं जो हमें कुछ कर रहे होने का अहसास तो देती हैं पर वास्तव में हमारी कोई मदद नहीं कर रही होती। अनिश्चितता का सामना करने के और भी रचनात्मक और अधिक फलदायक तरीके भी हो सकते हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण तो यह जान लेना है कि अनिश्चितता और इससे जुड़ी हुई चिंताओं में हममें से कोई अकेला नहीं है। हम सभी किसी न किसी हद तक इससे परेशान हैं, बस मात्रा का अंतर है। साथ ही यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि हम चाहे कितना भी असहाय और आशाहीन महसूस क्यों न करें फिर भी कुछ तो ऐसा किया ही जा सकता है जिसे अपनाकर हम अनिश्चितता के साथ अपने समीकरण को बेहतर बना सकते हैं

अनिश्चितता से निपटने के लिए हम भविष्य का पूर्वानुमान करने में चिंता को एक ऐसे साधन के रूप में प्रयोग करने लग जाते हैं जो हमें आभास कराती है की अनिश्चित परिस्थितियों पर हमारा कुछ तो नियंत्रण है। सामान्य स्तर की चिंता हमें परिस्थितियों से लड़ने के लिए तैयार करती है पर आवश्यकता से अधिक चिंता मौजूदा सुकून, आनंद और ऊर्जा से वंचित करने के सिवाय और कुछ नहीं करती। अनिश्चितता का सामना करने के चिंता से अधिक स्वास्थ्यवर्धक और रचनात्मक रास्ते भी मौजूद हैं और उन सब की शुरूआत होती है मानसिकता में सुधार से। हम अपना ध्यान उन चीजों की तरफ पुनः केन्द्रित कर सकते हैं जिन पर नियंत्रण का हमें भ्रम ना हो, बल्कि जो वाकई में हमारे नियंत्रण में है ; जैसे हमारी दिनचर्या के विषय में हमारे निर्णय, वैचारिक शुद्धता और उन्नति के लिए किए जाने वाले हमारे उपाय, अपना और अपनों का ध्यान रखने के लिए हमारे प्रयत्न, अपनी मनःस्थिति, अपनी सखी–सहेलियों, मित्रों, प्रियजनों के साथ साझा करने का हमारा फैसला और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए उठाये गए हमारे कदम आदि।

अस्तित्व की सच्चाइयों को अपनाना उन्हें नकारने से कहीं अधिक फायदेमंद होता है। इस सच्चाई को मानना कि सब कुछ न हमारे नियंत्रण में है और न ही हो सकता है, हमें नकारात्मकता के अंतहीन भँवर से बचाता है। यह स्वीकार्यता हमारा हार मान लेना या हथियार डाल देना नहीं है, बल्कि वर्तमान की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का एक ऐसा प्रयास है जो हमें उन चीजों की ओर वापस लाता है जिन पर यदि हम काम करें तो वाकई में कुछ सकारात्मक और उपयोगी नतीजे निकल सकते हैं।

मानवता के पथ–प्रदर्शक : स्वामी विवेकानन्द

मुहम्मद जुनैद
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

भारत जब ब्रिटिश सरकार के अधीन था, तब 'उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए' जैसा सन्देश देकर भारतीयों को जगाने वाले महापुरुष जिन्होंने भारतीय ज्ञान एवं अध्यात्म का डंका सारी दुनिया में बजाया, वैसे महान् पुरुष स्वामी विवेकानन्द को कौन नहीं जानता।

12 जनवरी 1863 को कलकत्ता के एक प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त के घर जन्में स्वामी विवेकानन्द के बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। माँ के संस्कारों का विवेकानन्द पर गहरा प्रभाव पड़ा। विवेकानन्द जी बचपन से ही निर्भीक और जिज्ञासु स्वभाव के थे। उनके इस स्वभाव से माता जी अत्यधिक चिन्तित रहती थीं। अध्ययन के दिनों में विवेकानन्द कभी–कभी शिक्षकों के उत्तर से सन्तुष्ट न होने पर वाद–विवाद खड़ा कर देते थे जिससे इन्हें डाँट भी पड़ती थी। विवेकानन्द जी जब पहली बार रामकृष्ण परमहंस से मिलने दक्षिणेश्वर गये तो नरेन्द्रनाथ ने परमहंस से अपनी पहली ही मुलाकात में प्रश्न किया, "क्या आपने ईश्वर को देखा है ? परमहंस ने इस प्रश्न का मुस्कुराते हुए जवाब दिया," हाँ, मैंने ईश्वर को बिल्कुल वैसे ही देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ।" परमहंस के इस उत्तर से नरेन्द्रनाथ न केवल सन्तुष्ट हो गए, बल्कि उसी समय उनको अपना गुरु भी मान लिया। इसी घटना के बाद उन्होंने सन्यास का निर्णय लिया।

सन्यास ग्रहण करने के बाद जब वे परिव्राजक के रूप में भारत भ्रमण पर थे, तब खेतड़ी के महाराज ने उन्हें विवेकानन्द नाम दिया।

अपने गुरु के अधूरे कार्यों को पूरा करना ही उन्होंने जीवन का उद्‌देश्य समझा और भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े। देश में व्याप्त अशिक्षा और अज्ञानता देखकर उनका हृदय करुणा से भर गया। उनका कहना था कि यदि नये भारत का सृजन करना है तो पहले हमें शिक्षित समाज का निर्माण करना होगा। वे कहते थे–"ईश्वर एक है, वह सभी प्राणियों में समाया हुआ है। धर्म और जाति का भेद व्यर्थ है। "अत्याचार मत करो, अत्याचार का विरोध करो।"

1893 ई0 में जब संयुक्त राज्य अमेरिका में विश्व–धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ, तो खेतड़ी के महाराज ने विवेकानन्द जी को भारत के प्रतिनिधि के तौर पर उसमें भाग लेने के लिए भेजा। 11 सितम्बर 1893 को इस सभा के स्वागत भाषण में स्वामी जी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए जैसे ही कहा–"प्रिय बहनों एवं भाइयों", वैसे ही तालियों की गड़गड़ाहट से वहाँ का वातावरण गूँजने लगा।

एक बार स्वामी विवेकानन्द जी के उपदेशों से प्रभावित होकर एक अंग्रेज शिष्य ने कहा–"स्वामी जी, लगता है आपकी पहुँच ईश्वर तक है। आप उससे मुझे मिला दें या उसके मिलने का स्थान बता दें।" स्वामी जी ने मुस्कराते हुये कहा, "आप अपना पता लिखा जाइये।" यह व्यक्ति अपने मकान का पता लिखाने लगा।" स्वामी जी ने कहा, "यह तो ईंट–पत्थरों से बने मकान का पता है, आप स्वयं अपना पता बताइये कि आप कौन हैं ? किस प्रयोजन से संसार में आये हैं ? और क्या कर रहे हैं ? अंग्रेज स्वामी जी की बात समझ गया और क्षमा माँगते हुए कहा "स्वामी जी, पहले मुझे आत्मसत्ता के स्वरूप और उद्देश्य का पता लगाना चाहिये, बाद में ईश्वर से मिलने का विचार बनाना चाहिये।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर स्वामी विवेकानन्द जी ने संसार को मानवता का संदेश दिया। उनका कथन था कि मानव कल्याण ही मानव का धर्म है। आजीवन समाज को मानवता का पथ दिखाने वाले इस महान् सन्यासी का 4 जुलाई, 1902 को निधन हो गया।

ध्यान का बाड़ा

रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे–"एक हाथी है, उसे नहला–धुलाकर छोड़ दो तब फिर वह क्या करेगा ? मिट्टी में खेलेगा और शरीर को फिर से गंदा कर लेगा। कोई उस पर बैठे, तो उसका शरीर भी गंदा अवश्य होगा। लेकिन यदि हाथी को स्नान कराने के बाद बाड़े में बाँध दिया जाए तब फिर हाथी अपना शरीर गंदा नहीं कर सकेगा। इसी प्रकार मनुष्य का मन भी एक हाथी के समान है। एक बार ध्यान–साधना और भगवान के भजन से वह शुद्ध हो गया तो उसे स्वतंत्र नहीं कर देना चाहिए । इस संसार में पवित्रता भी है, गंदगी भी है। मन का स्वभाव है वह गंदगी में जाएगा और मनुष्य देह को दूषित करने से नहीं चूकेगा। इसलिए उसे गंदगी से बचाए रखने के लिए एक बाड़े की जरूरत होती है, जिसमें वह घिरा रहे। गंदगी की संभावनाओं वाले स्थानों में न जा सके।

"ईश्वरभजन, उसका निरंतर ध्यान एक बाड़ा है, जिसमें मन को बंद रखा जाना चाहिए तभी सांसारिक संसर्ग से उत्पन्न दोष और मलिनता से बचाव संभव है। भगवान को बार–बार याद करते रहोगे तो मन अस्थायी सुखों के आकर्षण और पाप से बचा रहेगा और अपने जीवन के स्थायी लक्ष्य की याद बनी रहेगी। उस समय दूषित वासनाओं में पड़ने से स्वतः भय उत्पन्न होगा और मनुष्य उस पापकर्म से बच जाएगा, जिसके कारण वह बार–बार अपवित्रता और मलिनता उत्पन्न कर लिया करता है।"

'गंगा की निर्मलता एवं जल संरक्षण' शीर्षित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध

गंगा की निर्मलता एवं जल संरक्षण

कुमारी सुषमा
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

गंगा की निर्मलता :

गंगा नदी हमारे भारत देश की प्राचीन नदियों में से एक है। यह हिमालय पर्वत के गंगोत्री नामक स्थान से निकलती है।

गंगा नदी को हम आज भी 'गंगा माता' कहते हैं। गंगा जब गंगोत्री से निकलती है तो बहुत ही निर्मल एवं शुद्ध होती है, लेकिन जैसे ही वह मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है तो प्रदूषित होने लगती है। कानपुर, इलाहाबाद, आदि शहरों में पहुंचते ही वह बहुत ही प्रदूषित हो जाती है।

फैक्ट्री व कारखानों से निकले वाले रसायनिक पदार्थ एवं नालों से निकलने वाला गन्दा पानी सीधे गंगा नदी में मिल जाता है और गंगा के शुद्ध पानी को प्रदूषित कर देता है।

गंगा की सफाई के लिए अनेक प्रकार की परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं, फिर भी गंगा नदी का पानी प्रदूषित ही है।

हमारे भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सन् 2014 में "नमामि गंगे परियोजना शुरु की थी जिसमें कि लगभग 20,000/– करोड़ रुपये की धनराशि से गंगा की सफाई का कार्य कराया गया। लेकिन आज भी गंगा नदी पूर्ण रूप से प्रदूषित है।

जल संरक्षण (Water Consevation)

प्रस्तावना : पानी हमारे जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी है, लेकिन आजकल जल का 'भौगोलिक दोहन' किया जा रहा है, जिससे कि जल का स्तर घटता जा रहा है। जिस कारण से भूमि बंजर होती जा रही हैं।

जल संकट के कारण : जल संकट के कारणों में फैक्ट्री से निकलने वाले रासायनिक पदार्थ मुख्य हैं, जो जल को प्रदूषित कर रहे हैं। इसके अलावा नालों का गन्दा पानी नदियों में मिलने के बाद नदियों के जल को प्रदूषित कर रहा है।

जल संकट के प्रभाव : जल का स्तर घटने के कारण भूमि बंजर हो रही है जिससे कि भूमि की उर्वरा–शक्ति कमजोर हो रही हैं फलतः फसलों की पैदावार कम हो रही है। इसके अलावा जल–स्तर घटने से जीव–जन्तुओं तथा पेड़–पौधों की प्रजातियों पर भी संकट आ रहा है।

जल संरक्षण के उपाय : जल संरक्षण के लिए हमें जल का दोहन रोक देना चाहिये। जल को संरक्षित करने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग (Water Harvesting) जैसी तकनीकों को अपनाना चाहिये। इसके अलावा खेतों के पास छोटे तालाबों का निर्माण करना चाहिए, जिससे कि सिचाई के लिए पानी हमें उचित मात्रा में मिल सके।

उपसंहार : इस प्रकार से हम सभी को जल संरक्षण के प्रति लोगों को जागरुक करना चाहिए एवं पानी को बचाने के लिए उचित उपाय तलाशने चाहिये।

'गंगा निर्मलता एवं जल संरक्षण' शीर्षित
निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त निबन्ध

निबन्ध-गंगा की निर्मलता एवं जल संरक्षण

राधा शिवहरे
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

प्रस्तावना : गंगा एक पवित्र एवं पौराणिक नदी है। गंगा हिमालय के गंगोत्री से निकलती हैं तथा बंगाल की खाड़ी में विसर्जित हो जाती है। गंगा नदी की निर्मलता के बारे में हिन्दू ग्रन्थों में बताया गया है। गंगा नदी को भागीरथी तथा अलकनन्दा के नामों से भी जाना जाता है। गंगा की पवित्रता और निर्मलता को बनाये रखने के लिये भारत सरकार ने "नमामि गंगे" परियोजना प्रारम्भ की है। यह परियोजना सन् 2014 से प्रारम्भ की गई। गंगा को निर्मल बनाये रखने की अत्यन्त आवश्यकता है।

गंगा की निर्मलता के कारण : गंगा को पौराणिक ग्रंथों के अनुसार हिन्दू दर्शन में पवित्र इसलिए भी माना जाता है, क्योंकि इसका सदानीरा जल वर्षों तक किसी बोतल में रखने से भी खराब नहीं होता है। गंगा नदी की निर्मलता, पवित्रता के पीछे का कारण यह भी है कि इसके जल में अस्थियों के विसर्जन के कारण फॉस्फोरस की पर्याप्त मात्रा पायी जाती है।

गंगा की निर्मलता (आज के परिप्रेक्ष्य में)–आज के परिप्रेक्ष्य की बात करें तो गंगा गंगोत्री से निकलते हुए हरिद्वार तक पवित्र (स्वच्छ) है, लेकिन आगे बढ़कर इसमें कई गंदे नाले भी शामिल हो गये हैं, और कानपुर में गंगा अत्यधिक मैली है। गंगा नदी के किनारे बसे नगरों जैसे काशी, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी आदि शहरों में गंगा अधिक स्वच्छ नहीं है। स्वच्छ इसलिये भी नहीं है, क्योंकि गंदे नाले, फैक्ट्रियों तथा घरों का पानी, लाशें आदि गंगा के पावन जल को अपवित्र कर रहे है। अन्त में गंगा नदी को निर्मल बनाने के लिये भारत सरकार ने नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 'नमामि गंगे परियोजना' में गंगा को साफ करने के लिये 20000 करोड़ का बजट तैयार किया और हाल ही गंगा की निर्मलता को देखने के लिये पाँच दिवसीय यात्रा का शुभारम्भ 27–01–2020 से बैराज से प्रारम्भ हो गया है। तथा जल संरक्षण में गंगा नदी का महत्व।

जल संरक्षण– प्रस्तावना– जल संरक्षण का तात्पर्य जल को हमें केवल अपने सही प्रयोग के लिये (दैनिक कामों में) प्रयोग करना है। जल को आगे की पीढ़ियों के लिये हमें सुरक्षित करना होगा, क्योंकि जल ही जीवन है। **"जल बचाओ, जीवन बचाओ"** जल को संरक्षित करना हमारा परम कर्तव्य है, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार की तरफ से जल को बचाने के लिये वृक्षारोपण प्रत्येक वर्ष कराया जाता है। जल संरक्षण के लिये विश्वविद्यालय स्तर पर जल संरक्षण सप्ताह आयोजित किया जाता है।

जल संरक्षण की आवश्यकता – जल को आगे की पीढ़ियों तक पहुँचाना हमारा और सरकार का कर्तव्य है। जल के प्रदूषण का रोकना होगा। गंगा को साफ करके तथा जल को संरक्षित करके ही हम अपने जीवन को जी सकते हैं। पृथ्वी पर 71% पानी है और उसमें भी पीने का पानी मात्र 1 से 3% तक बचा हुआ है। जल को संरक्षित करने के लिये अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिये।

उपसंहार– गंगा की निर्मलता और जल संरक्षण आपस में एक दूसरे के पूरक हैं। गंगा जी अगर शुद्ध (पवित्र) होंगी, तो जल को आगे की पीढ़ियों के लिये बचाया जा सकेगा। जल संरक्षण के लिये बरसात के पानी को डैम के माध्यम से रोकना चाहिये तथा सरकार द्वारा कृत्रिम नहरों का निर्माण किया जाना चाहिए। गंगा की निर्मलता और जल संरक्षण (Water Conservation) को अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिये। जल को सहेजने के लिये फैक्ट्रियों का गंदा कचड़ा नदी से दूर डालना चाहिये। गंगा की निर्मलता तभी सुरक्षित रह सकती है, जब जल संरक्षण को बढ़ावा दिया जाए।

अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को मरहठों की चुनौती
(जनपद जालौन के विशेष संदर्भ में)

डॉ. हरीमोहन पुरवार 'बुन्देलरत्न'
अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, प्रबन्धकारिणी कमेटी
डी0 वी0 कालेज, उरई

मध्य भारत के उत्तरी प्रवेश द्वार के रूप में सुविख्यात वर्तमान जनपद जालौन का ऐतिहासिक महत्व माननीय है। जब समूचा भारत अंग्रेजों के अत्याचार तथा चहुँमुखी प्रताड़ना से त्रस्त था तब भी यह जनपद अंग्रेजों द्वारा दी जा रही मर्मान्तक पीड़ा से मुक्त रहा था और इस कार्य में मरहठों की भूमिका अत्यन्त सराहनीय रही है।

उस समय ऐतिहासिक एवं सामरिक दृष्टि से इस जनपद का कालपी क्षेत्र अति महत्वपूर्ण था। चाहे मुगल हों या अंग्रेज सभी की दृष्टि कालपी पर ही थी। चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल के कार्यकाल में इस जनपद पर मुगलों का प्रभाव नगण्य हो गया था। इससे मुगल समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। शीघ्र ही उन्हें यह अवसर प्राप्त भी हो गया।

मरहठों का जनपद में आगमन–

सन् 1713 में दिल्ली के शासक फर्रुखशियर ने फर्रुखाबाद के नवाब महमूद खां गजनफर, जिसे नवाब बंगश के नाम से भी जाना जाता था, को कालपी, जालौन की जागीर सौंप दी। परन्तु छत्रसाल के रहते वह इस क्षेत्र पर काबिज़ नहीं हो पाया। 15 मई 1721 को छत्रसाल के पुत्र जगतराय ने मौदहा (हमीरपुर) के दिलेर खां को, जो कि नवाब बंगश का खास व्यक्ति था तथा कालपी का जागीरदार भी था, को मारकर कालपी पर अधिकार कर लिया।[2] अब तो बंगश और छत्रसाल का युद्ध होना आवश्यक हो गया। नवाब बंगश सन् 1727 में पूरी तैयारी के साथ छत्रसाल से युद्ध लड़ने के लिये आया। दो वर्षों तक चले अनवरत् युद्ध में दिसम्बर 1728 में जैतपुर (महोबा) में छत्रसाल की हार हुई। तब छत्रसाल ने 15 हजार सैनिकों तथा 10 हजार घोड़ों के साथ आत्मसमर्पण किया।[3] नवाब बंगश ने छत्रसाल को जैतपुर किले में ही बन्दी बना कर रखा। उस समय नवाब बंगश को बगैर किसी सूचना के जैतपुर किले से छत्रसाल ने गुप्त रूप से अपने दूतों के द्वारा पूना के पेशवा बाजीराव प्रथम को पत्र भेजा जिसमें लिखा–

जो गति भई गजेन्द्र की, तौ गति पहुंची आय।
बाजी ! जात बुन्देल की, राखौ बाजी लाज।।[4]

महाराज छत्रसाल के इस पत्र पर पूना के पेशवा मार्च 1729 में सहायता के लिये आ गये। दोनों की सम्मिलित सेना ने नवाब बंगश को घेर लिया। अगस्त 1729 में बंगश के साथ संधि हुई तथा 23 सितम्बर 1729 को बंगश की सेना कालपी से यमुना पार कर वापस चली गयी।[5]

पेशवा बाजीराव प्रथम ने छत्रसाल का जो सहयोग किया था उसके बदले में छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को अपना तीसरा पुत्र मानते हुए अपने राज्य का 1/3 हिस्सा प्रदान करने का वचन दिया।[6] सन् 1732 में पेशवा ने चिमाजी के साथ गोविन्द पंत काल्लाल खेर को यहां पर भेजा जिन्होंने यहां पर मरहठा

राज्य की नींव रखी। कुछ समय में ही गोविन्द व उनके पुत्रों ने चुर्खी, रायपुर, कनार, जालौन, कोंच, मोहम्मदाबाद, एट, कैलिया, महोबा, हमीरपुर, सागर आदि के क्षेत्र प्राप्त करके सागर को प्रशासनिक केन्द्र बनाया।[7] इधर गोविन्द पंत ने अपने छोटे पुत्र गंगाधर गोविन्द को कालपी, उरई तथा जालौन का क्षेत्र दे दिया। गंगाधर ने कालपी को अपना मुख्यालय बनाया तथा इन्हीं के पुत्र यहां के राजा कहलाये।[8] इस प्रकार से इस क्षेत्र में मरहठा आए।

अंग्रेजों को मरहठों की चुनौती–

अंग्रेज अपने राज्य का विस्तार करते जा रहे थे। अंगेजों के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने अपनी फौज को बंगाल से बम्बई जाने के लिये कालपी होकर जाने के मार्ग का निर्धारण किया। वे बुन्देलखण्ड की जानकारी भी चाहते थे, अतः उन्होंने अपने अंग्रेज सेनापति कर्नल लेसली को मई 1778 में कालपी के यमुना तट पर भेजा। गंगाधर गोविन्द ने कर्नल लेसली के पास अपने दूत लाला नन्दकुमार को यह संदेश लेकर भेजा कि अंग्रेजी फौज कालपी होकर न जाये। इसे कर्नल लेसली ने अस्वीकार कर दिया। इसके पश्चात गंगाधर गोविन्द ने यह भरसक प्रयास किया कि अंग्रेजी फौजें कालपी न आ सकें। इसके लिये उन्होंने यमुना नदी के तट से नावें रसद आदि सब हटवा दिये। इस जनपद में मरहठों द्वारा अंग्रेजों को दी जाने वाली यह पहली चुनौती थी। इसके बावजूद गंगाधर गोविन्द अंग्रेजों को रोकने में सफल न हो सके और मई 1778 में कर्नल लेसली ने यमुना पार करके कालपी पर अधिकार कर लिया।[9] कर्नल लेसली ने 30 मई 1778 को गवर्नर जनरल हेस्टिंग्स को पत्र लिखकर कालपी पर अधिकार कर लेने की सूचना भेज दी।[10] सन् 1801 में गंगाधर गोविन्द की मृत्यु हो गई। उनके बाद उनके पुत्र गोविन्द राव नाना जालौन के शासक हुये।

इधर बांदा के नवाब शमशेर बहादुर अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा ले रहे थे। उनके इस मोर्चे में नाना गोविन्द राव सहायता कर रहे थे। इस कारण अंग्रेज नाना गोविन्द राव से नाराज हो गये। अतः उन्होंने शमशेर बहादुर को परास्त करने के बाद नाना गोविन्द राव से प्रतिशोध लेने के लिये सन 1803 में कर्नल पावेल के निर्देशन में कालपी पर आक्रमण कर दिया। चार दिनों के युद्ध के पश्चात् 8 दिसम्बर 1803 को नाना गोविन्द राव को पराजय स्वीकार करनी पड़ी।[11]

परन्तु अंग्रेजी सेना कालपी विजय से ही सन्तुष्ट नहीं हुई। उसने उरई, मुहम्मदाबाद, कोटरा, सैदनगर आदि पर भी अपना अधिकार कर लिया।[12]

नाना गोविन्द राव ने पराजित होकर कालपी में अंगेजों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। अतः अंग्रेजों ने सन् 1804 में उरई व मुहम्मदाबाद का क्षेत्र उन्हें वापस कर दिया, परन्तु कालपी शहर, किले आदि पर अपना अधिकार बनाये रखा तथा नाना को कालपी के बराबर का क्षेत्र अन्य स्थान पर देने का वचन दिया।[13] यदि गंगाधर विरोध न करते तो वर्ष 1778 में ही इस जनपद के अन्य क्षेत्रों पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया होता।[14] सन 1806 में गोविन्द गंगाधर उर्फ नाना साहब के समय में उनके राज्य के कालपी क्षेत्र पर अंगेजों का अधिपत्य हो गया था। कैप्टेन रैमजे कालपी का शासक था। वह कठोर शासक था, परन्तु नाना साहब के कारण वह अपनी मनमर्जी से शासन नहीं कर पा रहा था। इसी कारण 23 अक्टूबर 1806 की सन्धि के अन्तर्गत मजबूरन अंग्रेजों को परगना कोटरा, परगना सैदनगर, आटा, मोहम्मदाबाद आदि के कुल 115 गांव जिनका मूल्य 145368 बाला साही रुपया था, नाना साहब को हस्तान्तरित करने पड़े।[15] इधर जालौन के मरहठे राजा बालाराव मौका देखकर कालपी के अंग्रेजी क्षेत्र में अपने आदमियों से लूटपाट करवा दिया करते थे।[16] इससे अंग्रेज बहुत त्रस्त रहते थे।

सन् 1838 में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने शासन में सुधार लाने के लिये जालौन राज्य को अपने अधिकार में लेकर कैप्टन डूलन को प्रशासक बनाया। डूलन ने उरई को अपना मुख्यालय बनाया तथा अपने नाम से डोलनगंज मुहल्ला बसाया।[17]

अंग्रेजों ने जालौन राज्य का कोई सही उत्तराधिकारी न होने के कारण पूरे जनपद जालौन का अपने राज्य में विलय कर लिया, जबकि नाना गोविन्द राव की नातिन ताई बाई जालौन में ही निवास करती थीं। अंग्रेज उनके पुत्र को जालौन का राज्य दे सकते थे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ।[18]

इन्दौर के जसवन्त राव होल्कर भी अंग्रेजों के विरोध में थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी के लार्ड लेक को होल्कर को दबाने की जिम्मेदारी दी गई।रामपुरा के निकट होल्कर ने अंग्रेजों के सेनापति मोनसेन को प्रथम युद्ध में पराजित कर दिया। दूसरी बार लार्ड लेक ने स्वयं सेना की कमान सम्हाल कर होल्कर को व्यास नदी के निकट उस समय पराजित किया जब वह अपने बचाव के लिये पंजाब की ओर बढ़ रहा था। होल्कर को कर्नल जान मेलकम ने सन्धि करने के लिये बाध्य कर दिया। इस सन्धि के अन्तर्गत होल्कर को अपना कोंच क्षेत्र छोड़कर अंग्रेजों को सुपुर्द करना पड़ा। इसमें अंग्रेजों को 93 गांव मिले।[19] इसके पश्चात् 1858 में होल्कर की बहन भीमाबाई की मृत्यु के पश्चात उसके परिजनों को बीस हजार रुपया प्रति वर्ष का गुजारा भत्ता देकर पूरी तरह से कोंच को ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन कर लिया।[20]

अस्तु हम देखते हैं कि सन् 1778 से 1858 तक 80 वर्षों में इस जनपद जालौन के विभिन्न क्षेत्रों में बसे मरहठों ने अंग्रेजों की उस सत्ता को जिसका दुनियां के मानचित्र पर सूर्यास्त नहीं होता था, को चैन की नींद सोने नहीं दिया और जहां कहीं वे पराजित हुये उन्होंने अवसर मिलने पर अपनों को संगठित करके अंग्रेजों से लोहा लिया और उनकी सत्ता को चुनौती देते रहे। इसके साथ ही प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों का व्यक्तिगत स्तर पर भी कुछ मरहठों ने विरोध किया जिसके कारण उन्हें भारी कष्ट उठाना पड़ा और कुछ को अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा। ऐसे ही कुछ अदम्य साहसी मरहठों का हम स्मरण कर रहे हैं–

नारायण राव पाण्डुरंग–

क्रान्ति से पूर्व आप अंग्रेजों के रोजनामचा नवीस के नद पर कार्यरत थे। अभिलेखों में गड़बड़ी करके क्रान्तिकारियों की सहायता करने के कारण इनकी सारी सम्पत्ति जब्त करके इन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया।[21]

नारायण राव–

ये ताई बाई के पति थे। सन् 1870 में ताई बाई की मृत्यु के उपरान्त जालौन आकर रहना चाहते थे, परन्तु अंग्रेजी सरकार ने इन्हें अनुमति नहीं दी।[22]

बलवन्त राव वकील–

इन्हें अंग्रेजी खजाने से रु. 333 की वार्षिक पेंशन मिलती थी। ताई बाई के सक्रिय सहयोगी थे। जिसके कारण इनकी सारी सम्पत्ति जब्त करके ताई बाई के साथ 7 वर्ष की सजा भुगतने हेतु मुंगेर भेजा गया।[23]

जनार्दन राव भाष्कर–

क्रान्ति के समय ताई बाई ने इनको 14 गांव व 40 घोड़ों का सरदार बनाया। इन्होंने अपने गांवों से 8–10 हजार रुपये वसूल करके कालपी में तात्या टोपे की सहायतार्थ भेजे। जिससे देशद्रोही के जुर्म में अंग्रेजों ने इनकी सम्पत्ति जब्त करके 7 वर्ष की सजा दी।[24]

बलवन्त राव व बालकिशन पाण्डुरंग–

ये दोनों भाई ताई बाई के निजी कर्मचारी थे, जो अपनी स्वामिनी के साथ ही मुंगेर सजा काटने गये।[25]

भाऊ विश्वास राव–

ये जालौन राजवंश के अति विश्वसनीय कर्मचारी थे। क्रान्ति के समय से ताई बाई के दीवान थे। इन्होंने कालपी, जालौन, इटौरा के इलाकों का सैटिलमैन्ट तीन लाख रुपये में तथा कछवाहाघर का सैटिलमैन्ट ढाई लाख रुपये में करके सारा रुपया कालपी में तात्या टोपे के पास भेजा। इनके खिलाफ अंग्रेजों ने मुकदमा चलाया जिसके परिणामस्वरूप इनकी सम्पत्ति जब्त करके इन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई थी।[26]

बाजू गोपाल–

ताई बाई ने इन्हें 8 गांव तथा 40 घुड़सवारों का नायक बनाकर अपना ध्वजवाहक नियुक्त किया था। 10 मई 1858 को ताई बाई के आत्मसमर्पण के साथ इन्होने भी आत्मसमर्पण किया था।
इनकी सम्पत्ति अंग्रेजों ने जब्त करके, इन्हें सात वर्ष की सजा दी थी, जो बाद में गवर्नर जनरल कलकत्ता द्वारा माफ कर दी गई थी।[27]

गनपतराव, त्र्म्बकराव–

ये दोनों ही बहैसियत सेकव ताई बाई के साथ मुंगेर सजा काटने गये थे।[28]

नारायण राव चिन्तामणि–

इन्हें क्रान्तिकारियों द्वारा इटौरा का तहसीलदार नियुक्त किया गया था। अतः मई 1858 में जनरल रोज जब अपनी अंग्रेजी सेना के साथ कालपी पहुंचे तब इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।[29]

सुल्तान सांवले–

इन पर अंग्रेजों के यहां लूटपाट तथा क्रान्तिकारियों का साथ देने का आरोप था। इनको 14 वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड दिया गया था। इनका इतना आतंक था कि इन्हें हमेशा हथकड़ी तथा बेड़ी लगाकर रखा जाता था।[30]

ऐसे ही न जाने कितने मरहठे क्रान्तिवीर हुये हैं जिन्हें न प्रशंसा की जरूरत थी, न धन पाने की लालसा। बस धुन थी तो केवल अपनी मातृभूमि की सेवा की। ऐसे न जाने कितने जाबांज मरहठे आज गुमनामी के अंधेरे में हैं। उन सभी को हमारा शत शत नमन् !

इस जनपद को अंग्रेजों के अत्याचारों से मुक्त रखने में मरहठों के क्रियाकलाप इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित किये जायेंगे।

संदर्भ–

1. गोरेलाल तिवारी, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ सं. 210
2. विलियम इरविन, लेटर मुगल्स भाग दो पृष्ठ सं. 230
3. जनरल आफ एशियाटिक ऑफ बंगाल 1878 पृष्ठ सं. 296
4. डी.बी. परसनीस, मराठाया चे पराक्रम पृष्ठ सं. 65
5. जी.एस. सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग दो पृष्ठ सं. 105
6. वी.जी. दिघे पेशवा बाजीराव प्रथम एण्ड मराठा एक्सपेन्शन पृष्ठ सं. 103
7. आर.के. लंघाटे, गोविन्द पंत बुन्देलयांची कैफियत 9–10–11–14
आर.बी.हीरालाल, मध्य प्रदेश का इतिहास पृष्ठ सं. 76
8. डी.के. सिंह, 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 26
9. फारेन डिपार्टमेन्ट सीक्रेट कन्सलटेशन भाग दो 8 जून 1778 पृष्ठ सं. 238
10. फारेन डिपार्टमेन्ट सीक्रेट कन्सलटेशन 15–6–1778 अभिलेखागार, नई दिल्ली
11. डॉ. एस.एस. सिन्हा, दि रिवोल्ट ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड पृष्ठ सं. 19
12. डी.के.सिंह, 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं.36
13. एचीसन, ट्रीटीज एण्ड ऐंगेजमैण्ट 1906 भाग 5 पृष्ठ सं. 53
14. डी.के.सिंह, 1857 की क्रान्ति ओर जनपद जालौन पृष्ठ सं. 29
15. डी.के.सिंह. 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 40
16. डी.के.सिंह, 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 30
17. डी. के.सिंह 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 30
18. पी.जे. व्हाईट, फाईनल रिपोर्ट ऑफ सैटिलमैन्ट पृष्ठ सं. 45
19. डी.एल. ब्रोकमैन, जालौन गजेटियर पृष्ठ सं. 81
20. पी.जे. वहाईट, फाईनल रिपोर्ट आफ सैटिलमैण्ट पृष्ठ सं. 44
21. डिपार्टमैण्ट नं. XXII ऑफ 1857 फाईल नं. 7 सेल आफ दि हाउस ऑफ नारायण राव पत्र सं. 146 आफ 1858 (राज्य अभिलेखागार, इलाहाबाद)
22. डिपार्टमैण्ट नं. XXI ऑफ 1870 फाईल नं. 116 राज्य अभिलेखागार, इलाहाबाद
23. पोलिटिकल ऐजेन्ट हैमिल्टन का पत्र दिनांक 3 जून 1858 (राजकीय अभिलेखागार, इलाहाबाद)
24. डी.के. सिंह, 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 97
25. डी. के.सिंह, 1857 की क्रान्ति ओर जनपद जालौन पृष्ठ सं. 97
26. डिपार्टमैण्ट नं. XXI फाईल नं. 25 ऑफ जिला जालौन, राजकीय अभिलेखागार, इलाहाबाद
27. डी. के.सिंह. 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 98
28. डी.के. सिंह, 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 98
29. डिपार्टमैण्ट नं. XXI 1870 फाईल नं. 14 ऑफ जिला जालौन, राजकीय अभिलेखागार, इलाहाबाद
30. डी.के. सिंह, 1857 की क्रान्ति और जनपद जालौन पृष्ठ सं. 102

कोरोना वायरस का भारतीय ढाँचे पर कुठाराघात

डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान
प्रभारी–गणित विभाग

कोरोना वायरस–19 का संक्रमण सबसे पहले चीन के बुहान शहर में आया और देखते–देखते इसने वैश्विक महामारी का रूप ले लिया। इसके कारण दुनिया की एक–दूसरे संग मजबूती से जुड़ी हुई प्रणालियाँ बदल गई हैं। इस वायरस के प्रकोप को काबू करने के प्रयास के तौर पर सामाजिक मेल–जोल पर बंदिशें लगा दी गई, इससे दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी अपने घरों में बन्द रहने को मजबूर हुयी। इस वायरस के कारण फैली महामारी से वैश्विक स्वास्थ्य संकट गहराता जा रहा है। वाणिज्यिक गतिविधियों और लोगों की सभाओं पर तालाबंदी, प्रतिबंध से वैश्विक एवं घरेलू विकास प्रभावित हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र व्यापार रिपोर्ट के अनुसार भारत और चीन के अपवाद के साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था कोरोना वायरस महामारी के कारण मंदी में चली जायेगी। विकासशील देशों में रहने वाले दुनिया के दो तिहाई लोगों को अभूतपूर्व आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ रहा है। विश्व बैंक ने कहा है कि कोरोना वायरस ने भारतीय अर्थव्यवस्था को जबरदस्त झटका दिया है, जिससे देश की आर्थिक वृद्धि दर में भारी गिरावट आई है। कोरोना की वजह से वित्तीय क्षेत्र पर दबाव बढ़ा जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पहले से सुस्त हुई है। इस महामारी पर अंकुश के लिए सरकार ने देशव्यापी बंदी लागू की थी। इससे लोगों की आवाजाही रुक गई और वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित हुई। इसका सामना देश की जनता को परेशान होकर करना पड़ रहा है। व्यवसाय बन्द होने के कारण मजबूर वर्ग बेरोजगार हो गया है। इस कारण वह अपने घर वापिस जाने के लिए मजबूर हो गया। लॉकडाउन के कारण आनेजाने के साधन बन्द रहे। इस कारण मजदूरों को पैदल या अपने साधनों से यात्रा करनी पड़ी। सीमा बन्दी के कारण प्रशासन ने अपनी राज्य की सीमा में प्रवेश करने से रोक लगा दी थी। इस कारण मजदूर वर्ग की हालत भूख–प्यास एवं पैदल चलने के कारण हालत बहुत खराब हुयी। अपना धंधा पानी छोड़कर मजदूर वर्ग शहरों से अपने–अपने गाँव को पलायन करने के लिये मजबूर हुआ। इसके साथ व्यापारी वर्ग की भी आर्थिक स्थिति खराब हो गयी है। लाखों लोगों की मृत्यु इस महामारी के कारण हो चुकी है।

भारतीय उद्योग पर प्रभाव :–

आयात में चीन पर भारत की निर्भरता बहुत बड़ी है। अधिकांश भारतीय कंम्पनियाँ चीन में स्थित है। भारत की लगभग 70 प्रतिशत कम्पनियाँ शंघाई, बीजिंग, ग्वांगदोंग, जियांग्सू और शानदोंग जैसे प्रान्तों में स्थित है। विभिन्न क्षेत्रों में ये कम्पनियाँ औद्योगिक निर्माण विनिर्माण सेवाओं, आई.टी., बी.पी.ओ., लॉजिस्टिक्स, रसायन और पर्यटन का काम करती है। लगभग एक तिहाई मशीनरी और लगभग 2/5 भाग कार्बनिक रसायन जिन्हें भारत दुनिया से खरीदता है, चीन से आते हैं। मोटर वाहन पार्ट और उर्वरकों के लिए भारत के आयात में चीन की जिस्सेदारी 25 प्रतिशत से अधिक है। लगभग 65 से 70 प्रतिशत

सक्रिय फार्मास्यूटिकल सामग्री और लगभग 90 प्रतिशत मोबाइल फोन चीन से भारत आते हैं। इन औद्योगिक कम्पनियों से सामान का निर्यात बन्द पड़ा है जिससे भारतीय उद्योग पर बुरा असर पड़ा। इसी प्रकार वैश्विक बन्दी के कारण निर्यात में गिरावट हुई है। मन्दी की स्थिति में आने वाले देशों और दिवालिया होने वाली कम्पनियों में प्रवेश करने की सम्भावना बढ़ गई है। इससे भारत की वैश्विक मंदी से प्रभावित होने की पूरी संभावना है। लॉकडाउन जैसे अभूतपूर्व कदम ने कई अर्थव्यवस्थाओं को बाधित किया है। व्यवसाय बन्द पड़े हैं। लोगों की नौकरियाँ छूट गयी और भूख की छाया बढ़ गयी है। शिक्षण संस्थाएँ एवं उद्योग बन्द होने के कारण देश के विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है।

पर्यटन उद्योग के कारोबार में संकट :–

लॉकडाउन की वजह से दुनिया के अधिकांश हिस्सों में सीमाएँ बन्द थीं। इस कारण कोरोना का पर्यटन कारोबार पर पूरे विश्व में असर दिखा है। हवाई अड्डे, होटल, शैक्षणिक संस्थान, रेल और बसों का आवागमन समेत कई व्यवसाय बन्द किये गये। इस कारण पर्यटन से संबंधित कारोबार को जबर्दस्त नुकसान हुआ है। पर्यटन उद्योग से सरकार को काफी आय होती है। इससे सरकार को आर्थिक नुकसान हुआ है। पर्यटन से संबंधित कारोबार से जुड़े व्यक्तियों की आय समाप्त हो गई है। व्यक्ति भुखमरी के मोड़ पर खड़े हैं। रिक्शा चालक, टैक्सी चालक, बस चालक, होटल संचालक, ढाबा संचालक आदि जैसे लोगों की आय शून्य पर पहुँच गयी थी।

संस्कृति पर प्रभाव :–

इस महामारी ने विभिन्न तरीकों से धर्म को प्रभावित किया है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्च जैसे विभिन्न धर्मों से जुड़े पूजा के स्थलों को बन्द कर दिया गया। विभिन्न त्योहारों एवं पर्वों से जुड़ी तीर्थ यात्राओं पर रोक लगा दी गई है जिससे धार्मिक स्थलों को आर्थिक नुकसान हुआ है एवं इससे जुड़ी तीर्थयात्राओं एवं जलसों पर रोग लगा दी गयी है। इससे हमारी संस्कृति की आस्था पर प्रभाव पड़ा है।

भारत के लिए परिदृश्य : –

बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री हैंस टिमिर ने कहा है कि भारत में लम्बे समय तक लॉकडाउन जारी रहा तो परिणाम अनुमान से अधिक बुरे हो सकते हैं। टिमिर ने कहा कि भारत को पहले महामारी रोकनी होगी। इसके साथ भारत को विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर अस्थायी रोजगार कार्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा और लघु एवं मझोले उपक्रमों को दिवालिया होने से बचाना होगा।

इस महामारी की जब तक वैक्सीन नहीं बनती है तब तक खतरा बना रहेगा। अलग–अलग देश इस वायरस के संक्रमणों के चक्र को काबू पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वैक्सीन के विकास, इसके उत्पादन और न्याय संगत वितरण की बाधाओं को दूर करने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। मास्क से लेकर वेन्टीलेटर तक जैसी जरूरी सामग्री के उत्पादन एवं इसकी आपूर्ति युद्ध स्तर पर करने की आवश्यकता है। तभी इस महामारी पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

सन्त काव्य के विविध पहलू

डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी
असि0 प्रो0, हिन्दी विभाग

हिन्दी भक्ति काव्य में सन्तकाव्य का मूल्यवादी एवं सामाजिक समता तथा परमार्थिक जीवन दर्शन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व है। इसे ज्ञानाश्रयी शाखा या निर्गुण भक्ति धारा भी कहा गया है। सामान्यतः सन्तकाव्य विधि निषेध का काव्य है, इस दृष्टि से इसमें खंडन–मंडन की प्रवृत्ति बहुत अधिक मिलती है। सन्तकाव्य का उद्‌भव व विकास बहुत कुछ नाथपंथियों एवं सिद्धों की सैद्धांतिक मान्यताओं की पृष्ठभूमि में विद्यमान है। भक्ति आंदोलन ने सांस्कृतिक दृष्टि से इस पृष्ठभूमि को प्रेरणा, प्रभाव एवं परिवेश प्रदान किया। हिन्दी के धार्मिक साहित्य में सन्त काव्य जनजीवन के धार्मिक उन्मेष का नया प्रयोग है, यही कारण है कि सामान्य जीवन की स्वभाविक भावभूमि पर धर्म की जो प्रेरणा उत्पन्न हुई उसका अभिव्यक्तिकरण जनभाषा द्वारा ही हुआ। भक्ति काव्य में सामान्यतः आस्था और विश्वास की दो धाराएं चलती दीख पड़ती हैं, जिनमें प्रथम पौराणिक मतवाद है जिसके मूल में सगुण ब्रह्म एवं उसके अवतार की अवधारणा विद्यमान है, तो दूसरी ओर ज्ञानमार्गी शाखा के कवि ज्ञान को प्रमुख तत्व मानते हुए सगुण मतवाद का खंडन करते हैं। उन्होंने पौराणिक धार्मिक विश्वासों, मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड एवं वाह्याचारों आदि का विरोध किया है। सन्त कवि प्रायः समाज के निम्न वर्गों से संबंधित थे, जिनके कारण उनकी काव्यगत संवेदना में पृथक धारणा विद्यमान है। कबीरदास, मलूकदास, दादूदयाल, पीपा, रैदास, नानक, बोधा, धर्मदास, सुन्दरदास, रज्जब आदि प्रमुख सन्त कवि हैं।

सन्तकाव्य भावात्मक एवं अनुभूति प्रवण है, उसका जीवन दर्शन अत्यंत उदार, व्यापक पूर्वाग्रहमुक्त एवं प्रेममय है। लौकिक जीवन के श्रेष्ठ तत्वों की व्यंजना सन्तकाव्य के विषय पक्ष में विद्यमान है। इस काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों में ज्ञान मार्ग की प्रधानता, निर्गुण ब्रह्म में विश्वास, अवतारवाद का खण्डन, मूर्तिपूजा का विरोध, विनय की महिमा, गुरू महिमा, जीवन और जगत् की नश्वरता, दांपत्य भावभक्ति का निरूपण, सामाजिक समता की भावना एवं बाह्याचारों एवं कर्मकांडों का खण्डन, जनभाषा का प्रयोग आदि सम्मिलित हैं।

ब्रह्म सृष्टि का परम तत्व है, कण–कण में व्याप्त है, सन्त कवि इस तथ्य का उद्‌घाटन अनेकशः करते हैं। कबीर के निर्गुण राम सर्वनिरपेक्ष होते हुए भी एक हैं–

हमारे राम–रहीम करीमा केसो अल्लह राम सति सोई
बिस्मिल मेहि विसंभर एकै और न दूजा कोई।।

इसी परमतत्व की सर्वात्मानुभूति नानकदेव ने भी अपनी बानियों में की हे–

काहे रहे बन खोजन जाई,
सर्वनिवासी सदा अलोपा, तोही संग समाई।।

इस परमतत्व से सन्तकबीर सहज संबंध स्थापित करते हैं, वे दाम्पत्य प्रतीकों का चयन करते हैं, माधुर्य भाव से सम्बद्ध होकर परमात्म भाव में लीन रहते हैं, इनके काव्य में रहस्यवाद और उसके मूल में प्रेमानुभूति की प्रधानता है। इस प्रेमानुभूति में विरह की सतत अनुभूति उनकी साधना दीप्ति का परिचायक है–

बहुत दिनन की जोबती, बाट तुम्हारी राम,

जीव तरसै तुझ मिलन को, मन नाहि विश्राम।।

सन्त साधक आत्मा–परमात्मा के विछोह से व्यथित रहते हैं। वे अहर्निश (रात–दिन) उस परमतत्व की प्रेमानुभूति में मगन रहने वाले हैं। दादूयाल की प्रेमानुभूति विरह को व्याकुल भावना का परिचय प्रस्तुत उदाहरण में द्रष्टव्य है–

विरह जगावै दरद को, दरद जगावै जीव,

जीव जगावै सुरति को, पंच पुकारे जीव।

भक्ति को मध्यकाल में परमपुरुषाथ्र के रूप में वर्णित किया गया है। प्रायः सभी कवि भक्ति जन्य आनन्द की अभिव्यक्ति करते हैं। सुंदरदास ने इस आनन्दानुभूति को इस प्रकार व्यक्त किया है–

है यह अति गम्भीर उठती लहर आनंद की,

मिष्ट सुजाको नीर, सकल पदारथ मध्य है।

गुरू की महिमा अनन्त एवं अपार है। वस्तुतः सन्त कवि ज्ञान मार्ग की जिस सीढ़ी पर चढ़कर चले इसका बोध सतगुरू के माध्यम से संभव है–

सतगुरु हम सूं रीझि करि कह्या एक प्रसंग,

बरस्या बादल प्रेम का भीजि गया सब अंग।।

विनय एवं नम्रता सन्त कवियों की भावात्मकता का विधेयात्मक पक्ष है जहां उनमें खण्डनात्मक प्रवृत्ति की प्रधानता थी, उनमें उसका अक्खड़पन परिलक्षित होता था परंतु उनकी मूल संवदेना अत्यंत मृदुल एवं लोकोपयोगी थी–

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरी,

चींटी शक्कर ले चली, हाथी के सिर धरि।।

मूलरूप से सन्त संप्रदाय का सम्बन्ध वेद विरोधी विचारधारा से जोड़ा जाता है। सन्तों ने बौद्ध, सिद्धों एवं नाथों की विचारधारा को आत्मसात करते हुए युगीन परिप्रेक्ष्य में अपनी धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओं को प्रचारित किया। सन्तों ने विठ्ठल सम्प्रदाय के नाम स्मरण, रहस्य भावना तथा प्रेमाभक्ति को ग्रहण किया है, भारतीय अद्वैतवाद, औपनिषद दर्शन, सूफियों की प्रेमभावना, वैष्णव धर्म की अहिंसा, नवधा भक्ति आदि तत्वों को सन्त संप्रदाय में आत्मसात किया गया है। रांगेय राघव के अनुसार–"निर्गुण सन्त समाज के उन क्षेत्रों से आए थे जिन्हें शताब्दियों से कुचला गया था, उन्हें पूर्ण शिक्षा नहीं मिली थी, उन्हें

दबकर रहना पड़ता था।" सन्तों की साधना और वाणी का क्षेत्र केवल स्वान्तः सुखाय की भावना एवं वैयक्तिक मुक्ति साधना तक ही सीमित नहीं था, उनके समक्ष सामाजिक एवं धार्मिक आडंबरों की खुली चुनौती थी। डॉ0 रामविलास शर्मा के अनुसार–"उन्होंने धर्म की रूढ़ियों का उल्लंघन किया था, उन्होंने अपने प्रेम के अश्रुजल से देवता के आंगन से रक्तपात की कलंक रेखा धो डाली थी।"

सन्तकाव्य देश की राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के फलस्वरूप विरचित, भावनात्मक एवं अनुभूति प्रवण जन काव्य है, इसका प्रेरणा स्रोत था–सामान्य मानव का हित साधन, धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं का अंधानुकरण न करना, वर्णाश्रम व्यवस्था का विरोध, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा आदि की निंदा, सदाचार आदि गुणों की प्रतिष्ठा, शास्त्रीय ज्ञान की अनिवार्यता का निषेध, आत्मानुभूति की प्रमाणिकता आदि पर बल दिया। सन्त कबीर दरिया साहब के कथन–

दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन–रात।

तथा कबीर के अभिमत–

पंडित और मसालची दोनों सूझै नाहिं,
औरन को कर चांदना, आप अंधेरे माही।।

सन्त साहित्य में हृदय की सच्ची प्रेरणा, अकृत्रिमता, सहज सौन्दर्य, सरलता और अनुभूति विद्यमान है। सन्त कवियों ने हिंदू और मुसलमान दोनों जातियों को एकता के सूत्र में बांधने की चेष्टा की। सन्तों का व्यक्तित्व सच्चे अर्थों में संवेदनशील था। इसलिए उनका साहित्य जनभावनाओं की सहज प्रवृत्तियों, परिस्थितियों, विकृतियों और विडंबनाओं का विशाल शब्द चित्र है। इन कवियों ने अपनी वाणी को काव्यांगों के प्रति सचेत होकर व्यक्त नहीं किया। फलस्वरूप उनकी रचनाओं में अलंकारों का सप्रयोजन प्रयोग नहीं लक्षित होता है। फिर भी आत्माभिव्यक्ति तथा विचारनिरूपण के संदर्भ में इनकी कविता में रूपक, उपमा, दृष्टांत, तद्गुण सहोक्ति, विभावना, काव्यलिंग आदि अलंकारों का प्रयोग अधिकांशतः मिलता है। कहीं–कहीं इनकी सहज भाषा में अलंकारों का उत्कृष्ट प्रयोग भी दृष्टिगत होता है। किस प्रकार उसमें कृत्रिमता से परे सहज अलंकारिक सौंदर्य विद्यमान है–

नैनों की कर कोठरी, पुतली पलंग बिछाए,
पलकों का चिक डारी के पीय को लियो रिझाए।

इस प्रकार सन्त काव्य मूलतः सहज एवं प्रमाणिक अभिव्यंजना पर आश्रित है। सन्त कवियों ने जिन मानवीय मूल्यों का प्रतिपादन किया वे अपने युग में अत्यंत प्रगतिशील थे। उनका प्रभाव अद्यतन विद्यमान है। यह अवश्य कहा जा सकता है कि इस प्रगतिशील चेतना का उद्देश्य, स्वरूप समाज की संरचना पर आधारित था, जो सर्वात्मभाव पर बल देता है। इसमें भारतीय संस्कृति, सत्य, अहिंसा, ओज, कर्म, श्रेय एवं प्रेय, सत्संग, सात्विकता आदि मानवीय गुणों के रूप में उपस्थित है। अतः यह काव्य भक्ति काव्य के संदर्भ में अत्यंत प्रभावी एवं प्रेषणीय हैं। सन्तों ने लोकजीवन को स्वच्छ और आध्यात्मकपरक बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया, जिससे मध्यकाल में भारतीय जनता के अंतर्गत आचरण की शुद्धता, वचन और कार्य की सत्यता, निष्ठा, अलौकिक शक्ति पर विश्वास आदि गुणों का प्रसार और विकास हुआ।

महिला सशक्तिकरण और सुशासन

श्रीमती वर्षा राहुल
असि0 प्रो0, अर्थशास्त्र विभाग

भूमिका :

सामाजिक विकास का उद्देश्य सामाजिक न्याय, एकजुटता, सद्भाव और समानता को समाज के आधारभूत मूल्यों में शामिल करना है लेकिन आज भी देश की आधी आबादी का बड़ा हिस्सा कुपोषण, लैंगिक एवं सामाजिक भेद–भाव, गरीबी तथा अशिक्षा के दुष्चक्र में फंसा हुआ है। भारतीय समाज में भेद का एक प्रमुख कारण लैंगिक भी है। विश्व आर्थिक मंच द्वारा नवम्बर 08 में जारी की गयी रिपोर्ट ग्लोबल जैंडर गैप के अनुसार लैंगिक असमानता में भारत का स्थान 130 देशों की सूची में 118वां है, गांवों व शहरों दोनों ही स्थानों में महिलाओं का स्तर दूसरे दर्जे में है।

देश में आर्थिक असमानता, लैंगिक एवं जातिगत भेदभाव की मार शिक्षा पर भी पड़ रही है। कई शक्तिपीठों वाले उत्तर प्रदेश में नवरात्रि के मौके पर लड़कियों को 'देवी' मानकर पूजा तो जाता है, लेकिन अभिभावक इन देवियों को पढ़ाने–लिखाने में अधिक यकीन नहीं करते। हालत यह है कि प्रदेश की 5.4 प्रतिशत लड़कियों ने स्कूल का मुंह नहीं देखा। लड़कियों के बारे में इस विरोधाभाषी नजरिये का ही नतीजा है कि तमाम कोशिशों के बावजूद महिलाओं की साक्षरता दर 45 प्रतिशत है। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय बदलाव न आने से देश में नारी सशक्तीकरण की मुहिम भी कोई खास रंग नहीं दिखा पा रही है। असल में रुढ़िवादी भारत की तस्वीर तभी बदलेगी जब महिलायें शिक्षित होगी। आज भी देश के रुढ़िवादी समाज में दकियानूसी विचारों का पलड़ा भारी नजर आता है।

महिला सशक्तिकरण तभी सम्पूर्ण हो सकता है जब महिलायें रोजगार, असुरक्षा, अपर्याप्त भोजन और पारिवारिक चिन्ताओं से मुक्त हो सकें। उनके पास स्वयं के लिये कुछ विश्राम का समय हो और वे खुद को शारीरिक तौर पर भी सुरक्षित कर सकें।

भारतीय समाज में बेहिसाब असमानतायें हैं। इस विभेद को मिटाने के लिये प्रथम प्रयास आज से ही करना होगा।

प्रस्तावना :

प्राचीनकाल में भारतीय समाज में स्त्रियों का सम्मान मर्यादायुक्त रहा है। पूर्व मध्यमान तक आते–आते नारी का आदर्श व मान व्यवहारिक रूप से हटकर केवल शाब्दिक रूप तक ही रह गया था। लेकिन मां का स्थान सदैव गुरू से उच्च माना जाता रहा है। शूरवीरों का एक आदर्श था कि वे पराई स्त्री को अपमानित न करें। शिलालेखों एवं अभिलेखों से ज्ञात होता है कि स्त्रियों ने स्वतंत्रतापूर्वक राज्य का संचालन किया था। इस काल में शक्ति पूजा के रूप में स्त्री को भवानी व गौरी का रूप प्रदान किया गया। इन आदर्श स्वरूपों को छोड़कर साधारणतया समाज में नारी नियंत्रणों में कसती चली गयी।

मध्ययुग में पर्दा प्रथा भी चरम सीमा पर पहुंच गयी थी। पति के प्रति स्त्री की इतनी भक्ति हो कि वह पर–पुरुष का मुख तक न देखे। पर्दे के पीछे की इस भावना में विदेशियों से स्वयं को बचाना भी एक अन्य कारण था पर परिस्थितियोंवश बनायी गयी स्त्री सुरक्षा परिधि को जब जबरन दायरे में रखा जाने लगा तभी से यह महसूस किया जाने लगा कि स्त्री भी पुरुषों की भांति समान अधिकार की पात्र है तथा स्त्री उन्मुक्तता व मुक्ति की बात चर्चा में आने लगी क्योंकि समाज सदियों से स्त्री को वैसे ही परिवेश में देखता आ रहा है तो वो उसे ऐसे ही देखना चाहता है व स्त्री को ऐसे ही परिधि में रखना उसे (समाज को) उचित

प्रतीत होता है। बिना सोचे कि क्या वो (पुरूष) इस परिधि व नियमों में खुद को रखकर चल सकते हैं ? क्या जो नियम एक स्त्री कि लिये है वे खुद निभा सकते हैं ?

पिछले एक दशक से महिला सशक्तीकरण की बात जोर–शोर से की जा रही है लेकिन आज भी इस अवधारणा में नारी अपने अस्तित्व को तलाश कर रही है। कदम–कदम पर यौन उत्पीड़न एवं हिंसा का शिकार है। न केवल भारत बल्कि विश्व के तमाम विकसित एवं प्रगतिशील देशों में भी कमोवेश यही स्थित है।

हाल ही में पेश की गयी राष्ट्रीय अपराध सांख्यिकी की रिपोर्ट के अनुसार देश में हर घण्टे में दो दुष्कर्म, दो अपहरण व छेड़ाखानी और पतियों या सम्बन्धियों द्वारा सात महिलाओं को मारने–पीटने की घटनायें घटती हैं। हिंसा के मूल कारण अहंकार है जिसके द्वारा पुरुष हमेश स्त्री पर अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहता है। डा0 राधाकृष्णन ने कहा है–"आदर्श नारी उस प्रेम का प्रतीक है जो हमें खींचकर उच्चतम स्थिति की ओर ले जाते हैं।"

शनैःशनैः नारी की स्थिति में परिवर्तन प्रारम्भ हुआ जिसे हम तत्कालीन समाज, काल, परिस्थितियों की देन कह सकते हैं। धर्म–अधर्म के नाम पर अनेक कुरीतियों ने घर–घर में अपना पांव जमा लिया। जौहरव्रत, सतीप्रथा, बाल–विवाह, शापित विधवा जीवन, नारी के अस्तित्व, उसके वजूद को खोखला करता गया। इस शापित, दमिट, कुंठित, पराजित, आश्रित, अपमानित, तिरस्कृत नारी को संभालने में शताब्दियां लग गयी। महान विभूतियों एवं नारी के स्व प्रयास से इन बुराईयों पर रोक लगाने के उद्‌देश्य से एक शक्तिशाली मुहिम चलायी गयी जिससे नारी अपने पावों पर खड़े होने लायक बन सकी और तब से वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहकर अद्यतन पुरुष समाज में बराबरी के लिये संघर्षरत है।

आधुनिक भारत में राजा राममोहन ने सती प्रथा के खिलाफ आवाज बुलन्द की। स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द ने भी नारी जागृति की अलख जगायी। महात्मा गाँधी ने स्त्री को घर की चहार दीवारी से बाहर निकलने का साहस प्रदान किया। उनका विचार था स्त्रियां पुरुष की सहचरी हैं। उनकी मानसिक शक्तियां कहीं भी पुरुष से कम नहीं हैं। गांधी जी का कहना था "बाल विवाह से मुझे घृणा है और विधवा बालिका को देखकर मैं कांपने लगता हूं पत्नी के देहान्त के पश्चात् तुरन्त शादी करने वाले पुरूष को देखकर मैं पागल हो जाता हूँ।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विचारशील नेताओं ने नारी को सभी क्षेत्रों में समान अधिकार देने की बात कही लेकिन कुछ सामाजिक कुसंस्कारों ने अभी तक महिलाओं को अपने पिंजरे में जकड़ रखा है। आम भारतीय नारी यह भी नहीं जानती कि उनके कल्याण के लिये कौन से कानून बने हैं ? भारतीय संविधान ने स्त्री पुरुष को समान अधिकार दिये हैं। महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समकक्ष बनाने एवं उनके विकास हेतु अनेकों महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं। प्रत्येक शिक्षण संस्था से लेकर प्रत्येक सरकारी नौकरी तक में धर्म, जाति, वर्ग या रंगभेद के आधार पर किसी व्यक्ति में कोई अन्तर नहीं समझा जाता है। भारतीय संविधान में निम्नलिखित विभिन्न अनुच्छेदों में महिलाओं के बारे में प्रावधान है–

1. अनुच्छेद 14–इस अनुच्छेद के अन्तर्गत पुरूष और महिलाओं को आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक रूप से समान अधिकार प्राप्त है।

2. अनुच्छेद 15– इसके अन्तर्गत राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगा, प्रत्येक नागरिक का मूलभूत कर्तव्य है कि वह महिलाओं पर अत्याचार न होने दे।

3. अनुच्छेद 16– इसके अन्तर्गत पुरुषों एवं महिलाओं को बिना भेदभाव के सार्वजनिक नियुक्तियों तथा रोजगार के सम्बन्ध में समान अवसर का अधिकार है।

4. अनुच्छेद 23– इस अनुच्छेद का मुख्य प्रयोजन नारी के देह व्यापार से उसकी रक्षा की जाये।

5. अनुच्छेद 29– पुरूष और स्त्री को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार है।

6. अनुच्छेद 42–प्रसूति सहायता का उपबन्ध।

7. अनुच्छेद 51– इसके अतिरिक्त उन सभी बातों का परित्याग करना जो नारी सम्मान के विरुद्ध है।

अधिनियम :

1. दहेज निषेध अधिनियम 1961

2. अनैतिक व्यापार अधिनियम 1956

इसके अतिरिक्त सन् 1961, 1956, 1929, 1986, 1956, 1987, 1976, 1990 आदि में पारित अनेक अधिनियमों में महिला सशक्तिकरण से संबंधित प्रावधान किए गए हैं। इसी तरह धारा 495, 497, 498, 509 आदि है।

अब प्रश्न यह है कि सुरक्षा कवच इतना कठोर है। हर कानूनी सुविधायें स्त्रियों को प्राप्त हैं। किन्तु फिर भी स्त्रियां असुरक्षित है। असहज महसूस करती है। पितृसत्ता के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिये स्त्रियों ने जितनाविरोध प्रतिरोध किया है। उन पर उतना ही दमन हिंसा और प्रतिरोध बढ़ता चला गया। जब तक परिवार में पिता–पति–पुत्र का अधिनायकवादी वर्चस्व रहेगा तब तक औरत का अस्तित्व व व्यक्तित्व अधिकार ओर अभिव्यक्ति, समानता व सम्मान का हर संघर्ष अधूरा और सारे घोषणा पत्र बेमानी है।

भारत के हर क्षेत्र व प्रान्त में जितने भी रीति–रिवाज व परम्परागत् नियम हैं वे सारे पुरुष वर्ग से सीधा संबन्ध रखते हैं। हर घर में, हर त्यौहार में भगवान व पुरुषों की ही अराधना होती है। चाहे वो पति के रूप में हो, भाई के रूप में हो अथवा पुत्र के रूप में हो, सभी व्रत व पूजा उनकी सलामति के लिये होती है और ये सब पूजा महिलाओं से ही करवायी जाती है। रक्षाबन्धन में बहन भाई को तिलक कर राखी बांधती हैं। उसके लिये व्रत रखती हैं। इस परम्परा से समाज में बेटे की लालसा अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि यदि किसी परिवार में दो पुत्री हो तो वे उक्त परम्परा का वहन कैसे करेंगे? भारतीय समाज में सभी व्रत व त्यौहार पुत्र व पति यानि पुरुषों पर ही आधारित होते हैं। इसलिये महिलाओं में भी पुत्र प्राप्ति की लालसा व्याप्त रहती हैं।

मैं भारतीय हूँ और मुझे भारतीय होने पर गर्व है तथा अपनी परम्पराओं से मोह भी है क्योंकि मुझे एक स्त्री के रूप में यही सिखाया गया है। सिखाना भी चाहिए पर दबाब के बिना। जिस प्रकार एक नदी निश्चलता से बहते हुए अपना अस्तित्व कायम किये हुये स्वच्छ व निर्मल बनी हुयी है। क्या उसी प्रकार समय की मांग के अनुसार हम अपने नियमों व परम्पराओं में संशोधन कर स्वच्छ व निर्मल वातावरण निर्मित नहीं कर सकते।

भारत अनेक विविधताओं का देश है। दो वर्ग शिक्षित अथवा अशिक्षित में यदि हम भारत को बांटे तो पायेंगे कि अशिक्षित वर्ग काफी बढ़ा है व शिक्षित वर्ग की सोच पर निर्भर है। जहां भी किसी शिक्षित ने ग्रन्थ का उल्लेख करते हुये कुछ टिप्पणी की सारा समाज उसे बिना किसी प्रमाणिकता के सहज स्वीकार कर लेता है जैसे–

ढोल गंवार, शूद्र, पशु, नारी,
सकल ताड़न के अधिकारी।।

उक्त दोहे में ताड़ना शब्द का अर्थ धर्म गुरूओं के द्वारा बताया गया कि ताड़ना मतलब प्रताड़ना है। अतः उक्त चारों–पांचों लोगों को प्रताड़ित करके ही समाज चलाना चाहिये। ये समान अधिकार के पात्र नहीं

है जिसे समाज ने सहज रूप से स्वीकार कर लिया। दरअसल ताड़ना शब्द एक अवधि शब्द है जिसका स्थानीय अर्थ है देखना, पहचानना अर्थात उक्त दोहे में तुलसीदास जी के द्वारा उक्त लोगों की अवहेलना नहीं की गयी बल्कि समाज में उक्त लोगों को अधिक ध्यान न देने, संभालने की बात कही गयी है जिसे धर्म गुरूओं के द्वारा अपने वर्चस्व को बनाये रखने के लिये समाज में ये गलत धारणा फैलायी गयी।

उक्त गलत धारणा को फैलाने वालों ने इसे फैला तो दिया समाज में परन्तु इस ओर नहीं सोचा कि हमारे एक महान ग्रंथ रामचरितमानस पर प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। इस धारणा ने स्त्री के वर्चस्व को धूमिल कर दिया। खुद स्त्रियों ने मान लिया कि हम प्रताड़ित होने के लिये ही जन्मे हैं। यदि ऐसा होता तो तुलसीदास ने निम्न पंक्ति में ये न कहा होता–

"एक नारिव्रतरस सब झारी,
ते मन बच क्रम पतिहितकारी।।

अर्थात् पुरुष के विशेषाधिकारों को न मानकर दोनों को समान रूप से एक ही व्रत व नियम मानना चाहिये।

अतः ये कहना अनुचित नहीं होगा कि लोगों ने अपने निजी स्वार्थ में समाज को गलत दिशा की ओर धकेला जिसका परिणाम हम आज तक वहन कर रहे हैं। समाज में व्याप्त कई व्याभिचार परिवर्तित होने का नाम ही नहीं ले रहे। कुछ जगह हालातों में थोड़ा परिवर्तन तो आया है पर किसी न किसी घटना के घटने के पश्चात किसी भी स्त्री को अपना देश, क्षेत्र सुरक्षित नहीं लगता है।

पिछले एक दशक से महिला सशक्तीकरण की बात जोर–शोर से की जा रही है लेकिन आज भी इस अवधारणा में नारी अपने अस्तित्व को तलाश कर रही है। कदम–कदम में यौन उत्पीड़न एवं हिंसा का शिकार हो रही है। यह न केवल भारत बल्कि विश्व के तमाम विकसित एवं प्रगतिशील देशों में भी कमोवेश यही स्थिति है।

निष्कर्ष :

स्त्री रूप में पहले की स्थितियों का दर्शन, मध्यकाल की स्थिति से रूबरू व अब के वातावरण को मैं भलीभांति महसूस कर पा रही हूं। स्त्रियों के इस लम्बे संघर्ष को मैं गर्व से परिपूर्ण हो देखती हूं और पाती हूं कि स्त्रियों ने अपना वर्चस्व किस दृढ़ता से सम्भालकर रखा हुआ है। कुछ सहयोग हमारे संविधान ने भी हमें दिये जिसने हमें समान वातावरण, समान अधिकार प्रदान किया। किन्तु कानून बनना व जनता में लागू होना शायद दोनों अलग–अलग कवायत है क्योंकि यदि किसी कानूनी व्यवस्था जिसे कानून के रूप में समाज में पारित किया गया उसे यदि समाज सहज स्वीकार नहीं करता तो उसमें भिन्नता आ जाती है।

अतः यदि समाज को शिक्षित या खुले विचारों से ओत–प्रोत नहीं किया गया तो कानून बनाने से कोई फर्क नहीं पड़ता जैसे ऑनर किलिंग, विधवा पुनर्विवाह आदि। इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज को इतना परिपक्व बनाना होगा कि वो अपने साथ–साथ अन्य लोगों व कानूनी व्यवस्था का भी सम्मान कर सकें, समझ सकें कि यह व्यवस्था (नियम व नीतियां) हमारे लिये व सुरक्षित रहने के लिये बनाई गयी है। यदि महिलाओं के लिये समाज कुछ करना चाहता है तो केवल इतना करें कि उसे उसका अधिकार व सम्मान दें। अन्त में निम्न पंक्तियों से अपनी बात समाप्त करती हूं।

"अपने कर्तव्यों संग नारी भर रही है अब उड़ान
ना है कोई शिकायत, न है कोई थकान
यही है नारी की पहचान।"

पर्यावरण संरक्षण : चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ. गौरव यादव
असि0 प्रो0 एवं विभाग प्रभारी
भूगोल विभाग

पर्यावरण की संरक्षा हमारे सांस्कृतिक मूल्यों व परंपराओं का एक अंग है। अथर्ववेद में कहा गया है कि मनुष्य का स्वर्ग यहीं पृथ्वी पर है। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने भी कहा था कि दो चीजें असीमित हैं–एक ब्रह्माण्ड तथा दूसरी मानव की मूर्खता। मनुष्य ने अपनी मूर्खता के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न की हैं, जिनमें से एक है पर्यावरण प्रदूषण। वर्तमान पर्यावरण चुनौतियों से निपटने के लिए पर्यावरण संरक्षण संबंधी प्रयास अति आवश्यक हैं।

वर्ष 2019 में IPCC ने 'जलवायु परिवर्तन (Climate Change), मरुस्थलीयकरण (Desertification), भूमि अपक्षयण (Land Degradation), सतत् भूमि प्रबंधन (Sustainable Land Management), खाद सुरक्षा (Food Security) तथा स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र (Terrestrial Ecosystems) में ग्रीन हाउस गैस का प्रवाह पर एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें कहा गया है कि भू–सतह पर वायु का तापमान बढ़कर लगभग दोगुना (1.3 डिग्री सेल्सियस) हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग पर IPCC की विशेष रिपोर्ट, 2018 में कहा गया है कि मानव गतिविधियों के कारण पूर्व–औद्योगिक समय से अभी तक वैश्विक औसत तापमान में लगभग 0.870C की वृद्धि हुई है।

प्रभाव–

–विश्व की भूमि प्रणालियों का मानव कल्याण, आजीविका, खाद्य सुरक्षा और जल सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

–कृषि उपयोग हेतु भूमि के अधिकाधिक उपयोग से मरूस्थलीयकरण में वृद्धि हो रही है, यह फसल की पैदावार में कमी जैसी पहले से ही गंभीर खतरों को और बढ़ावा देगा।

आवश्यक कदम–

1. रिपोर्ट में प्रस्तावित कई सुधारात्मक उपायों जैसे कि कम जुताई, भूमि संरक्षण वाली फसलें लगाना चराई प्रबंधन में सुधार तथा कृषि वानिकी का अधिक–से–अधिक उपयोग आदि उपायों को लागू करने की आवश्कता है।

2. वनों का संरक्षण और वनीकरण महत्त्वपूर्ण कदम है क्योंकि वन प्राकृतिक रूप से निर्मित कार्बन सिंक होते हैं।

भारत के संदर्भ में चुनौतियाँ–

1. भारत में पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (Environmental Impact Assessment-EIA) का कमजोर होना चिंता का विषय है।

2. भारतीय कृषि क्षेत्र में देश के लगभग 86% से अधिक जल का उपयोग होता है। भारतीय धान की पैदावार में लगने वाला जल विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है।

3. ग्लेशियरों की कमी के चलते उत्पन्न होने वाली खाद्य सुरक्षा के संकट को दूर करने के लिये लघु और दीर्घावधि में जल का बेहतर प्रबंधन किये जाने की आवश्यकता है।

4. खाद्य क्षेत्र में उपभोग और अपशिष्ट प्रबंधन भी जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक है।

उपाय–

* औद्योगिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिये विवेकपूर्ण रूप से योजना बनाने की आवश्कता हे।

* वन पारिस्थितिकी तंत्र के प्रतिस्थापन के बिना औद्योगिकीकरण हेतु भूमि का मितव्ययी तरीके से उपयोग तथा उपयुक्त जोनिंग द्वारा पर्यावरण सुरक्षा के उपाय संभव हैं।

* प्रकृति के अत्यंत समीप रहने वाले आदिवासी लोगों से परामर्श करना तथा स्थानीय ज्ञान को वैज्ञानिक ज्ञान के साथ एकीकृत करना एक महत्त्वपूर्ण तरीका है।

* जल प्रबंधन की स्थिति भी संकटग्रस्त है। इस कार्य के लिये केंद्र सरकार ने "सिंचाई जल उत्पादकता" का लक्ष्य रखा है। कुछ अन्य समाधान इस प्रकार हैं–

ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी सुसंगत सिंचाई प्रथाओं को बढ़ावा देना।

जल–गहन नकदी फसलों की पैदावार को कम करना।

धान की खेती में सिंचाई और उसे सुखाने (AWR) हेतु वैकल्पिक पद्धतियाँ अपनाना।

किसानों को जल के कुशल उपयोग हेतु तकनीकों और पद्धतियों के प्रति संवेदनशील बनाना।

जल–कुशल कृषि पद्धतियों का उपयोग करना।

कम वर्षा वाले क्षेत्रों में टैंकों और कृत्रिम तालाबों के निर्माण, जैसी पारंपरिक वर्षा जल संचयन पद्धतियों को अपनाना।

संयुक्त राष्ट्र (UN) का अनुमान है कि वर्ष 2050 तक विश्व की आबादी 9.7 बिलियन हो सकती है, इसलिये भूमि और पानी की प्रति यूनिट उपलब्धता के लिये खाद्य आपूर्ति को बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत में मौजूद अत्यधिक गरीब आबादी के कारण यह बदलाव भारत के लिये और भी महत्त्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण को तभी प्रभावी बनाया जा सकता है जब उसमें लोगों की सहभागिता बढ़ाने के साथ पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण संबंधी शिक्षा का विकास करने व लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिये पर्यावरण की रक्षा से जुड़े संवैधानिक प्रावधानों का ज्ञान हो। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कानूनी प्रयासों के साथ ही सामूहिक सामंजस्य एवं आपसी समझ के द्वारा सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

दैनिक जीवन में मनोविज्ञान

डॉ. माधुरी रावत
असि0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग

मनोविज्ञान केवल विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं मनोचिकित्सकों का विषय नहीं है, एक सैद्धांतिक विषय होने के साथ–साथ यह एक बहुत ही व्यावहारिक विषय है। मनोवैज्ञानिक शोध एक आम व्यक्ति के लिए रुचि का विषय भले ही न हों पर इन शोधों के परिणामों का सीधा सम्बन्ध हमारे दिन–प्रतिदिन के व्यवहार से होता है। मनोवैज्ञानिक शोधों के परिणाम उन कई उपायों से भरे पड़े हैं जो हमारे जीवन को और बेहतर बना सकते हैं।

उदाहरण के लिए अभिप्रेरणा को बढ़ाने के लिए मनोविज्ञान कुछ उपाय सुझाता है। किसी भी लक्ष्य को पूरा करने के लिए अभिप्रेरणा की आवश्यकता होती है, फिर चाहे वह कोई नया पाठ सीखना हो, कोई नया काम करना हो, वजन कम करना हो धूम्रपान छोड़ना आदि। संज्ञानात्मक और शैक्षणिक मनोविज्ञान में हुए कुछ शोधों से पता चलता है कि अभिप्रेरणा के स्तर को बढ़ाने के लिए कुछ तरीके अपनाये जा सकते हैं जैसे–कार्य से सम्बन्धित लक्ष्यों का स्पष्ट निर्धारण, रुचि बनाये रखने के लिए समय–समय पर नवीनता लाने के उपाय करते रहना, बोरियत से दूर रहने के लिए अनुक्रम में परिवर्तन करते रहना एवं सबसे महत्त्वपूर्ण किसी काम के सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाने पर स्वयं को पुरस्कृत करना।

मनोविज्ञान एक अच्छा कम्युनिकेटर बनने में भी मदद कर सकता है। कम्युनिकेशन या संचार केवल किसी के लिखने या बोलने को ही नहीं कहते। सन्देश की प्रभावशीलता अच्छे संचार पर निर्भर होती है और अच्छे संचार के लिए संचारकर्ता में कई कौशलों की आवश्यकता होती है। मनोवैज्ञानिक शोधों से पता चला है कि गैर–शाब्दिक या नॉन वर्बल संकेत हमारे कम्युनिकेशन का एक बहुत बड़ा हिस्सा होते हैं। मनोवैज्ञानिक अल्बर्ट मेहराबियन ने बताया कि हम जो भी बात दूसरे से कहते हैं उसमें सन्देश का केवल 7% हिस्सा शाब्दिक सामग्री होता है, 38% आवाज के टोन द्वारा एवं शेष 55% हिस्सा व्यक्ति की बॉडी लैंग्वेज द्वारा अगले व्यक्ति तक पहुँचता है। अतः एक प्रभावशाली कम्युनिकेटर बनने के लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि गैर–शाब्दिक रूपों में कैसे खुद को व्यक्त किया जाये एवं कैसे दूसरों के गैर शाब्दिक संकेतों को समझा जाये। बात करते समय खुद की बॉडी लैंग्वेज के बारे में जागरुक होना एवं दूसरे के नॉन–वर्बल संकेतों को समझने से एवं अगले व्यक्ति की आँखों में देखकर बात करने से उसका प्रभाव अधिक पड़ता है। इसके अतिरिक्त संदेशों की विषय सामग्री के लिए उपयुक्त विभिन्न टोन का उपयोग सीखना भी काफी लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नॉन वर्बल कम्युनिकेशन के समान ही स्वयं के एवं दूसरे के भाव अथवा संवेग समझना भी अंतर्वैयक्तिक संबंधों व व्यावसायिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वयं के एवं दूसरे के भावों अथवा संवेगों को समझने की क्षमता सांवेगिक बुद्धि कहलाती है। मनोवैज्ञानिक डेनियल गोल्मैन का मानना है कि सांवेगिक बुद्धि (EQ) बुद्धि से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होती है। अपनी सांवेगिक प्रतिक्रियाओं का ध्यानपूर्वक मूल्यांकन करके एवं परिस्थितियों को दूसरे के नजरिए से देखने का प्रयास करके सांवेगिक बुद्धि को बढ़ाया जा सकता है।

स्मृति के क्षेत्र में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में काफी प्रयोग हुए हैं। स्मृति बढ़ाना विशेषकर विद्यार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी होता है जिन्हे कई परीक्षाएं देनी होती हैं और जिनके लिए यह आवश्यक होता है कि

पठन सामग्री सम्बन्धी कई सूचनाएं उनकी दीर्घकालिक स्मृति में संचित हो जायें। स्मृति बढ़ाने के ऐसे कई तरीके हैं जिनकी प्रभावशीलता संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों द्वारा सिद्ध की जा चुकी है। चीजों को इक्टठा याद करने के बजाय यदि उन्हें कुछ छोटी–छोटी बैठकों में बाँट कर याद किया जाये तो वे ज्यादा समय तक एवं अच्छे से याद हो जाती हैं। बैठकों में बाँट देने से मस्तिष्क को पहुँचाई गयी सूचनाओं को संसाधित करने का अवसर मिल जाता है। शोध यह भी बताते हैं कि स्मृति में सूचना आपस में सम्बंधित समूह गुच्छों के रूप में संचित रहती है। स्मृति में सूचना अवधारणा की इस व्यवस्था का लाभ उठाने के लिए पठन सामग्री को इस प्रकार संरचित तथा संगठित किया जा सकता है कि जो पद अथवा संप्रत्यय एक समान हों उन्हें एक दूसरे के साथ सम्बद्ध करके सिलसिलेवार रूप में याद कर लें। इसी कार्य को और अधिक अच्छा बनाने के लिए तैयार किये गए नोट्स एवं पाठ्य पुस्तक के पठन की एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए। यदि कुछ ऐसा पढ़ रहे हों जिससे अपरिचित हों तो उसके बारे में सोचें कि किस प्रकार यह सामग्री आप जो पहले से जानते हैं उससे सम्बन्धित की जा सकती है। नये विचारों एवं पहले से स्मृति में उपस्थित सामग्री के बची सम्बन्ध बनाने से हाल ही में याद की गयी सामग्री की आवश्यकता पर पुनः प्राप्ति की सम्भावना आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है। पढ़ी गयी सामग्री को दीर्घकालीन स्मृति में ले जाने का एक और अच्छा तरीका है किसी भी पढ़ी गयी सामग्री को विस्तार से दोहराना। विस्तार से दोहराने का अर्थ है तात्पर्य इससे है कि जैसे मान लें किसी महत्त्वपूर्ण पद के विषय में पढ़ना समझना हो तो सबसे पहले उसकी परिभाषा पढ़ें और उसके बाद उसके अर्थ की व्याख्या का विस्तृत विवरण पढ़ें। इस प्रक्रिया को कुछ बार दोहराने पर आप पाएंगे कि उसके बारे में याद करना कितना आसान हो गया है। कई बार लोग जो पढ़ते हैं उसका अगर मन में कोई चित्र बना लें तो चीजें याद रखने में काफी फायदा होता है। पाठ्यपुस्तक में दी गयी तस्वीरें, चार्ट एवं अन्य रेखाचित्रीय सामग्री पर अवश्य ध्यान दें। अगर इस प्रकार के दृश्य संकेत न मौजूद हों तो अपनी ओर से बनाने की कोशिश करें। कई बार जिन चीजों को ध्यान रखना है उनका फ्लैश कार्ड मात्र बना लेने से भी सूचना मस्तिष्क में दृढ़ रूप से जम जाती है। इसके अलावा शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने यह भी बताया है कि कोई विषय किसी दूसरे को पढ़ाने से उस विषय की समझ एवं पुनः प्राप्ति की सम्भावना दोनों में ही वृद्धि होती है। विद्यार्थी इस तकनीक का प्रयोग अपने मित्रों एवं सहपाठियों को पढ़ाकर कर सकते हैं। इससे उनकी स्वयं की विषय के प्रति समझ एवं स्मृति बढ़ेगी।

हममें से अधिकांश लोग यह चाहते हैं कि कम से कम समय में अधिक से अधिक काम कर लें। कई बार तो मैग्जीन, लेख, ब्लॉग इत्यादि में ऐसी सलाह देखने को भी मिलती है कि मल्टीटास्किंग से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है परन्तु वास्तविकता यह है कि ये सलाहें किसी शोध पर आधारित नहीं होती। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोध बताते हैं कि एक समय पर कई काम करने की कोशिश से किसी भी काम की तेजी में तो कमी आती ही है साथ ही साथ उसकी शुद्धता और कुल मिलाकर उत्पादकता में भी कमी आ जाती है। इस प्रकार मनोविज्ञान हमारे किसी भी कार्य की उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक है। शोधों के परिणामों के अनुसार हमें बहुत जटिल या खतरनाक कार्य करते समय मल्टीटास्किंग बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। इसके अलावा अपना ध्यान उस कार्य पर केन्द्रित करना चाहिए जो सामने हो और विकर्षणों को कम से कम करने का प्रयास करना चाहिए।

केवल इतना ही नहीं मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हजारों ऐसे शोध हुए हैं जिन्होंने वैश्विक स्तर पर मानव जीवन को उन्नत बनाने में काफी योगदान किया है। इस तरह हम देखते हैं कि किस प्रकार हम मनोवैज्ञानिक शोधों द्वारा प्राप्त हुए निष्कर्षों को जीवन में उतार कर जीवन की गुणवत्ता को और भी बढ़ा सकते हैं।

अटल जयंती (25 दिसंबर) पर आयोजित
निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध

नया युग, नयी चुनौतियाँ : रोजगार की नयी संभावनायें

प्रगति पाण्डेय
एम.ए. (प्रथम वर्ष)

"नया युग, नयी उम्मीद
नयी किरण, नयी रोशनी"

उपरोक्त पंक्तियां संदर्भित करती हैं कि वैश्वीकरण का नया युग, नये एवं आने वाले विकास को दृष्टिपात करता है। हमारा समाज प्राचीन मेसापोटामिया, सिन्धु सभ्यता से मध्यकाल के युग से होते हुये आधुनिक काल के विकासवादी युग में प्रवेश कर चुका है।

21 वीं सदी में भारत व वैश्विक रूप से विकसित व विकासशील देशों के समक्ष नया युग नयी संभावनाओ व नयी चुनौतियों को दर्शाता है यह वह समय है जब पुरानी रूढ़ व्यवस्थाओं का अंत हो चुका है व नवीन शक्तियाँ उदित हो रही है आज के युग में मानव श्रम में कमी आ रही हे व तीव्र औद्योगिक विकास इसका स्थान ले रहा है। अब आइये यह जानने का प्रयास करते हैं कि इस नये वैज्ञानिक व तकनीकी प्रधान युग के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं–

भारत व वैश्विक स्तर पर चुनौतियाँ– भारत एक विशाल अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत की अर्थव्यवस्था 2.5 ट्रिलियन डॉलर की है जो क्रय शक्ति समता के आधार पर विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है। वैश्विक स्तर पर अमेरिका शीतयुद्ध के पश्चात विकसित देश के रूप में तीव्र वृद्धि की ओर अग्रसर है खाड़ी देश पेट्रोलियम के निर्यातक के रूप में विकास की आरे अग्रसर है। अफ्रीकी देश आज धीरे–धीरे नये युग की नयी दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवलोकन के पश्चात चुनौतियों पर ध्यान डालना आवश्यक प्रतीत होता है।

1. रोजगार की समस्या– आज के तकनीकी युग में रोजगार की समस्या सबसे प्रमुख हैं प्रश्नप यह उठता है कि इस नये युग में समाज की आर्थिक वृद्धि व प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के लिये रोजगार के क्या अवसर हैं जिसमें स्टार्टअप, आधारभूत ढाँचे में सुधार, निवेश को प्रोत्साहन, असमानता को कम करना प्रमुख है। इस सम्बन्ध में आगे विस्तृत चर्चा की गयी है।

2. पर्याप्त संसाधनों का अभाव–भारत में 10% जनता के पास 90% सम्पत्ति जबकि 90% जनता के पास 10% सम्पत्ति है। यह असमानता संसाधनों का अप्रयोज्य वितरण आज के युग की प्रमुख समस्या बनकर उभर रही है।

3. साइबर सुरक्षा की समस्या– साइबर सुरक्षा से तात्पर्य डेटा सुरक्षा से है अर्थात् हमारे कम्प्यूटर में जो डाटा एकत्रित होता है उसके हैकर द्वारा चोरी के मामले बढ़े जा रहे है। देश की सप्रभुता के लिये एक गम्भीर समस्या है।

4. जैवविविधता का ह्रास—पृथ्वी पर उपस्थित प्राणियों एवं जन्तुओं वनस्पतियों की विविधता जैवविविधता कहलाती है। जैवविविधता का ह्रास अर्थात् पर्यावरणीय गुणवत्ता की कमी को दिखाता है। इसीलिये यह नये युग के लिये एक मुख्य चुनौती है कि वह जैवविविधता का संरक्षण करे।

5. ग्लोबल वार्मिंग की समस्या— पृथ्वी के औसत तापमान में हो रही वृद्धि मौसम परिवर्तन, कृषि उपज एवं छोटे तृतीय देश के लिये गम्भीर समस्या है। इस संदर्भ में हरित विकास की अवधारणा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

6. रोबोटिक्स की समस्या— नये विकासवादी युग में मानव श्रम का स्थान रोबोट के रूप में स्थानान्तरित होगा औद्योगिक क्षेत्र 1 रोबोट 10 मानव के श्रम बल के बराबर कार्य कर सकता है रोबोटिक्स व मानव श्रम के बीच उचित समन्वय नये युग की प्रमुख चुनौती है।

उपरोक्त विश्लेषण के पश्चात अब हम लेख के दूसरे पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जिसमें रोजगार की नयी संभावनाओं पर चर्चा की जा रही है—

1. कला व डिजाइनिंग में रोजगार— नयी उमंग के इस युग में कला व डिजाइनिंग प्रमुख रोजगार विकल्प है। बढ़ती कला के प्रति जागरूकता इसमें अहम योगदान प्रदान करती है। ग्राफिक्स, औद्योगिक डिजाइनिंग, डिजाइनिंग ऑडिटर इस क्षेत्र में प्रमुख अवसर है।

2. विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में— आज का वैज्ञानिक युग व नवीन प्रौद्योगिकी का युग रोजगार के अवसर के रूप में नये विकल्प दर्शाता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, पर्यावरणीय क्षेत्र में नये अवसर सृजित किये जा सकते हैं।

3. विनिर्माण क्षेत्र में—मार्क्स के अनुसार किसी देश का आर्थिक ढांचा वह ढांचा है जो उस देश के सामाजिक राजनैतिक सांस्कृतिक ढाचे को आकार प्रदान करता है। किसी देश में रोजगार के नये अवसर बढ़ाने के लिये विनिर्माण क्षेत्र प्रमुख हैं इसीलिये आधारभूत ढांचे का विकास कर, निवेश बढ़ाकर इस क्षेत्र में नये अवसर सृजित किये जा सकते हैं।

4. ग्रामीण क्षेत्र— हमारे देश की आधी से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है जिसमें स्वरोजगार पशुपालन, सूक्ष्म एवं लघु उद्योग (MSME) को प्रोत्साहन देकर रोजगार में वृद्धि की जा सकती है। ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ने से शहरी पलायन को रोका जा सकता है जिससे ग्रामीण रोजगार बढ़ने के साथ—साथ शहरी क्षेत्र के रोजगार प्रभावित नहीं होंगे।

5. अंतरिक्ष के क्षेत्र में—नये युग में अन्तरिक्ष एक प्रमुख रोजगार केन्द्र के रूप में है। नये आवासीय ग्रह की खोज, मिशन मंगल, आपरेशन शक्ति इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

6. कौशल विकास—कौशल विकास में वृद्धि कर समाज में स्वउद्यमिता को बढ़ाकर नये अवसर सृजित किये जा सकते हैं कौशल विकास कार्यक्रम इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

आज के वैज्ञानिक युग में नवीन प्रौद्योगिकी में यह आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में हो रही वृद्धि के पर्याप्त अवसर प्रदान करें नया युग, नयी संवेदनाओं तथा नयी ऊर्जा का प्रतीक है। अतः यह आवश्यक है कि इस नये युग में वैश्वीकरण को ध्यान में रखते हुये चुनौतियों को कम कर विकास का पैमाना निर्धारित किया जा सके जिसमें सभी राष्ट्रों की प्रमुख भूमिका है।

नया युग :—नयी संभावनायें **+** नयी चुनौतियां **+** नया विकास **=** नया विकासवादी युग

अटल जयंती (25 दिसंबर) पर आयोजित
निबंध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त निबंध

व्यक्ति के जीवन में धर्म एवं राष्ट्र की भूमिका

अनुरुद्ध प्रताप सिंह
एम.ए. (प्रथम वर्ष)

"धर्मविहीन समाज ज्यादा समय तक टिक नहीं सकता"—गाँधी

जो लोग धर्म और राजनीति को अलग करते हैं
वो न तो धर्म को समझते हैं, न ही राजनीति को— गाँधी

व्यक्ति किसी भी समाज और राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई है। कोई राष्ट्र किस दिशा में जाएगा यह बहुत हद तक इस बात पर भी निर्भर करता है कि उस समाज के सांस्कृतिक मूल्य क्या है ? उस राष्ट्र में रहने वाले व्यक्तियों का जीवन दर्शन एवं नैतिक अवधारणा क्या है।

लेकिन यह सांस्कृतिक मूल्य तथा व्यक्तियों की नैतिक अवधारणाएं जिससे स्वयं का निर्माण करती हैं, वो धर्म है। धर्म ही वह प्रेरक शक्ति है जो व्यक्तियों की नैतिक अवधारणा का ताना—बाना—बुनती है और व्यक्तियों के जीवन दर्शन को दिशा प्रदान करती है। व्यक्तियों की नैतिक अवधारणाओं की स्वीकार्यताओं, जीवन के प्रति उनकी समझ, धर्म के आधार पर उचित—अनुचित की व्याख्याएं मिलकर सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका तैयार करती हैं।

धर्म की व्याख्याएँ प्रत्येक समाज, राष्ट्र में अलग—अलग होती है। किन्तु नैतिक मान्यताओं को विश्वासों को प्रायः सभी समाज स्वीकार करते हैं और वही विश्वास व्यक्ति के चित्त और चरित्र का निर्माण करते हैं उदाहरण के लिए जैन धर्म में पाँच महाव्रत बताए गए हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य। जैन धर्म को मानने वाले की जीवन के प्रति समझ, सामाजिक कर्तव्यों का बोध इत्यादि को, इन्हीं पांच महाव्रतों के आधार पर स्वीकार करता है।

भारतीय समाज में धर्म की व्याख्या कर्तव्यों के संदर्भ में की गयी है तुलसीदास के अनुसार

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा नहिं सम अधमाई"

गाँधी भी लिखते हैं कि —"धर्म न दूजा, सत्य समाना" यह धर्म ही है जो समाज में प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्यों का निर्धारण करता है और व्यक्ति इसी कर्तव्यबोध के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका का निर्धारण करता है।

किसी भी राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति है। धर्म, व्यक्ति और राष्ट्र तीनों आपस में इस तरह से एक दूसरे पर निर्भर करते हैं कि व्यक्ति, धर्म और राष्ट्र को अलग—अलग देख पाना असंभव है। धर्म व्यक्ति के जीवन में प्रेरक की तरह काम करता है तो राष्ट्र सहयोगी की भूमिका में होता है। किसी राष्ट्र के

व्यक्ति, किस सीमा तक अपना विकास कर सकते हैं। यह उस राष्ट्र और राष्ट्र की सरकार के स्वरूप पर निर्भर करता है। व्यक्ति के चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को, राष्ट्र का स्वरूप बहुत हद तक प्रभावित करता है जैसे–भारत जैसे लोक कल्याणकारी राज्य में नागरिकों का व्यक्तित्व, स्वतंत्रता, समानता, न्याय और विश्व बन्धुत्व के भावों से भरा होता है और यही विश्वास सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों को तय करते हैं। लेकिन उत्तर कोरिया जैसे तानाशाही राष्ट्र में व्यक्तियों के चरित्र निर्माण की प्रक्रिया भारतीय समाज से पूरी तरह भिन्न होगी। तानाशाही राष्ट्रों में स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे भावों का वहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों में कोई महत्व नहीं है।

जब बच्चा जन्मता है तो उसे जन्म के साथ क्या मौलिक अधिकार प्राप्त है उसका जीवन स्तर कैसा होगा, उसको मिलने वाली शिक्षा, स्वास्थ्य, इत्यादि भौतिक सुविधाएँ कैसी होगी, यह सभी इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चे ने किस देश में जन्म लिया है। उदाहरण के लिये भारत, अमेरिका, ब्रिटेन जैसे लोकतान्त्रिक राज्यों में जन्मे व्यक्ति को कुछ विशेष अधिकार जन्म से ही प्राप्त होते हैं लेकिन उत्तर कोरिया जैसे तानाशाही, रूस, चीन जैसे–साम्यवादी स्वरूप वाली सरकारों में जन्मे व्यक्ति ऐसे तमाम अधिकारों से वंचित हैं। इसी प्रकार अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जैसे देशो में जन्मा व्यक्ति तमाम भौतिक सुविधाओं के अधिकार के साथ जन्मता है, वहीं अफ्रीका महाद्वीप के गरीब देशों में जन्मे बच्चे को ऐसी भौतिक सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती।

निष्कर्षतः हम यह समझ सकते हैं कि किसी समाज के सांस्कृतिक मूल्य क्या होंगे, समाज में रहने वाले व्यक्तियों की नैतिक अनैतिक अवधारणाएँ क्या होंगी, उचित अनुचित की समझ क्या होगी। यह सभी बातें इस बात पर निर्भर करती हैं कि उस समाज में स्वीकृत धर्म में किन मान्यताओं, विश्वासों और मूल्यों को स्वीकार्यता दी गई है।

इसी प्रकार धर्म से व्यक्ति का राष्ट्र निर्माण के प्रति कर्तव्यबोध निर्धारित होता है और राष्ट्र का स्वरूप यह तय करता है कि व्यक्ति को चरित्र निर्माण के लिए व्यक्तित्व के विकास के लिए मिलने वाले अधिकार और भौतिक संसाधन क्या और कैसे होंगे ?

पूर्णता

हिमालय से एक नदी का उद्गम हुआ और उसका जल पहाड़ियों से नीचे उतारता हुआ मैदान में आया। एक व्यक्ति इस प्रक्रिया का बड़ी गंभीरता से अध्ययन कर रहा था। जल बढ़ता रहा, उसमें अनेक जल–नद आकर मिले। उन्होंने भी नदी का रूप ले लिया। नदी बहती चली गई और अंत में सागर में समाहित हो गई। देखने वाले व्यक्ति ने इस मंजिल को जल की मूर्खता माना। हिमालय के उच्च शिखर को छोड़कर अनेक कष्ट–कठिनाइयाँ उठाकर खारे जल में मिलना मूर्खता नहीं तो और क्या है ? नदी ने व्यक्ति को देखा तो मनःस्थिति समझ गई। बोली–"तुम हमारी यात्रा का मर्म नहीं समझ सके। हिमालय कितना भी ऊँचा क्यों न हो, वह पूर्ण नहीं है। पूर्णता तो गहराई में है, जहाँ सारी कामनाएँ निःशेष हो जाती हैं। मैं हिमालय जैसी महान ऊँचाई की आत्मा हूँ, जो सागर की गहराई में पूर्णता पाने के लिए निकली थी। निरंतर चलते रहकर ही मैंने अपने लक्ष्य को पाया है।"

अटल जयंती (25 दिसंबर) पर आयोजित
निबंध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त निबंध

नया युग, नयी चुनौतियां : रोजगार की नयी संभावनाऐं

प्रगति मिश्रा
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

चुनौतियों एवं रोजगार के लिये प्रतीक्षा नहीं प्रयास कीजिए।
"भारत को विश्व गुरु बनाना है,
अतः भारत को आत्मनिर्भर बनाना है"

हम सभी लोग एक ऐसे समय से गुजर चुके हैं या अभी भी गुजर रहे हैं जो विश्व में किसी के लिये भी एक बड़ी चुनौती है।

नये युग से तात्पर्य है कि नया प्रारम्भ, कठिनाई से निपटना, चुनौतियों का सामना करना और अपने लिये नया रास्ता निकालना।

रोजगार की नयी संभावनाएं

आत्मनिर्भर भारत VOCAL FOR LOCAL

आत्मनिर्भर भारत एक ऐसी योजना है जो एक वैश्विक स्तर पर उभरकर आयी है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस योजना का शुभारंभ किया। यह कोविड–19 के समय में प्रारम्भ की गयी सबसे बड़ी योजना है। यह योजना भारत को इस संकट की स्थिति से उबारने का उपाय है। यह हमारे आर्थिक कन्धों को मजबूत करने का माध्यम है। इस योजना में 20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज स्वीकृत है, जिससे मजदूर वर्ग को लाभ मिलेगा।

आत्मनिर्भर भारत का उद्देश्य

इसका उद्देश्य MSME के अन्तर्गत आने वाले सभी वर्गों को लाभान्वित करना है। यह Law, labour, Liquidity पर आधारित है। यह युवाओं को बेरोजगारी के दलदल से निकालने का माध्यम है। यह सुनहरा अवसर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा तब दिया गया जब प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति वैश्विक महामारी से जूझ रहा था, यह पैकेज भारतवासियों को खुद के पैरों पर खड़ा होने का एक माध्यम है। इसके अन्तर्गत हम अपनी स्वदेशी वस्तुओं को वैश्विक स्तर पर ले जाये एवं आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करें–

We know that we use local but this time we make local at a vocal state

हमें अपनी स्वदेशी वस्तुओं एवं उत्पादों को वैश्विक स्तर पर पहुंचाना, उसको एक नई पहचान दिलाना और उस पहचान द्वारा GDP को मजबूत करना। यह 20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज भारत की

GDP को एक नई दिशा प्रदान करता है और वैश्विक स्तर पर भारत को एक 'स्वतंत्र भारत' के रूप में प्रदर्शित करता है।

हम नर है, नारायण नहीं, इसीलिये हमें अपने देश के प्रति पूरे (समर्पित) मन से सजग रहना चाहिये।

आत्मनिर्भर भारत का उद्देश्य एवं महत्व जन–जन जानता है। यह होना आवश्यक है कि व्यक्ति अपने राष्ट्र की बेहतर छवि बनाने के लिये एक महत्वपूर्ण योगदान दें।

आत्मनिर्भर का अर्थ है कि स्वयं पर स्वयं की निर्भरता। हमें अपनी परिस्थितियों को समझना होगा उनके लिये अवसरों की प्रतीक्षा नहीं, प्रयास करना होगा।

कोरोना काल एक नया युग, नयी चुनौती या रोजगार का नया अवसर

हम जानते हैं कि Covid-19 ने सभी देशों के भौतिक ढाँचे को परिवर्तित कर दिया है। साथ ही साथ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके को भी बदल दिया है। इस महामारी ने जीवन जीने का तरीका, साथ ही एक नया तरीका व अनेक प्रकार की समस्याओं से निपटने का सलीका भी सिखाया है।

अगर सकारात्मकता को आधार माने तो कोविड–19 की परिस्थितियों के चलते एक नया भारत सामने आया है जो रोजगार बनाना भी जानता है और उसे करना भी जानता है। हम अपने इस कठिन समय से निपटने के लिये हर माध्यम से तैयार हैं, प्रारम्भ में यह एक भय की भाँति सभी के मन मस्तिष्क में बैठ गयी थी।

अतः हम इसे एक नयी चुनौती, नया युग एवं अन्य और भी संज्ञायें दे सकते हैं।

ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा, शिक्षाक्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौती :–

ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा देना हमारे देश की उन समस्याओं से एक है जिनका निवारण कम समय में नहीं हो सकता। हमें एक नया ढांचा, नया तरीका चाहिये जिससे हम इसकी विकृतियों को दूर कर सकें। हमारे समाज में समझना एवं उनमें सुधार लाना असम्भव प्रयास के समान है, लेकिन हमें अपने इस स्तर को सुधारने के लिये सजग प्रयास करने होंगे।

पुरुषार्थ

दक्षिण अफ्रीका के एक अश्वेत परिवार में जन्मे लड़के का नाम था–बुकर टी0 वाशिंगटन। उन दिनों काले दासों को सोलह–सोलह घंटे काम करना पड़ता था तथा खाने और पहनने की कोई सुविधा न थी। बच्चे 8–10 वर्ष के होते ही काम में जोत दिए जाते। इन्हीं दुर्भाग्यग्रस्तों में बुकर भी थ। बच्चे की इच्छा पढ़ने की हुई। अश्वेत लोगों के लिए 590 मील दूर कनवा नगर में एक स्कूल था। पैसा नहीं था। इतनी दूर कैसे जाया जाए। वह रास्ते में मेहनत, मजूरी करता, पैदल चलता वहाँ तक जा पहुँचा। बड़ी कठिनाई से प्रवेश मिला, पर उसने पढ़ने में उतना ही श्रम किया, जितना मालिकों के यहाँ करना पड़ता था। ग्रेजुएट होने के उपांत उसने नौकरी की इच्छा नहीं की, वरन अपने समुदाय के लिए पढ़ाई की व्यवस्था करने में जुट गया। उसने एक–एक पैसा करके धन–संग्रह किया और एक स्कूल की स्थापना की। आज उसके द्वारा स्थापित स्कूल में सैकड़ों विद्यार्थी पढ़ते हैं। यह सारा प्रयास उस अकेले के पुरुषार्थ का ही प्रतिफल है।

अटल जयंती (25 दिसंबर) पर आयोजित
निबंध लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त निबंध
व्यक्ति के जीवन में धर्म एवं राष्ट्र की भूमिका

नेहा
बी.ए., (तृतीय वर्ष)

व्यक्ति के जीवन में धर्म एवं राष्ट्र महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। धर्म व राष्ट्र एक दूसरे के पूरक है। धर्म के बिना किसी भी राष्ट्र का कोई अस्तित्व नहीं है तथा राष्ट्र के बिना व्यक्ति के जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है।

राष्ट्र व्यक्ति के जीवन का भरण पोषण करता है तथा उन्नति का मार्ग प्रदर्शित करता है तथा धर्म व्यक्ति को सुसंस्कृत, ज्ञानी, सभ्य तथा नैतिकतावादी बनाता है।

भारतरत्न श्री अटल बिहारी बाजपेयी धर्म तथा राष्ट्र को बहुत महत्व देते थे। धर्म तथा राष्ट्र के लिए उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये थे–

"मैं हिंदू परम्परा पर गर्व महसूस करता हूँ लेकिन मुझे भारतीय परम्परा पर ज्यादा गर्व है"। राष्ट्र को पूज्यनीय मानते हुए उन्होने कहा था–

"देश एक मंदिर है, हम पुजारी हैं, राष्ट्रदेव की सेवा में हमें स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए"

व्यक्ति के जीवन में धर्म की भूमिका–

धर्म एक पवित्र परिकल्पना है। धर्म व्यक्ति के जीवन में अतिमहत्वपूर्ण स्थान रखता है। धर्म व्यक्ति को नैतिक मूल्यों की ओर प्रेरित करता है जो उसके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का निर्वहन करते हैं।

धर्म व्यक्ति को नैतिकता की भावना की ओर ले जाता है, जो व्यक्ति को सही आचरण करने की शिक्षा तथा उसे उपयुक्त मार्ग का चयन करने के लिए प्रेरित करता है।

(i) सांस्कृतिक पहचान– प्रत्येक राष्ट्र की अपनी परम्परायें, त्यौहार तथा रीति–रिवाज होते हैं जो उस राष्ट्र के धर्म के महत्व को प्रदर्शित करते हैं किसी भी धर्म की परम्पराएं ही उसकी मूर्त तथा अमूर्त सभ्यताओं को जीवित रखती हैं।

इसी विचार को प्रदर्शित करती हुई मा. अटल बिहारी बाजपेयी जी की कुछ पंक्तियाँ निम्नवत् हैं–

"सभ्यता कलेवर है, संस्कृति उसका अंतरंग
सभ्यता स्थूल है, संस्कृति सूक्ष्म
सभ्यता समय के साथ बदलती है, किन्तु
संस्कृति अधिक स्थायी है"।

(ii) आध्यात्मिकता तथा लोककल्याण–प्रत्येक धर्म अपने दर्शन को बढ़ावा देता है। प्रत्येक धर्म में लोककल्याणकारी हित होता है।

उदाहरण के लिए सनातन धर्म में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (पूरी दुनिया एक परिवार है) तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी सुखी हों) जैसे विचार मानव में प्रेम, मानवता, सहानुभूति के भावों को जाग्रत करते हैं।

व्यक्ति के जीवन में राष्ट्र का महत्व

राष्ट्र एक ही सभ्यता, विभिन्न धर्मों तथा रीतिरिवाजों में बंधे हुए लोगों का संघ है जो व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(i) राजनीतिक पहलू– प्रत्येक राष्ट्र का एक राजनीतिक पहलू होता है। हम भारत के राजनीतिक पहलू पर निर्भर होकर कह सकते हैं कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है।

भारत विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं तथा धर्मों का संघ होते हुए भी संविधान निर्माण के समय से ही 'धर्मनिरपेक्षता' के परिपेक्ष्य में मत रखता है (भारतीय संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्षता को पुनः परिभाषित करते हुए 42वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 के तहत इसमें 'पंथनिरपेक्षता' शब्द को जोड़ा गया है।

भारतरत्न अटल बिहारी बाजपेयी जी ने भारत की 'धर्मनिरपेक्ष' होने की प्रशंसा करते हुए कहा था–"अगर भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र नहीं है तो भारत, भारत ही नहीं"।

(ii) सकारात्मक दिशा तथा मार्गदर्शक–राष्ट्र मानव को उन्नति के मार्ग की ओर ले जाता है तथा सकारात्मक दिशा की ओर मार्गदर्शक का कार्य करता है तथा हमें विश्व कल्याण (दूसरों का कल्याण) की भावना की ओर अग्रसर करता है।

भारतीय समाज का एक उद्घोष है जो पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी की पंक्तियों में प्रदर्शित है–

"हमें केवल स्वयं के नहीं बल्कि, विश्व की शांति, विकास तथा कल्याण में विश्वास रखना चाहिए"

सभी राष्ट्रों में अपना–अपना धर्म होता है तथा सभी की मान्यतायें अलग है किन्तु जो राष्ट्र धर्मनिरपेक्षता की भावना रखते हैं वो सर्वोत्तम हैं। कई बार व्यक्ति धर्मों के जरिये हिंसा करने लगते हैं जो कि एक राष्ट्र तथा व्यक्ति के जीवन के लिए बिल्कुल भी हितकारी नहीं है। भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) से अब तक कई साम्प्रदायिक दंगों ने त्रस्त किया है। भारत–पाकिस्तान विभाजन (15 अगस्त 1947) में हुई हिंसा में लगभग 10 लाख लोगों ने अपना जीवन गँवा दिया तथा कई परिवारों को अपना निवास स्थान त्यागना पड़ा। जबकि भारतीय संविधान के भाग–3 में वर्णित मौलिक अधिकारों में धार्मिक स्वतंत्रता (अनु0 25–28) की व्यवस्था है तब भी भारत में साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं।

व्यक्ति को एकता व भाईचारे की भावनाओं को समझना चाहिए व उनका सम्मान करना चाहिए।

"अगर मुझसे कोई पूछे कि आदर्श राष्ट्र कैसा होना चाहिए तो मेरा आदर्श राष्ट्र ऐसा होगा जो स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे की भावना रखता होगा।"

–डॉ. भीमराव अम्बेडकर

जनपद एवं मण्डल स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त निबंध

ब्राज़ीलिया डिक्लेरेशन के दृष्टिगत सड़क दुर्घटनाओं में 2020 तक त्वरित कमी लाने हेतु उठाए जाने वाले कदम

वागीशा खरे
एम.ए. (प्रथम वर्ष, भूगोल विभाग)

सड़क सुरक्षा को एक गंभीर विषय मानते हुए वर्ष 2015 में भारत ने ब्राज़ीलिया डिक्लेरेशन पर हस्ताक्षर किये थे, जिसका उद्देश्य है वर्ष 2020 तक सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु–दर को आधा करना है। इसमें मुख्य रूप से 5 क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया है–सुरक्षित वाहन, सड़क उपयोगकर्ताओं का व्यवहार, सुरक्षित इंफ्रास्ट्रक्चर, दुर्घटना के बाद प्रतिक्रिया एवं सड़क सुरक्षा प्रबंधन ।

भारत में शिक्षा, प्रवर्तन, इंजीनियरिंग और आपात देखभाल के स्तर पर सुदृढ़ नीति अपनाई गई है। भारत सरकार द्वारा मोटर वाहन संशोधन अधिनियम, 2019 लागू किया जाना एक सकारात्मक प्रयास है। 'वाहन' और 'सारथी' के नाम से दो ऐप शुरु किये गए हैं ताकि वाहन पंजीकरण और लाइसेंस जारी करने में पारदर्शिता बनी रहे।

ब्राजीलिया डिक्लेरेशन का प्रथम क्षेत्र है सुरक्षित वाहन। इसके अंतर्गत यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सड़कों पर चलने वाले सभी वाहन तकनीकी रूप से उन्नत एवं सुरक्षा मानकों के अनुरूप हों। इसी क्रम में द्वितीय क्षेत्र हैं सड़क उपयोगकर्ताओं का व्यवहार। सड़क दुर्घटनाओं के सभी कारणों का केन्द्र बिन्दू यह है कि लोग यातायात नियमों का पालन नहीं करते और इसी का कारण पता करने के लिए 15–17 मई, 2013 में चीन में सड़क सुरक्षा पर चार महाद्वीपों का सम्मेलन हुआ, जिसके निष्कर्ष रूप में तीन कारण सामने आए–व्यक्ति की मनोवृत्ति, स्वयं के बनाए गए मानक एवं समाज में मान्य व्यवहार । कुछ लोग समय के अभाव के कारण नियम तोड़ते हैं तो कुछ लोगों को हेलमेट पहनना असुविधाजनक लगता है, परंतु सबसे बड़ी बात तो यह है कि नियमों का उल्लंघन करके दबंगई दिखाने में लोग अपनी शान समझते हैं। ये उनकी आदत बन गयी है। इस आदत को बदलने के लिए आवश्यकता है कि कड़ी निगरानी और पारदर्शिता एक लम्बे समय तक अनवरत् चलती रहे। इसी दिशा में सरकार द्वारा अर्थदण्ड बढ़ाया जाना सफल सिद्ध हो रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के अनुसार विश्व में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में से 77.8% दुर्घटनाएँ वाहन चालकों की गलती से होती हैं। इसलिए जनपद स्तर पर ऐसे संस्थान खोले जाएँ जहाँ लोगों को वाहन चलाने का सही प्रशिक्षण मिल सके। जब लोग कुशलतापूर्वक वाहन चलाएँगे, तो दुर्घटनाएँ कम होंगी।

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण है आक्रोश। घर या काम के तनाव के कारण व्यक्ति को क्रोध आ जाता है और इस क्रोध को शांत करने के लिए वह तीव्र गति से वाहन चलाता है जिससे दुर्घटनाएँ होती हैं। हमें इस कारण को समाप्त करना होगा।

अभी ड्राइविंग लाइसेंस बनाने के लिए लिखित और व्यावहारिक परीक्षा होती है। इसमें एक मनोवैज्ञानिक परीक्षा भी सम्मिलित होनी चाहिए जिससे तनाव के प्रति सहिष्णुता का मूल्याँकन किया जा सके। यदि व्यक्ति क्रोधी प्रवृत्ति का पाया जाए तो उसका लाइसेंस नहीं बनना चाहिए। ऐसे में फिर जिनके पास लाइसेंस होंगे, वे नियमों का पालन करेंगे और दुर्घटनाएँ कम होंगी। यातायात नियम तोड़ने वालों के साथ हमें मनोवैज्ञानिक तरीके से ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे वे लज्जित अनुभव करें। सड़क सुरक्षा मात्र वाहन चालकों के लिए नहीं, अपितु पदयात्रियों के लिए भी है। दुर्घटनाओं से बचने के लिए वे भी नियमों का पालन करें। हमें जागरुकता फैलाने के तरीकों को अधिक रुचिकर बनाना होगा। स्नातक स्तर पर सभी विभागों में सड़क सुरक्षा को एक अनिवार्य विषय बनाया जाना चाहिए जिससे युवाओं में उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो सके।

ब्राजीलिया डिक्लेरेशन का तृतीय क्षेत्र है सुरक्षित इंफ्रास्ट्रक्चर। इसके लिए हमें आधुनिक सड़क संकेतन प्रणाली जैसी नवीन तकनीकी का व्यापक रूप से प्रयोग करना होगा। हमें सड़क दुर्घटनाओं के काले धब्बों (Black Spots) को पहचानकर उनका निराकरण करना होगा। इसी क्रम में चतुर्थ क्षेत्र है दुर्घटना के बाद प्रतिक्रिया। इसलिए राजमार्गों पर जितने भी प्रस्तावित ट्रामा सेंटर्स (trouma Centrers) हैं, उनका निर्माण शीघ्र पूरा करके उन्हें शुरु कराया जाना चाहिए। हमें लोगों का प्राथमिक उपचार की जानकारी देनी होगी। दुर्घटना के मात्र साक्षी न बनें, उसमें घायल लोगों के सहायक बनें।

ब्राजीलिया डिक्लेरेशन का पंचम और अंतिम क्षेत्र है सड़क सुरक्षा प्रबंधन। इसके लिए नई नीतियाँ बनाने की अपेक्षा जो नीतियाँ हैं, उनके उचित कार्यान्वयन पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। सभी मान्य उपायों को एक साथ सभी स्थानों पर पारदर्शिता के साथ लम्बे समय तक लागू किया जाए, तभी इनके अपेक्षित सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे।

वाहन को तीव्र गति से न चलाएँ, गंतव्य को अंतिम न बनाएँ ।
यातायात नियमों का करें सम्मान, न होगी दुर्घटना, न कोई परेशान।।

शुक्रिया

हजरत उमर तब खलीफा थे। उन्होंने अपने मंत्रियों को प्रजा का काम तुरंत करने की आज्ञा दी हुई थी। एक दिन एक आदमी इशरत नामक मंत्री के घर शुक्रवार की मध्यरात्रि को पहुँचा। दरवाजा खटखटाने पर मंत्री ने अंदर से कह दिया–"मैं मजबूर हूँ, अभी बाहर नहीं आ सकता। कृपया दूसरे दिन कभी भी आ जाइए।" उस व्यक्ति ने दूसरे दिन हजरत उमर से मंत्री की शिकायत की। खलीफा ने सुना तो नाराज होकर इशरत से ऐसा करने का कारण पूछा। इशरत ने कहा–"मेरी कुछ मजबूरी थी, वह मेरा राज है, कृपया उसे मुझ तक ही रहने दीजिए।" परंतु खलीफा ने तब भी कारण जानने की जिद की।

तब इशरत ने कहा–"हुजूर! सप्ताह के छह दिन मैं कार्य में बहुत व्यस्त रहता हूँ। शुक्रवार की रात को समय निकालता हूँ। मेरे पास कपड़ों का एक ही जोड़ा है, उसे मैं शुक्रवार की रात धोता हूँ, उस हालत में मैं बाहर कैसे आ सकता हूँ ? फिर इबादत भी करनी होती है, अन्य दिनों उसके लिए भी समय नहीं मिलता। मेरा राज बस, यही है।" हजरत उमर ने सुना तो शुक्रिया अदा किया कि उनके राज्य में ऐसे मंत्री भी मौजूद हैं, जो अपनी जिम्मेदारी बखूबी समझते हैं। वे न तो जमात के प्रति गाफिल हैं और न खुदा को भूलते हैं, बल्कि सरकारी खजाने का एक पैसा लेना भी गुनाह समझते हैं।

CONSERVATION OF WETLANDS AN INTRODUCTION

Dr. Vijay Kumar Yadav
Asso. Prof., Deptt. of Botany

Water is the precious gift of nature. It is most crucial for sustaining life and it is required in almost all the activities of human beings for drinking, municipal use, for irrigation to meet the growing food and fiber needs, for industries, power generation, navigation and recreation. Water has been described as the elixir of life. About 97.67% of the water existing on the earth distributed in oceans and of the 2.4% of fresh water only less than 1% is available for human consumption and other activities. This freshwater is found in lakes, rivers, ponds streams etc. Wetlands make integral part of all these fresh water bodies as well as marine areas. They are transitional zones between the terrestrial and aquatic habitat having characteristics of both the environments. Wetlands encompass approximately 9% of the total land surface of the earth and up to the billion people are dependent on the wetlands for the supply of drinking water.

Among the services provided by wetlands, ground water recharging and reduction of intensity of floods, are the most important services for human livelihood and existence of a large number of organism. They are source of fish, fodder and fiber. They filter out toxic substances coming from the adjacent areas and act as a sink for inorganic substances, hence they have been termed as "Kidneys of landscape" Ecological importance of wetlands is undoubted, yet these are threatened due to population increase urbanization, agriculture fragmentation, illegal capturing, uncontrolled rainfall, over exploitation, poor management and climate changes.

There is urgent need to protect consolidate and increase the wetland resources with the help of awareness programmes to educate the students and general public about the importance of wetlands for their goods and services to masses should be done.

BE A STUDENT

Dr. Vijay Kumar Chaudhary
Asst. Prof. & Incharge
Chemistry Deptt.

There is a saying 'Student life is the best'. This world is a school where everyone is a student. One has something to learn every day. If we think that we are students, there is no scope for ego to develop. There is always curiosity to know more and more and understand the truth. One is always turned to gain knowledge from each and every situation.

There are ants, spiders, crows and so on which teach good lessons of life. A person becomes angry and picks a quarrel where he provides us with an opportunity to learn new lessons of life. A child smiles and a powerful message is conveyed to us. We get the right education when we educate ourselves as and when we encounter a new situation. Life is a constant educative process. Not only that we learn from others, but we also learn ourselves many lessons on life. When someone behaves in a bad way, we get a feeling of discomfort, where we can ask ourselves as to how we become unhappy.

Somewhere we are supposed to be keeping silece, somewhere we are supposed to be responding instantly, somewhere we need not respond at all and so on and so forth. This process needs to be learnt and experienced and understood. A person with a student mind set is the one who always learns new facts, aspects and levels of life without any exaggeration or surprises. It is said that when we stop learning we start aging.

कलह

एक सेठ बहुत धनी था। उसके कई लड़के भी थे। परिवार तो बहुत बड़ा हो गया, परंतु साथ ही सबमें मनोमालिन्य, द्वेष एवं कलह रहने लगा। एक रात को लक्ष्मी जी ने सेठ को सपना दिया कि मैं अब तुम्हारे घर से जा रही हूँ। पर चाहो तो चलते समय कोई एक वरदान माँग लो। सेठ ने कहा–"भगवती आप प्रसन्न हैं तो मेरे घर का कलह दूर कर दें, आप भले ही चली जाएँ।"

लक्ष्मी जी ने कहा–"मेरे जाने का कारण ही गृहकलह था। जिन घरों में परस्पर द्वेष रहता है, मैं वहाँ नहीं रहती। अब जब कि तुमने कलह दूर करने का वरदान माँग लिया और सब लोग शांतिपूर्वक रहोगे, तब तो मुझे भी यहीं ठहरना पड़ेगा। सुमति वाले घरों को छोड़कर मैं कभी बाहर नहीं जाती।"

जिन परिवारों में व्यक्ति आपस में झगड़ा करते हैं,मिल–जुलकर नहीं रहते, वहाँ गरीबी आ जाती है। अतः प्रेमपूर्वक रहना चाहिए।

CORONA

Pratima Purwar
M.A. (F) English

WHAT CORONA IS –

"Corona" is a Latin word for "crown", and the virus is named such bcause of having a shape like a crown. The 2019 CORONA VIRUS is the disease of the family of CORONA VIRUSES. Corona viruses are made up of one strip of RNA, that is surrounded by a membrane with little spike proteins. These spikes are attached to the blood cells of the individual by getting entry commonly through nostrils and mouth. The disease caused by SARS-Co V-2 is characterized by coughing, fever, and respiratory problem as symptoms of of SARS. The name COVID-19 is officially bestowed upon the disease by the WHO. Corona viruses are divided into four groups called genera:alpha, beta, gamma, and delta: or Gamma and delta corona viruses mostly infect birds, while alpha and beta mostly attack mammals.

HISTORY OF COVID-19 –

The first corona virus was discovered in chickens in the 1930s and the first human corona viruses were identified in the 1960s. Till now, seven corona viruses own the ability to inflict humans. The corona viruses that cause mild to moderate disease in humans are called. 229E,Co43, NL63, and HKU1. The rest corona viruses are SARS-CoV, MERS-CoV, and SARS-CoV2. SARS, caused by SARS-CoV was first detected in November 2002 in Southern China. SARS-CoV2 is a novel corona virus identified as the cause of corona virus disease 2019 (COVID-19) that began in Wuhan, China in late 2019 and spread worldwise.

ITS EMERGENCE AS A PANDEMIC –

Previously, the China National Health Commission reported the details of the first 17 deaths up to Jan 2020. A study ascertained that the duration from the first symptom to death is 14days and the virus affects people belonging to 70 years old or above category than those with ages below 70 years old. On 11 March, W.H.O. declared the COVID 19 outbreak a global pandemic. WHO director-General Dr. Tedros said on this media briefing-

" Pandemic is not a word to use ligtly or carelessly. It is a word that, if misused, can cause unreasonable fear, or unjustified acceptance that the fight is over, leading to unnecessary suffering and death."

ITS GLOBAL IMPACT-

Industrialists and economists agree that the pandemic is likely to absorb cash in the system. Rising unemployment is going to intensify pressure on governments and central banks to speed the delivery of programs and Failure would risk an unexpected deeper recession. The unemployment rate had soared to 20.34 percent from 7.55 percent as the Centre for Monitoring Indian Economy reported on April 20. Economist Pronab Sen said that the pandemic is likely to disturb the nations' supply chain of essential goods. ILO in its report titled **" ILO Monitor 2nd edition: COVID-19 and the world of work"** noted that "about 400 million people working in the informal economy in India are at risk of falling deeper into poverty due to the corona virus crisis."The IMF presented the estimate of the global economy growing at-3% in 2020, which is worse than ever occurred. Economics of the US,

Japan, the UK, Germany, France, Italy, and Spain are forecasted to contract respectively by 5.9%, 5.2%, 6.5%, 7%, 7.2%, 9.1%, and 8% this year.

A pause in the global moving life: less consumption of oil used in transporation, a halt in demands of factory metals due to their closure, less consumption of various food and beverages, etc. have affected the industrial activity very severely. As per an estimate by the WEF (WORLD ECONOMIC FORUM), supporting SMEs and larger entrepreneurs is crucial for maintaing employment and economical stability.

Global war against Covid-19 –

To cope up with the contagious infection, the government of many countries announced lockdown in their respective countries to tackle the situation. A lockdown is a requirement for people to stay where they are usually due to specific risks to themselves or to others if they can move freely. Corona virus has locked down approximately 4 billion people in the world. By early April 2020, 3.9 billion people worldwide were under some form of lockdown. The suspects are isolated and quarantined by the authorities. Isolation separates sick people with a contagious disease from people who are not sick. Quarantine separates and restricts the movement of people who were exposed to a contagious disease to see if they become sick. The needy were provided with essential goods by home delivery service by our government and by volunteers as well. Bharti Gitay, a Psychologist says in this context-

"Social distancing is an important response to the pandemic, but we need to ensure that it does not become social isolation or alienation, particularly for the vulnerable groups of our society."

DEATH RATE OF VARIOUS COUNTRIES WITH HIGHLIGHTS OF INDIA –

According to the latest estimates of 17 June by W.H.O., there were globally 8,061,550 confirmed cases and 440,290 deaths. There were 20,981,06 confirmed cases in U.S., 5,53,301 in RUSSIA, 2,37,500 in ITALY. According to the Ministry of Health and Family Welfare, the number of confirmed cases in the INDIA in mid June stood 3.43 lakh and the death has increased to 9,900 while 1,80,013 people have been cured well.

MISERABLE PLIGHT OF THE DOWN TRODDENS OF INDIA –

The prolonged lockdown has increased the challenges of the poor and penniless migrant. The tragic deaths of workers vividly indicate that their hardships and welfare were not considered at the time of the hasty lockdown announcement. The Modi government's economic assistance of 500 rupees amid the crisis does not adequately meet the needs of many poor. Reliance Foundations 'Mission Anna Seva' provides over 3 crore meals to marginalized communities and frontline workers facing hardships during the lockdown. The renowned Bollywood star Sharukh Khan has said in this context -"To best this worldwide pandemic, the world has to, must come together."The business giants of the country such as; Tata Trusts, Hyundai Motor India, Reliance Foundation Dabur Group, Infosys, the Mahindra Group, TVS Motor Company, OYO Hotel, Paytm, and Vivo India, etc. offered their benevolent hands to the country.

MUTUAL HELP BY COUNTRIES –

Chinese billionaire, Alibaba founder JACK Ma, being sympathetic helped every country by shipping the medical equipment to fight the novel corona virus and donated emergency aids to Afghanistan, Bangladesh, Cambodia, Nepa Pakistan & Sri Lanka in Asia and to 54 African countries. Google chief Sundar Pichai, Chinese Smartphone manufacturer, the South Korean automaker, the British MNC, and many others served humanitarian services to the world in their way.

LOCAL RESPONSE–

Local initiatives have also been important in developing a shared sense of belonging. Each district is being controlled by the respective authority according to the danger in the respective areas. Some areas are completely sealed while some areas are permitted to be opened on alternate days. Many volunteer hands came forth in serving free service to the needy by providing them food like basic things. Well known film star Sonu Sood helped migrants reaching their towns and other celebrities also contributed in PM contingency fund.And to engage people as part of Corona Mein Kuch Karo Na many quizzes and competitions are organised, for example Jharkhand announced a stay-at-home talent competions. This kind of many initiatives have taken place in our country in various places.

PREVENTIVE STEPS FOR CORONA AND PLANS FOR ECONOMIC GROWTH IN INDIA –

Amitabh Kant, C.E.O. of Niti Aayog admitted about the initiative of launching Aarogya Setu app :-

"Aarogya Setu, India's app to fight a with COVID-19, has reached 50 million users in just 13 days-the fastest ever globally for an app."

Scientists have said that the nobel corona virus will be a part of our lives for a very long time so we should maintain social distancing, and follow the routine as usual with a habit:to use alcohol-based cleanser or soap to wash hands, of avoiding touching eyes, nose, and mouth, and maintain at least 1-meter distance from others, to cover your mouth and nose with your bent elbow or tissue when you cough or sneeze. And if you still feel difficulty in breathing, you should seek medical attention.

Credit rating agency Moody forecasted that the economy of INDIA will grow at zero percent in 2020-21. The prime minister announced a complete package worth Rs. 20 lakh crore to help every section including workers, farmers, middle class, and the industrial units. Prime Minister Narendra Modi addressd to the nation to be "vocal about local" in making the country "self-reliant". Lauding Prime Minister's appeal, Finance Minister Nirmala Sitharaman urged to make "local our mantra". As per the Brooking India report, reducing dependency on foreign countries, India has speeded up the production of Covid-19 protective equipment. The centre said out of 2.22 crore PPE, 1.42 crore will be bought from domestic manufactures and the rest will be imported. The secretary in the department of pharmaceutical said. :-

"Earlier, there was no domestic manufacturing of PPE in the country and almost all of them were imported. Now, we have 111 indigenous manifactures. PPE production capacity has increased so much that it has become a Rs 7,000-crore industry in India, the biggest after China."

Thus, it is obvious that the virus seriously poses a global challenge and drives the people to survive with fear. This fear caused chaos among several entities; the poor, the Economy, the mental health of the bread earners of families, and the field of education and other affected severely. India is the 4th worst hit-nation by the pandemic after the US, Brazil, and Russia. However, the relaxation has been given in the atmosphere of approx 10,000 daily confirmed cases and people, now are coming out to meet their demands, and to contribute to the economy, stress is still on. The 6th Meeting of P.M. Modi with state authorities has taken place to ensure public safety along with ongoing economic activities. However, the problem is very severe but with some sincere safety measures and patience, this can also be overcome.

Short Story

Nayi Taleem

Jyoti Kushwaha
Research Scholar (English)

Hariom was enrolled in Class 5 of a primary school of block Chandpur district Bijnor, where Jaya was the headmistress and class teacher of his class. In the class he sat with the other students but always close to the door. When the session started, for a week, Jaya did not notice his eccentricities but after a week her observation helped her in noticing that Hariom would leave the class after the attendance and come back before the school would get over. Jaya asked him the reason for his absence from class. He didn't say a word but kept staring at her. Jaya scolded him for his vindictiveness but he continued to bunk. Jaya asked the other student about his whereabouts, they informed her that his father is dead and he works on a chaat barrow for two rupees a day to support his mother. Jaya was shocked to know the truth and sad that a child so young has to earn his livelihood but resolved to make things better in his life. Next day after the attendance, Jaya told him not to miss his classes for just a meager amount of two rupees instead she offered him to sell boiled chanas during recess time in the school. For one year, she carried 5 kgs of boiled chanas with chopped onion, green chilies and lemons to the school, which Hariom sold during recess. The other students helped him, by buying from him. He would earn hundred rupees sometimes more than that each day. His studies were not affected. Jaya was happy seeing him happy and enjoying both work and studies. Hariom would reciprocate his love and respect by accompanying her to the market each day after school. Jaya had to walk two kilometers from the school to reach the market from where she would get further conveyance.

One day, Jaya was going back home after school when she stopped at a stationary shop in the market, to buy a chalk box, She took out her purse to give the money but to her horror there was no money in it. Little Hariom understood her condition and without wasting a second padid the shopkeeper. Tears welled her eyes, she took him in her arms. Hariom said, "You are not a teacher but a mother to me" and saying this he gave her the remaining ninety rupees for conveyance. All through her way bakc home she kept thinking of him and his generosity. Kids of his age fight over their Piggy banks and he was mature enough to finance his teacher's Ghar waapasi. This experience made her realize that "Teaching is the process of attending to student's needs, experiences and feelings, and intervening so that they learn particular things, and go beyond the given."

First Prize winner Essay in the 'Speech Contest' organized by Power Grid Corporation of India Ait (Jalaun) (A Gvoernment Enterprise)

INTEGRITY- A WAY OF LIFE

Vageesha Khare
M.A. I (Geography)

Way of life or lifestyle is the unique pattern of behaviour or the manner in which a person lives. There are basically two ways of life positive and negative. Living our life with value and morals is the positive way and the other way round is negative. When we talk about values, integrity or honesty is the simplest and the best way to live a fulfilling life.

When we talk about honesty, the first thing that comes in anyone's mind is honesty in financial matters, but it is not so. Honesty is hot limited to just mothers of money, rather it is much more wider, broader and universal. Honesty is a virtue which can be applied everywhere, be it academic life, professional life, personal life or the daily routine life. Honesty is multi dimensional. It is related to truthfulness, sincerity, dutifuness, satisfaction and many others. If we are honest, other virtues will automatically follow.

If we are dishonest, we end up weaving a web of lies to hid just one lie. But if we are honest, we don't need to remember what we said because it is the truth and will always remain the same. If we want to be honest with others, first we need to be honest with ourselves. We lie to ourselves unknowingly this happens because of the lack of self awareness. We should become the observers of ourselves. As we become were honest and aware, we become more responsible for our choice. Understanding our self deception is the most effective way to live a fulfilling life, because when we admit who we really are, we have the opportunity to change.

Being honest with self is very much required because a person can run away from everything else in the world but not his own self. We can't be honest with others if we deceive ourselves, but if we are honest with ourselves, we would never decive other. We should follow the ideal code of life and adhere to the 'simple living, high thinking' view.

People become dishonest in order to earn more money in a hop of living a luxurious life and fulfilling the needs of their families in a better way, but we must remember that money earned in a wrong way is utilized in a wrong way. It never keeps the family together, instead it separates the members and destroys the family.

Dishonesty is like a snowball. The more it rolls on in snow. the bigger it becomes in size. But when the sunshine of honesty falls on it, it melts away. Honesty promotes oneness, sharpens our perception and allow us to see everything around us with clarity.

According to the study named 'Science of Honesty by American Psychological Association, telling the truth when tempted to lie can significantly improve a person's mental and physical health. This research answer the question that why we should be honest.

If we abide by the rules, adhere to moral values and build a positive perspective, then honest will become our way of life. An honest way of life provides a vision for the natural and real way of life. But being honest does not mean being innocent. we should be clever enough to prevent and kind of dishonest from happening to us. Also we should never be proud of our honest.

We pray to God two or three times a day which is very good. But we can extend it to 24 hours by seeing God's reflection in every human being and by considering every work as the work of God. If this happens honesty will automatically become our way of life. We won't need to put any extra effort to be honest. It will happen effortlessly and will be added in our personality.

The ultimate goal of human life is to attain salvation and honesty is the only way to reach it.

National Education Policy-2020 for Self-Reliant India

Dr. Shailja Gupta
Asso. Prof., Dept. of Teacher Education

National Education Policy 2020 is like a blueprint for self-reliant India. With an eye on the future, the NEP 2020, speaks to all aspects of education during our times. This policy is in many ways radically different from all its predecessors and it looks at our educational requirements in a new way. Education has been seen as a core necessity of individuals, social groups, nations and human society.

What is the Blue-Print of NEP 2020 for Self-Reliant India-

The last National Education Policy was made in 1986. During these 34 years, the world has changed in unprecedented ways. Revolutionary alterations in the world's political economy, fuelled by technological developments, have significantly contributed in dismantling the barriers of gender, class, caste, culture, geographical distance and so forth.

The NEP 2020, released on 29 July 2020, is a historic and ambitious document with an eye on the future,The vision of National Education Policy is-

National Education Policy 2020 envisions an India-centric Education system that contributes directly to transforming our Nation into an equitable and vibrant knowledge society by providing high-quality education to all."

Recently, the union cabinet has approved the National Education Policy, 2020 with an aim to introduce several changes in the Indian Educational System from school to college level, which are as follows-

-The NEP 2020 aims at making India a Global Knowledge Superpower.

-The cabinet has also approved the remaining of the Ministry of Human Resouress development to the ministry of education.

The NEP cleared by the cabinet is only the third major remap of the framwork of Education in India since Independence.

-The two earlier education policies were brought in 1968 and 1986.

Major Objectives for School Education in NEP 2020-

- Universalization of education from pre-school to secondary level with 100% Gross Enrolment Ratio (GER) in school education by 2030.
- To bring 2 crore out of school children back into the mainstream through an open school system.
- The current 10+2 system to be replaced by a new 5+3+3+4 curricular structure corresponding to ages 3-8, 8-11,11-14, and 14-18 years respectively.
- It will bring the uncovered age group of 3-4 years under school curriculum, which has been recognized globally as the crucial stage for development of mental faculties of a child.
- Emphasis on foundational literacy and numeracy, no rigid separation between

academic streams, extracurricular, Vocational streams in schools Vocational Education to start from class-6 with internship.

- Teaching up to at least Grade-5 to be in mother tongue/regional language. No language will be imposed on any student and New National Curriculum framework for teacher Education (NCFTE) 2021 will be formulated by NCTE and NCERT.

Major objective for higher level-

- Gross Enrollment Ratio in higher education to be raised to 50% by 2035. Also 3-5 crore seats to be added in higher education.
- The current Gross enrollment Ratio (GER) in higher Education is 25.3%.
- Holistic undergraduate education with a flexible curriculum can be of 3 or 4 years with multiple exit options and appropriate certificate within this period.
- Multidisciplinary Education and Research universities (MERUs) at par with IITs and IIMs, to be set up as models of best multidisciplinary education of global standards in the country.
- The National Research Foundation will be created as an apex body for fostering a strong research culture and building research capacity across higher education.
- Higher Education Commission of India (HECI) will be set up asa single umbrella body for the entire higher education, excluding medical and legal education. HECI will be having four independent verticals namely-
- National Higher Education Regulatory Council (NHERC) for regulation.
- General Education Council (GEC) for standard setting.
- Higher Education Grants Council (HEGS) for funding
- National Accreditation Council (NAC) for Accreditation.
- It also aims to increase the public investment in the Education sector to reach 6% of GDP at the earliest.

Need of National Education Policy 2020 in Present Indian Scenario-This new Education Policy is in many ways radically different from all its predecessors and it looks at our educational requirements in new ways. This Policy was approved by the Union Cabinet of India on 29 July 2020 It outlines the vision of India's new education system. The Policy is a comprehensive framework for Elementary Education to Higher Education as well as Vacational training in both rural and urban India. This Policy aims to transform India's education system by 2040.

Shortly after the release of the policy, the government clarified that no one will be forced to study any particular language and that the medium of instruction will not be shifted from English to any regional language. The NEP is a broad guideline and advisory in nature; and it is up to the states, institutions, and schools to decide on the implementation. Under the NEP 2020, numerous new educational institutions and concepts have been given legislative permission to be formed. The Policy purposes new language institutions such as the Indina Institute of Translation and Interpretation,

The National Institute for Pali, Persian and Prakrit. Other bodies proposed include The National Mission for Mentoring, National Book Promotion Policy National Mission on foundation literacy and Numeracy.

Benefits and Limitations of NEP 2020

Benefits-

-The new policy aims at universalization of education from pre-School to secondary level with 100 percent Gross Enrolment Ratio (GER) in school education by 2030 and aims to raise GER in higher Education to 50 percent by 2025.

- A new National Assessment Centre, PARAKH (Performance Assessment, Review and Analysis of knowledge for Holistic Development Will be set up as a standard-setting body.

-NEP emphasis on setting up of Gender Inclusion fund and also Special Education Zones for disadvantage & regions and groups.

-A National Book Promotion Policy is to be formulated.

Limitations-

In a bid to promote regional and local languages, English will take a back seat if this is implemented.

- It is possible to promote both things at once, but introducing learning in English directly in class-6 will prove to be very hard for children who come from backgrounds that are not as privileged as those from rich and upper-caste families.
- The move is also questionable because the education sector in our country is extremely underfunded. The condition of government schools is deplorable, and the lack of competence is starkly evident.
- It will also create a clear divide. Those who can speak English will have a more elitist world view over those who do not learn it in their schools and thus cannot speak it fluently.
- Overall the New Education Policy, 2020 appears to be truly visionary and comprehensive. Its success, however, lies in its effective implementation. The government will not leave any stone unturned in this national rebuilding project.

<u>**Reference**</u>

- Union Cabinet Approves New Education Policy NDTV. 29 July 2020 Retrieved 29 July 2020
- Gohain, Manash Pratim (31 July 2020) NEP Language Policy broad guideline; Government; The Time of India, Retrieved 31 July 2020
- Chopra, Ritika (2 August 2020)' Explained; Reading the New National Education Policy 2020; The India Express, Retrieved 2 August 2020.

XENOBOTS : ENTIRELY NEW LIFE FORMS- NEVER SEEN IN NATURE

Dr. Rashmi Singh
Assistant Professor
Department of Zoology

Scientists have created the world's first living, self-healing robots using stem cells from frogs. According to Joshua Bongard of university of Vermont "These are novel living machines"

"They're neither a traditional robot nor a known species of animals. It's a new class of artifact: "A living, programmable organism." The team of scientists from University of Vermont and Tufts University Allen Discovery Center has created the world's first living, self healing robot using stem cells.

What is a Xenobot ?

The word Xenobot is made up of two words Xenopus and Robot. Since the stem cells used for creating Xenobots are derived from an African clawed frog (Xenopus laevis) hence, it is named as Xenobot. These machines are less than a millimeter (0.04 inches) long , and made of 500-1000 living cells, which is small enough to travel inside human bodies. They have various simple shapes, including some with squat "legs". They can propel themselves in linear or circular directions, join together to act collectively, and move small objects.

Using their own cellular energy, they can live up to 10 days. They can walk and swim, survive for weeks without food, and work together in groups. Xenobots do not look like traditional robots. They have no shiny gears or robotic arms. Instead, they look more like a tiny blob of moving pink flesh. The researchers say this "biological machine" can achieve things typical robots of steel and plastic cannot.

What is stem cells? And How Xenobots are created ?

Stem cells are unspecialized cells that have the potential to develop into different cell types.Living stem cells are scraped from embryos and after incubation, the cells were cut and reshaped into specific body forms which is designed by a supercomputer forms "never seen in nature." According to a news released from the University of Vermont."

A remarkable combination of artificial intelligence (AI) and biology has produced the world's first "living robots" The cells then began to work on their own. Skin cells bonded to form structure, while pulsing heart muscle cells allowed the robot to move on its own. Xenobots even have self-healing capabilities. When

the scientists sliced into one robot, it healed by itself and kept moving.

How Xenobots get nutrition ?

Xenobots have their own food source of lipid and protein deposits, which allow them to live for a little over a week but they can't reproduce or evolve. However, their lifespan can increase to several weeks in nutriet-rich environments.

How Xenobot could be useful ?

Xenobots could be used to clean up radioactive waste, collect micro plastics in the oceans, carry medicine inside human bodies, or even travel into our arteries to scrape out plaque. The Xenobots can survive in aqueous environments without additional nutrients for days or weeks making them suitable for internal drug delivery. Aside from these immediate practical tasks, the Xenobots could also help researchers to learn more about cell biology opening the doors to future advancement in human health and longevity,

"If we could make 3D biological form on demand, we could repair birth defects, reprogram tumours into normal tissue, regenerate after traumatic injury or degenerative disease, and defeat aging," said the researchers' website. Ths research could have " a massive impact on regenerative medicine like building body parts and inducing regeneration.

Advantages of xenobots over traditional roots :-

According to one of the study, which was published in the proceedings of National Academy of Sciences, traditional robots degrade over time and can produce harmful ecological and health side effects,, as xenobots are biological machines, so they are more enviornment friendly and safer for human health.

Furture of Xenobots :-

The supercomputer is a powerful piece of artificial intelligence (AI) which plays a big role in building these robots. At the moment, though, it is difficult to see "how an AI could create, harmful organisms any easier than a talented biologist with bad intentions could", said the researcher's website.

आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता है, वह है– लोहे की मांसपेशियाँ और फौलाद के स्नायु, प्रचंड इच्छाशक्ति; जिसका अवरोध दुनिया की कोई ताकत न कर सके, जो जगत् के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सके और जिस उपाय से भी हो अपने लक्ष्य की पूर्ति करने में समर्थ हो, फिर चाहे समुद्रतल में ही क्यों न जाना पड़े ; साक्षात् मृत्यु का ही सामना क्यों न करना पड़े।

–चाणक्य

Critical Analysis of NEP 2020

Dr. Jeetendra Pratap
Assistant Professor, B.Ed Department

Online and Digital Education : Ensuring Equitable Use of Technology Educational efforts in NEP 2020 under different sub section of chapter 24

24.1 New circumstances and realities require new initiatives.

24.2 The benefits of online/digital education cannot be leveraged unless the digital divide is eliminated through concerned efforts.

24.3. Teacher required suitable training and development to be effective online educators.

24.4 Given the emergence of digital technologies and the emerging importance of leveraging technology for teaching, learning at all levels. The polity recommendations are followings.:-

- Pilot studies for online education.
- Digital infrastructure.
- Content creation, digital repository and dissemination
- Addressing the digital divide.
- Virtual labs.
- Training and incentives for teachers.
- Online assessment and examination
- Blended models of learning.
- Laying down standards

24.5 Creating a dedicated unit for building of world class, digital infrastructure, educational digital content and capacity

Critical Analysis of NEP 2020-Online and Digital Education : Ensuring equitable use of technology in following dimensions :-

- Student
- Curriculum
- Teacher

1. Students.

Online Class	Virtual Class
Availability of devices (Android Phone, Computer, laptop etc)	Restricted
Availability of data, speed, cost of internet and unwanted calls	No required data,
Body Posture (Backbone/Neck)	Proper
Eye Sight (Reflection of flash)	No reflection of flash
Home environments (Parents, brothers and sisters)	Classroom environments.
Kitchen smell	Fix lunch time
Entry of guest or other unavoidable person	Not allowed in class
Topic interest	Must
Lack of learning by peer group (social learning)	Proper

Lack of discussion with peer group	Proper
Lack of co-operative learning (such as table learning)	Proper
Lack of physical training (Development)	Proper
Partially development of personality.	All round development of personality

2. **Teachers**

Online Class	**Virtual Class**
Availability of devices and its using habits	Not required
Availability of data	Not required
Unwanted class during class time.	Can be managed
Body posture (Backbone and Neck	Proper
Eye sights (Reflections of flash)	No reflections...............
Home environments (Children and relatives)	School and
Domestic demands	classroom environment
Kitchen Smell	Fix time
Entry of guests or other unavoidable person	Not allowed in class
Lack of face to face interaction (Device problems)	
Providing physical training	Proper
Partially chance for developing personality	All round development
Teachers training for online teaching	....

3. **Curriculum**

i. Online education during COVID-19 has brought a fundamental change in approaches.

ii. during COVID-19 we are doing only content delivery, we have not conducted teaching or delivered lectures. It is not a paradigm shift of teaching-learning process.

iii. During admission for virtual education, learner was not mentally prepared for online class.

iv. There is need for mental preparation of learner, parents and teachers

v. Organizing teachers training programmes for online teaching.

vi. Designing of course according to online system.

vii. Designing examination setup regarding digital platform

OBJECTIVES OF NATIONAL POLICY OF EDUCATION-1968 :- Common language for all India-Hindi was adopted as NATIONAL LANGUAGE

Question is-How can we achieve this goal

OBJECTIVES OF NATIONAL POLICY OF EDUCATION-1986 :-

I. All round development (Focus on technical education)

ii. Development of man power- (Basically complete literacy)

iii. Development of socialism, secularism and democracy

iv. International co-operation and peaceful co-existence

v. Cultivating moral and ethical values

Question is. How much can we achieve these goal ?

for example-Total literacy rate of India-Male 74.04%, Female 82.4%

OUR RESOURCES (MAN POWER FIRST OF ALL)

OBJECTIVES OF NATIONAL EDUCATION POLICY-2020 : Skill Development

Based on the pillars-Access, Equity, Quality, Affordability and AccountabilityMHRD Minister Mr. Ramesh Pokharial Nishak said that

"BHARAT KO VISHWA GURU BANANA HAI."

Now assessment of need of resources :-

Different Age Group learner- (Census-2011) percentage of total population.

6-14 19.7 Primary Education

14-18 10.24%- Secondary Education

18.25 8.8%-Higher Education

Vacant teacher position :-

Vacant teacher position at **primary and upper primary** in UP-**1.5 lakhs (advt)**

Secondary teacher Vacant position at upper primary, junior and high school

teacher in UP-**42000 (advt)**

Higher education vacant teacher position in UP Approximately-50%

Use of available Man power :-

Duties of Primary Teachers-Election duties, pulse polio, BLO duty, during COVID 19 duty in quarantine centres, preparation of different records, departmental meetings. How can they provide education to their class students ?

How much they can fulfill their responsibilities for those they are appointed (teaching) ? They are doing multi-task, abart from teaching.

Suggestion for primary level :- Time to time recruitment of teachers in minimum duration or as session wise required.

Duty should be purpose oriented for which they are appointed.

Teacher also should be accountable towards their profession (Credit system based on performance.)

Secondary level :- Time to Time recruitment of teachers in every session as required-Focus on specialization-One teacher one specialization

Drop out the idea of single teacher double subject.

Higher Education :-College and Universities-Colleges Lack of Teachers approximately 50%- of the required strengh in because, colleges avoid sending information (requisition/Adhiyachan) to directorate of higher education.

University level-causes-misuse of NFS techniques (Not Found Suitable) approximately 50% lack of teachers. Although UGC Awarded NET and JRF certificate and sentence quoted in certificate that you are eligible for teaching in higher education (Universities and Degree College). Then what is criteria of assessment in interview for declaring NFS (Not Found Suitable)

So, in the last I request to teachers, learners and parents :-

Seek opportunity in adversity.

Do more with less

Think and act flexible

Keep it simple

Include the margin

Changing the life cycle

Importance of Education in Women equality in India

Shivendra Kumar Nigam
Research scholar, Department of English

Women education in India has a major preoccupation of both the government and civil society as an educated woman can play a very important role in the Education is a mile stone of women empowerment because it enables them to respond to the challenges, to confront their traditional role and change their life. So we can't neglect the importance of education in reference to women empowerment and India poised to becoming superpower in recent years. Education of women is the most powerful tool to change their position in society. Women education in India has been a need of the hour, as education is a foundation stone for the empowerment of woman. Education also brings a reduction in inequalities and functions as a means of improving their status within the family and develops the concept of equal participation.

Introduction : Empowerment can be viewed as means of creating a social environment in which one can decisions and make choices either individually or collectively for social transformation. The empowerment strengthens the innate ability by way of acquiring knowledge, power and experience (Hashmi Schuler and Riley, 1966). Empowerment is the process of enabling or authorizing individual to think, take action and control work in an autonomous way. It is the process by which one can control over one's destiny and the circumstances of one's lives. There are always a number of elements in the society which are deprived of their basic rights in every society, state and nation, but these elements lack in the awareness of their rights. If we enlist such elements from the society, then women would top in this list. In fact, women are the most important factor of every society. Even though, everybody is aware of this fact. As a consequence of this growing tendency of underestimating women such as to make them occupy a secondary position in society and to deprive them of their basic rights, the need for empowering women was felt. Empowering women has become the focus of considerable discussion and attention all over the world. Today, we enjoy the benefits of being citizens of a free nation, but we really need to think whether every citizen of our country is really free or enjoying freedom, in the true sense of the term. The inequalities between men and women and discrimination against women are an age-old issue all over the world. Thus, women's quest for equality with man is a universal phenomenon. Women should be equal with men in matters of education, employment, inheritance, marriage, and politics etc. Their quest for equality has given birth to the formation of many women's associations and launching of movements. The constitution of our nation doesn't discriminate between men and women, but our society has deprived women of certain basic rights, which were bestowed upon them by our Constitution. Empowerment allows individuals to reach their full potential, to improve their political and social participation, and to believe their own capabilities.

Importance of women education : "If you educate as man you educate an individual, however, if you educate a woman you educate a whole family. Women empowerment means mother India empowered." Pt. Jawahar Lal Nehru Women education in India plays a very important role in the overall development of the country. It not only helps in the development of half of the human resources, but in improving the quality of life at home and outside. Thinkers have given a number of definitions of education but out of these definitions, the most important definition is that which was put forth by M. Phule. According to M.Phule," Education is that which demonstrates the difference between what is good and what is evil". If we consider the above definition, we come to know that whatever revolutions that have taken place in our history, education is at the base of them. Education means modification of behavior in every aspect, such as mentality, outlook, attitude etc. Educated women not only tend to promote education of their girl children, but also can provide better guidance to their children. Moreover educated women can also help in the reduction of infant mortality rate and growth of the population. Gender discrimination still persists in India and let more needs to be done in the field of women's education in India. The gap in the male-female literacy rate is just a simple indicator. While the male literacy rate is more than 82.14% and the female literacy is just 65.46% .

Women empowerment through education : Women empowerment is a pivotal part in any society, state or country. It is a woman who plays a dominant role in the basic life of child. Women are an important section of our society. Education as means of empowerment of women can bring about a positive attitudinal change. It is therefore, crucial for the socio-economic and political progress of India. The constitution of India empowers the state to adopt affirmative measures for prompting ways and means to empower women. Education significantly makes difference in the lives of women Women empowerment is a global issue and discussion on women's political rights are at the fore front of many formal and informal campaigns worldwide. The concept of women empowerment was introduced at the international women conference at NAIROBI in 1985. Education is milestone of women because it enables them to respond to the challenges, to confront their traditional role and change their lives. So we can't neglect the importance of education in reference to women empowerment. in The empowerment of women has been recognized as the central issue in determining the status of women For becoming super power we have mostly to concentrate upon the women's empowerment. As per united nations development fund for women (UNIFEM) the term women empowerment means :

- Acquiring knowledge and understanding of gender relations and the ways in which these relations may be changed.
- Developing a sense of self-worth, a belief in ones ability to secure desired changes and the right to control one's life.
- Gaining the ability to generate and choices exercise bargaining power.
- Developing the ability to organize and influence the direction of social change, to create a more just, social and economic order, nationally and internationally.

Thus, empowerment means a psychological sense of personal control or influence or political power and legal rights. It is a multilevel construpt referring to individuals,

organizations and community. It is an international, ongoing process centered in the local community, involving mutual respect, critical reflection, caring and group participation, through which people lacking an equal share of valued resources gain greater access to the control over these resources.5

Let's see the differences in the literacy rate between men and women in given table are as under.

Year	Male	Females
1901	9.8	5.3
1911	10.6	5.9
1921	12.2	7.2
1931	15.6	9.5
1941	24.9	16.1
1951	24.9	16.7
1981	46.9	36.2
1991	63.9	52.1
2001	76.0	62.38
2011	82.1	74.0

On observing the above table, we come to know that at no point could the literacy rate of women match that of men. As a result, even after 65 years of independence, women occupy a secondary position in our social hierarchy. Inspire of being aware of her position, women can't transform their condition due to lack of education. Therefore, women empowerment can't be effected unless we the importance of women's education.

Importance of Women participation : Women's participation may be used effective either acknowledge by support by an agency and as a control device by the law makers. Participation may be direct or indirect, formal or informal; it may be political, social or administrative in nature. Women's participation in pending of Raj institutions may take many forms. It refers to all those activities which show the Women's involvement in the process and administration, that is, participation in policy formulation

and planning of programs, implementation and evaluation of policies, and programmes meant for development target groups. Indian women have been associated with politics since the pre independence period. They were part of the freedom movement both as volunteers and leaders. Article 15 of the Indian constitution guarantees equal rights to all citizens, Women are still marginally represented in the Indian political arena. The fact is that women are having lack of power at the center and state level. It is sad state of affairs that about half of India's population has only 10% representation in the Lok Sabha In the current Rajya Sabah, there are 21 women out of a total of 233 M.P.'s which accounts to only nine percent which is even lower than that in the Lok Sabha At the social level male dominance in Parliament, bureaucracy, judiciary, army, police all point towards gender inequality, notwithstanding the fact that is often argued that women's political leadership would bring about a more cooperative and less conflict-prone world. Lack of political and economic powers add to the subservient and unequal position of women. after Independence, in spite of having our own constitution, India was not able to achieve morals like fairness, equality and social justice. The conditions of women didn't improve even having a women prime minister for a years. Women's representation in politics all over the world began to assume importance from mid 1970's when United Nations (U.N) declared 1975 as the 'International Women's Year'. This was followed by the U.N's decade for women from 1976-1985 and the theme was "Equality, Development and Peace."

Women's participation in politics remained quite inconsequential in India even today but some sort of improvement took place by the 73rd and 74th constitutional amendment acts which gave boost to the status of women at the political level by giving opportunity to women in the process of decision making. The 73rd and 74th amendments (1993) of the constitution of India have provided for reservation of seats in the local bodies of panchayats and municipalities for women, laying a strong foundation for their participation in decision making at the local level.

Educational equality : Another area in which women's equality has shown a major improvement as a result of adult literacy programs is the area of enrolment of boys and girls in schools. As a result of higher participation of women in literacy campaigns, the gender gap in literacy levels is gradually getting reduced. Even more significant is the fact that disparity in enrolment of boys and girls in neo-litererate households is much louver compared to the non-literate householders.few countries have achieved equality in primary education between girls and boys. But few countries has achieved that target at all the levels of education. The political participation of women keeps increasing. In January 2014, in 46 countries more than 30% of members of parliament in at least one chamber were women. In many countries, gender inequality persists and women continue to face discrimination in access to education, work and economic assets, and participation in government. Women and girls are barriers and disadvantages in every sector in which we work. Around the world. 62 million girls are not in school. Globally, I in 3 women experiences gender-based violence in her lifetime. In the developing world, 1 in 7 girls is married before her 15th birthday, with some child brides as young as 8 or 9 years old more than 287,000 women, 99 percent of them infront developing countries, die from

pregnancy and child birth-related complications. While women make up more than 40 percent of the agriculture labor force, only 3 to 20% are landholders. In Africa, women owned enterprises make up as little as 10 percent of all businesses. In south Asia, that number is only 3% and despite representing half the global population, women compromise less than 20% of the world's legislators. Putting women and girls on equal footing with men and boys have the power to transform every sector in which we work. The gender equality and women's empowerment isn't a part of development but at the core of development. To get rid of this we have to make some educational awareness programed on gender equality and women empowerment for cementing our commitment to support women and girls.

Women's participation in politics remained quite inconsequential in India even today but some sort of improvement took place by the 73rd and 74th constitutional amendment acts which gave boost to the status of women at the political level by giving opportunity to women in the process of decision making .The 73rd and 74th amendments (1993) of the constitution of India have provided for reservation of seats in the local bodies of panchayats and municipalities for women, laying a strong foundation for their participation in decision making at the local level.

Conclusion : Women play an important role in making a nation progressive and guide it towards development. They are essential possessions of a lively humanity required for national improvement, so if we have to see a bright future of women in our country, giving education to them must be a pre-occupation Empowerment means moving from a weak position to storing position . The education of Women is the most powerful tool to change the position of society. Education also brings a reduction in inequalities and functions as a means of improving their status within the family. To encourage the education of women at all levels and for dilution of gender IAS in providing knowledge and education, schools, colleges and universities even exclusively for women are established state. The education develops the idea of participation in government, panchayats, public matters etc for elimination of gender discrimination.

References

1. Maralinga, K.Women's Empowerment through Pinched Raj Institutions. India Journal of Research (2014) : vol. 3 Issue 3.

2. Shindy, J.Women's Empowerment through Education. Abhinav Journal (2012) : vol. 1. Issue 11.

3. Sagina, MEDICATION and Women Embowerment in India. (2011) : International Journal of Multi disciplinary Research :Vol.1. Issue 8.

4. http://Shodhaganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/Bitstream/10603/8562/9/09_chapter%204.pdf.

महामानव से साक्षात्कार

डॉ. अलकारानी पुरवार
प्रभारी, अंग्रेजी विभाग

तलाश आत्मज्ञान की,
चाह शाश्वत प्रेम की,
खोज मानसिक शांति की
खींच ले जाती बरबस हमें
बुद्ध की शरण में.................... ।
जहाँ
आत्मचिंतन में लीन
सांसारिक शोर से परे
निर्वाण प्राप्ति को आतुर
व्यग्र, व्याकुल शिथिल मानव
पहुँच जाता है
एक विशिष्ट लोक में
अहा !
अद्भुत अहसास.................... ।
स्पंदित पवन
बोधिवृक्ष की गहन छाया
उपस्थित सात्विक ऊर्जा
ओम की प्रतिध्वनि
साधना के विभिन्न आयाम
अनगिनत प्रतिरूप ध्यान के
चहुँओर प्रतिलक्षित
दिव्य पुष्प श्रद्धांजलि आहलादित भी करती
और स्तब्ध भी
गर्भगृह में प्रतिस्थापित
अलौकिक शान्तियुक्त
ओजपूर्ण प्रतिमा
विवश करती अपलक निहारने को
भंते प्रदत्त आशीर्वाद 'खादा'
ज्यूँ रीती हथेलियां पा गयीं
खजाना जमाने भर का
सच कहते हैं लोग कि
बुद्ध बनना आसान नहीं
साधारण से असाधारण
मानव से महामानव
बनने की यात्रा है यह
पर बुद्ध से साक्षात्कार भी तो
कुछ कम खूबसूरत नहीं.........

लॉकडाउन

डॉ. के.के. निगम
असि0 प्रो0, संगीत विभाग

बाहर जाने की जिद न करो–2
वक्त–ए– कोरोना है समझा करो ।
बाहर...................................... ।

घर की कैद में जिन्दगी है मगर
चन्दघड़ियाँ यहीं है जो आजाद हैं–2
बाहर जाना जरूरी अगर
हाथ कई बार धोया करो।
बच्चों संग घर बैठा करो
बाहर.. ।

खुद ही सोचो जरा क्यों न रोके तुम्हें–2
जान जाती है जब हाथ मिलाते हो तुम–2
छींकना हो अगर जाने जा
मुँह अपना उधर फेर लो
मास्क नीचे न ऊपर करो

बाहर जाने की जिद न करो
वक्त–ए– कोरोना है समझा करो।

जो गले मिलोगे तपाक से–2
वो नजर भी न मिलायेंगे–2
ये नये मिजाज का शहर है
जरा फासले से रहा करो
बाहर जाने की जिद न करो
यूँ ही पहलू में बैठा करो।
आज जाने की जिद न करो

लोक समता गीत

डॉ. मलिखान सिंह
असि0 प्रो0, भूगोल विभाग

हर देश में तूं हर वेश में तूं।
तेरे नाम अनेक तूं एक ही है।।
तेरी रंगभूमि यह विश्वभरा।
हर खेल में मेल में तूं ही तूं है।

अल्हा भी तूं ईश्वर भी तूं।
वाहे गुरू भी तूं और गॉड भी तूं।।
ये सुन्दर अखिल बाह्मण्ड तेरा।
हरगुल में तूं हर बुल में तूं।।
हर देश...................... ।

सागर से उठ बादल बनकर।
बादल से गिरा जल हो करके।।
फिर डैम बने नदियां गहरी।
तेरे भिन्न प्रकार, तूं एक ही है।।
हर देश.................................. ।

माटी से ही अणु–परमाणु बना।
यह विश्व जगत का रूप लिया।।
कहीं पर्वत, वृक्ष, विशाल बने।
सौन्दर्य तेरा, तूं एक ही है।
हर देश................................ ।

यह दृश्य दिखाया है जिसने ।
वह है गुरुदेव की पूर्ण दया ।।
मलिखान कह कोई और न दिखा।
बस तूं और मैं सब एक ही हैं।
हर देश.................................. ।

पाखण्डवाद पर कबीर साहब की वाणी

डॉ. मलिखान सिंह
असि0 प्रो0, भूगोल विभाग

टेक– रे! भोली सी दुनिया सतगुठ बिन कैसे सरिया।

अपने लला बाल उतरावैं, कहीं कैंची न लग जइयाँ।
एक बकरी का बच्चा लेकर, उसका गला कटइयाँ।।
रे भोली...................................... ।

जीवित बाप के लठ्ठम–लठठा, मरे पे गंग पहुँचइयाँ।
जब आवे आसोज का महीना, कौआ बाप बनइयाँ।।
रे भोली...................................... ।

पीपल पूजै जौड़ी पूजे, सिर तुलसा के अहोइयाँ।
दूध–पूत में खैर राखियो, न्यू पूंजू सू तोहिया।।
रेल भोली.................................... ।

आपे लीपे–आपे पोते, आपे वनावे होईयाँ।
उससे भौन्दू पोते माँगे, अकर भूल से खोईयाँ।
रे भोली...................................... ।

पति शराबी घर पर नित हौ, करत बहुत लड़ाइयाँ
पत्नी सोलह शुक्र व्रत करत है, देही नित्य तुड़ाइयाँ।।
रे भोली...................................... ।

तज पाखण्ड 'सतनाम' लौ लावे, सोई भवसागर से तरियाँ
कहे कबीर मिले गुरु पूरा, स्यो परिवार उतरिया।।
रे भोली...................................... ।

मैं किसान का बेटा हूँ

गौरव कुमार
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

मैं क्लास में पढ़ता हूँ
मैं धूप में भी चलता हूँ।।
तुम न समझोगे, साहब
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मैं गाँव से आता हूँ
मैं शहर में भी बसता हूँ।।
मेरा नहीं कोई ठिकाना,
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मैं मैस में खाता हूँ।
कभी भूखा भी सो जाता हूँ।।
संघर्ष है मेरी पहिचान,
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मैं शूट बूट पहनता
कभी नंगे पांव भी चलता हूँ ।।
परिश्रम है मेरी परिभाषा,
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मैं ग्रेजुएट तो कर चुका अब
मैं पी.एच.डी. भी करता हूँ।।
आधार शिला बनता मैं देश की,
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मैं पैदल भी चलता हूँ।
मैं बुलेट भी दौड़ाता हूँ।।
ट्रैक्टर है मेरा औजार
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मिट्टी मेरी जननी है।
इसमें पला बढ़ा हूँ।।
पहुँचकर ऊँचे औहदों पर,
अभी भी इससे जुड़ा हुआ हूँ।।
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

मैं पूरब में हूँ पश्चिम में हूँ
उत्तर में हूँ, दक्षिण में हूँ।।
देश की मिट्टी में रमता हूँ,
क्योंकि मैं किसान का बेटा हूँ।।

सत्कार्य

एक बार ज्येष्ठ महीने की तपती दुपहरी ईश्वरचंद्र विद्यासागर को बंगाल के कालना गाँव में किसी आवश्यक कार्य में जाना पड़ा। अभी कुछ ही दूर चले थे कि एक गरीब आदमी रास्ते में हाँफता–कराहता पड़ा दिखाई दिया। सभी लोग उसे देखकर निकल जा रहे थे, कोई उसकी सहायता नहीं कर रहा था।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर को यद्यपि आवश्यक कार्य से जाना था तथापि उस व्यक्ति को देखकर उनकी करुणा उमड़ पड़ी। उन्होंने उसे पानी पिलाया, सांत्वना दी और कंधे पर लादकर अस्पताल ले जाकर भरती करवाया। वहाँ ले जाकर उसकी सेवा–शुश्रूषा में हाथ बँटाया। जब वह थोड़ा अच्छा हो गया, तब उसे रुपये देकर अपने कार्य हेतु रवाना हुए। महापुरुषों का जीवन ही सत्कार्य हेतु समर्पित होता है और उसकी पूर्ति किए बिना वे अन्य कोई कार्य नहीं किया करते।

प्रवासी मजदूर

अमित कुमार
एम.ए. (प्रथम वर्ष)
राजनीति विज्ञान

क्या यही मजदूर होता है................
जो हमारे दिये हुए जख्मों को सह लेता है
अपना दुःख किसी से न कहता है
और दिनभर काम करने के बावजूद भी
इनकी जेब में सिर्फ चंद रुपये
क्या यही मजदूर होता है................
उसे बड़े महलों की चाहत नहीं
उसके घर में किसी चोर की भी आहट नहीं
वो चाहता है कि सब उसके काम से खुश रहें
उन सबके लिए वो अपनी खुशियों को भी खोता है
क्या यही मजदूर होता है................
सरकार जिसे अपनी ऊँगली पर नचाती है
जब चाहे काम दे दिया जब चाहे घर बिठाती है
सच तो ये है कि वो किसी से उम्मीद ही नहीं रखता
जो फुटपाथ किनारे बिना बिछौने के सोता है,
क्या यही मजदूर होता है................
अमीरों ने आराम किया और छुट्टी पूरी की
वो तो पैदल ही चल पड़ा और मंजिल पूरी की
तब सरकार ने तो कह दिया वर्क फ्रॉम होम Work from Home
एक वही था जिसने तपती धूप में मजदूरी की ?
काम ही जिसका वजूद होता है
क्या यही मजदूर होता है................
हम जिसकी मेहनत से खुद को अमीर कहते हैं
वो डिप्रेशन में और हम सुकून से रहते हैं।
अपनी रोटी का आधा टुकड़ा भी जो दान कर देता है
सभी दर्दों को सहकर तन्हाई में जो रोता है
क्या यही मजदूर होता है................
जिसका न कोई नाम न कोई पहचान
हम कहते हैं जिसे अनपढ़, गँवार और बेईमान
सुन लो उसे अनपढ़ कहकर पुकारने वालो
उसकी मेहनत से तुम्हारे महल खड़े होते हैं
बेटा उसका भी अफसर होता है
हाँ यही मजदूर होता है।

देशभक्ति गीत

बृजराज सिंह
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

ऐ माँ मेरी यादों को इस दिल से लगा
लेना–2

जब याद मेरी आये भरना न कभी आहें–2
बस मेरी निशानी को सीने से लगा लेना
ऐ माँ मेरी यादों.....................................

आजादी का दीवाना, जाता हूँ मैं फाँसी को–2
हँस–हँस के मैं चढ़ जाऊँ बस इतनी दुआ देना
ऐ माँ मेरी यादों...

जब खाक मेरी आये, ए माँ तेरे द्वारे पर–2
उस खाक पे हे माता, नयी दुनियां बसा लेना
ये माँ मेरी यादों को इस दिल से लगा लेना।

कामयाबी की दास्तान

कु. शिखा
एम.ए. (द्वितीय वर्ष)

रोने से तकदीर बदलती नहीं
वक्त से पहले रात ढलती नहीं।
दूसरों की कामयाबी लगती आसान
कामयाबी रास्ते में पड़ी मिलती नहीं।
मिल जाती कामयाबी अगर इत्तेफाक से
यह भी सच है कि वह पचती नहीं।
कामयाबी पाना है पानी में आग लगाना है,
पानी में आग आसानी से लगती नहीं।
ऐसा भी लगता है, जिन्दगी में अक्सर,
दुनिया अपने जज्बात समझती नहीं।
हर शिकस्त के बाद टूटकर जो संभल गया,
फिर कौन सी बिगड़ी बनती नहीं।
हाथ बाँध बैठने से पहले सोच ए–इन्सान,
अपने आप कोई जिन्दगी सँवरती नहीं।

यक्षिणियाँ

एक व्यापारी के यहाँ नौका चालन द्वारा व्यापार होता था। एक बार उसके दोनों लड़के नावों में माल भरकर विदेश बेचने गए। लौटते हुए परदेश से दूसरा माल लाने की योजना थी। रास्ते में समुद्री तूफान आया। नावें उलट गईं। उनमें रखे दो तख्तों के सहारे वे किनारे आ गए। जान भर बच गई। उस क्षेत्र में तीन यक्षिणियों का शासन था। एक का नाम था वासना, दूसरी का तृष्णा और तीसरी का अपूर्णा। वे सुंदर युवकों की तलाश में रहतीं। कुछ दिन के भोग–विलास से उन्हें खोखला कर देतीं और इसके बाद दूर से सिंह–बाघों से भरे जंगल में उन्हें बेमौत मरने के लिए छोड़ देतीं। यक्षिणियों ने उन युवकों का भी इसी दृष्टि से उपयोग किया। उन्हें हिदायत दी कि घूमना हो तो महल के इर्द–गिर्द ही घूमें। दक्षिण दिशा में भूलकर भी न आवें।

दोनों भाई उनके पंजे से छूटकर घर जाने की फिक्र में थे, सो दाँव लगते ही दक्षिण दिशा की ओर तेजी से चल पड़े। देर जाने पर एक जर्जर अस्थि–कंकाल के रूप में युवक रोता मिला। उसने बताया–''यक्षिणियों ने खोखला करके यहाँ मरने के लिये छोड़ दिया है। रहस्य की बात यह है कि वे पीछा करें, मधुर बातें करें तो भी उनकी ओर मुड़कर न देखना, अन्यथा वे भारी प्रतिशोध लेंगी।'' ऐसा ही हुआ। यक्षिणियाँ पीछे दौड़ती हुई आई। एक भाई उनसे वार्ता करने लगा, उसे ले जाकर कुछ ही दूर पर मार डाला। जिसने मुड़कर नहीं देखा, वह उनके जादू से बच गया और किसी प्रकार घर आ गया। वस्तुतः लिप्साएँ ही यक्षिणियाँ हैं। जो उनके कुचक्र में फँसता है, वह जान गँवाता है।

पर्यावरण दिवस

अनुज कुशवाहा
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

पेड़ काटने वाले आये, और पेड़ को काट गए
क्यों न सोचा एक ही पल में
किसी परिंदे का घर उजाड़ गये।
क्यों न सोचा एक ही पल में
धरती की नींव उखाड़ गए।

कितनी ही भूमि को वो, सुनसान भी बना गए
इस पर्यावरण का मंजर वो, एक पल में बिगाड़ गये
न करो इस पर्यावरण का उपहास,
ये इस धरती का अपमान है।
हर एक पेड़–पौधा और जीव–जन्तु
इस धरती का सम्मान है।

अगर करोगे इस धरती के साथ खिलवाड़
आने वाले कल में होगा चारों तरफ अन्धकार।
इस बात को सोचो और चलो
करो एक सुनहरे पल की पहल
आने वाला जीवन हो हरा–भरा और खुशहाल।

अगर मुझे यह विश्वास हो जाता कि मैं हिमालय की किसी गुफा में ईश्वर को पा सकता हूँ, तो मैं तुरंत वहाँ चल देता, पर मैं जानता हूँ कि मैं इस मनुष्य जाति को छोड़कर उसे और कहीं नहीं पा सकता।
— गांधी जी

वृक्ष

नेहा राजपूत
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

कहा गया है ग्रन्थों में भी
वेदों के उन पन्नों में भी
कहा गया है संत बनें हम
कहा गया है सरल बनें हम
क्या वह पौधे सरल नहीं हैं ?
हम क्यों उन पर विकल नहीं है ?
धरती जिनसे, साँसें जिनसे
क्यों हम छीनें जीवन उनसे।
वायु फूल, फल, लकड़ी..
क्या कुछ नहीं वो हमको देते
तुच्छ से लालच में आकर हम,
खुद की सांसे कम कर
जीव, जंतु हों या हों परिंदे....
जंगल हैं जिनका बसेरा
काट–काट कर वृक्षों को हम,
छीन रहे उनका बसेरा।
उन्हें न कुछ दे सकते हो तो,
उनको छीनो हमसे मत
सबका छीन स्वस्थ जीवन तुम,
बीमारियां बिखेरो मत।
वृक्षों को बस काटो मत।
प्रकृति से हम, हमसे प्रकृति
उन्हें न कुछ दे सकते हो,
उनको हमसे छीनो मत।

अटल बिहारी वाजपेई

नेहा राजपूत
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

एक दृढ़ हृदय को लिए
आँखों में सागर को पिये
सबके लिए एक आस थे
इस देश का विश्वास थे।
था सूर्य से लगाव उन्हें
रोशनी से सरोकार था,
पर छोटी–छोटी ओस की
बूँदो से प्यार बेशुमार था।
माता–पिता की थे वो शान
जन–जन को था जिन पर अभिमान
देश के लिए कितने थे
संघर्ष उन्होंने किये
मरते हैं सब आमोद पर
देश के लिए थे वो जिये।
नाम के जैसा दृढ़ व्यक्तित्व
भविष्य में जिसे चाहे ऐसा अतीत
चंचल आँखों के अधीर से
प्यासी धरती पर नीर से
मौत से नहीं पर बदनामी से डरते थे,
वतन पर अपने दिलो जान से मरते थे
धर्म से था प्यार, पर राष्ट्र को आगे रखते थे
कवि पत्रकार, राजनीतिज्ञ, हृदय से उपकारी थे
देश के हितकारी थे,
ऐसे श्री अटल बिहारी थे।

कलम की पुकार

विवेक कुमार यादव
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

कलम से क्या लिखूँ,
मुझे कुछ आता नहीं
अपनों की खुशी लिख दूँ
या गैरों का गम,
दिल का दर्द लिख दूँ,
या जीवन का मर्म
जीवन के हर दर्द को, शब्दों में संजोया जाता नहीं
कलम से..............
नदी की धार लिख दूँ,
या नौका का गमन,
फूलों की खुशबू लिख दूँ,
या बहारों का चमन
प्रकृति की हर सुन्दरता को, मैं बता पता नहीं,
कलम से......................
सूर्य का क्रोध लिख दूँ,
या चांद की शीतलता,
कांच का टूटना लिख दूँ
या लोहे की सहनशीलता
बदलता जा रहा यह समाज, कुछ बताता नहीं,
कलम से.................
सफलता की कहानी लिख दूँ
या मंजिल के कष्ट,
आलस का पहर लिख दूँ,
या समय का नष्ट
हर कोई सफलता चाहता, पर मन को समझाता नहीं,
कलम से....................
जीवन का प्रारम्भ लिख दूँ,
या मौत से अन्त,
पापों के कहर लिख दूँ,
या पुण्य से सन्त
प्रारम्भ ही अन्त है, कोई जीवन को खरीद लाता नहीं,
कलम से....................

कुछ कर गुजरने का जुनून

अंजली वर्मा
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

कुछ कर गुजरने का जुनून तुझे आगे ले जायेगा।
बुलन्द हौसलों से कदम तो आगे बढ़ा,
ये आसमाँ भी तेरे आगे सिर झुकाएगा।
भड़का उस चिंगारी को जो दबी हुई है तुझमें कहीं,
फिर देख तेरे अन्दर का ज्वालामुखी फटकर बाहर आयेगा।
कुछ कर गुजरने का जुनून...............................
न हो मायूस एक हार से फिर कर कोशिश तू उठने की,
हार कर 'गर' जीत गया तू तभी तो बाजीगर कहलाएगा।
यही समय है आलस्य में मत गँवा इसे,
सुन सिर्फ अपने दिल की तभी कुछ अलग कर दिखा पाएगा,
कुछ कर गुजरने का जुनून...............................
लोग जलते है तो जलने दे उन्हें
कब तक 'चार लोग क्या कहेंगे' इस डर से,
अपने अन्दर के हुनर को तू छुपाएगा।
बनना है तो सूरज की तरह बन
तारों की भीड़ में वरना तेरा वजूद भी खो जायेगा।
कुछ कर गुजरने का जुनून..................
कर कोशिश जीतने की खुद से ही प्रतिदिन,
एक दिन तेरे नाम का परचम इस जग में लहराएगा।
बना अपने व्यक्तित्व को हिमालय–सा अडिग,
फिर इतिहास भी तेरी वीरता के किस्से दोहराएगा।
कुछ कर गुजरने का जुनून...............................

अहसास मेरे मन के

दीक्षा मारवाड़ी
एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान)

दिखावे की भीड़ में, खो गए आज ऐसे
खुद में ही खुद को अब तलाशोगे कैसे ?
नये कपड़ों की शौहरत, नाकामी की दौलत
संस्कारों के हीरे को अब तराशोगे कैसे ?
अपनों की भीड़ में भी है, अकेला तू आज,
अर्थी में अपनी, लोगों की भीड़ बढ़ाओगे कैसे ?
शान बढ़ाने की चाहत में, नये दोस्तों से रोज मिल रही है जिंदगी
पुराने लोगों के खजाने को अब सँभालोगे कैसे ?
झुककर मिलने का रिवाज अब जा रहा,
छोटा होकर भी खुद को बड़ा बनाओगे कैसे ?
जीवन जीने के लिए सब देती है, प्रकृति
पेड़ काटे जो तू, हवा भी दूषित हो गई,
सांस न आने पर, अस्पताल में आक्सीजन कमाओगे कैसे ?
बड़े शहरों में बसने की कोशिश में लगी है, आज दुनिया
पत्थरों के शहर में अब, कच्चे मकान बनाओगे कैसे ?
परिजनों से ऊँचे बोल बोलकर, लिख रहा निबंध तू आज
नई पीढ़ी के मुख से, वह सुन पाओगे कैसे ?
इमोजी के दौर में हँसना तू भूल गया
बिना माचिस के लोगों को जलाओगे कैसे ?
मोहताज होंगे हर पल के लिए कहीं पर तो
चांद लाकर कोई न देगा, अपने चेहरे को फिर जगमगाओगे कैसे ?
कौन कहता है, रुतवे पर ही बात होती है आजकल
न मिले मुस्कुराकर तुम तो, हाथ मिलाओगे कैसे ?
पल गुजार दिये सब, बातें बना–बनाकर
खामोशी से अल्फाजों को सुनाओगे कैसे ?
शब्दों में कद्र नहीं दूसरों की अगर
अपने अहसासों को इमोजी से दिखा पाओगे कैसे ?
सूरत निखारने में तू लगा, आसमां चांद तारे तेरी चाहत हैं
बंद दीवारों में बिना मेहनत के, रूह को सँवारोगे कैसे ?

स्वच्छ भारत का लक्ष्य

अंकुर सिंह
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

किशोरों ने ठाना है भारत को
स्वच्छ बनाना है–2

आओ सब चले साथ मिल साथियों
एक स्वर्णिम इतिहास रचने की ओर
अब न रुकना है, न थकना है।
भारत को स्वच्छ बनाना है।

जो सोचा है अब वो हर हाल में करके दिखाऐंगे।
इस भारत देश का नया इतिहास लिखना है।
हरे भरे भारत का
पावन अभियान चलाना हैं।
भारत को स्वच्छ बनाना है।

चलो उठ खड़े हो किशोरो
अब कुछ नया कर दिखाना है।
रचेंगे एक नया स्वर्णिम इतिहास
सफाई के इस अभियान में
कर गर्वित हर मानव की सोच
इस देश में नया बदलाव लाना है।
चलो किशोरो अब कुछ नया कर दिखाना है।
भारत को स्वच्छ बनाना है।

धर्म का स्वरूप

कृष्णपाल सिंह
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)

धर्म एक विज्ञान है
मनुष्यत्व की पहचान है
कर सका सदुपयोग जो
सच्चा वही इन्सान है
मूल्यों से जो परिपूर्ण है
वो धर्म ही सम्पूर्ण है
हर धर्म का जो सार है
ब्रह्माण्ड का उद्धार है
धर्म है बहती नदी
सागर में जाके एक हैं
धर्म की राहें अलग
पर ध्येय सबका एक है
धर्म आचरण का विषय
प्राणी अनुभवों का सार है
इन प्राणियों की भिन्नता में
धर्म अपरम्पार है
आत्मा के जैसा सूक्ष्म भी
ब्रह्माण्ड सा विस्तार है
स्थिर है जिसकी प्रकृति
ये धर्म है दस लक्षणी
अस्तेय सत्य, दम, क्षमा,
अक्रोध, धैर्य, पवित्रता
इन्द्रिय, निग्रह, ज्ञान व विवेक में
होती है जब समरूपता
इन लक्षणों के योग में
देवत्व का है रास्ता
अ, ऊ और ष (आऊम) का योग है
जो सृष्टि का संयोग है।
एमन, ओम, आमीन, अलम
तालू, ओठ, कंठ का संयम
सार बहुत ही प्रगाढ़ है
ये धर्म का विस्तार है
ये धर्म का विस्तार है
फैला जो सब संसार है।

कुछ अलग करना होगा

शैलेन्द्र वर्मा
बी.एससी. (तृतीय वर्ष)

मेहनत तो सब करते हैं
पर तुम्हें कुछ अलग करना होगा,
अपनी मंजिल को पाने के लिए
निश्चित कुछ बेहतर करना होगा

चुनौतियाँ आनी लाज़मी हैं जिंदगी में...
हर हालत में डटकर खड़ा रहना होगा
कोई कितना भी रोकना चाहे तुम्हें उस पल
पीछे मुड़कर नहीं देखना होगा

मेहनत तो सब करते हैं
तुम्हें कुछ अलग करना होगा।

निराशा भी मिल सकती है, कई बार तुम्हें
पर हार मानकर ऐसे बैठना नहीं होगा
गलतियाँ, भूल, चूक हो जाती है अनजाने में
पर शाम ढले घर वापस हर हाल में लौटना होगा

मेहनत तो सब करते हैं
पर तुम्हें कुछ अलग करना होगा।

समय

प्रशान्त कुमार
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

तुम तो अपने अन्दाज में चलो
दूसरों से तुम्हे क्या लेना देना
ये वक्त–वक्त की बात है
आज हँसना है तो कल रोना

दूसरों की परवाह करके भी क्या फायदा
समय के साथ लोग अपनों को भी भूल जाते हैं
और दिखावा तो ऐसे करते हैं
जैसे–कुछ हुआ ही नहीं हो

इन्सान को समय के साथ बदल जाना चाहिए
क्योंकि ये वक्त है जनाब
इसका कोई भरोसा नहीं है
आज किसी और का है
तो कल किसी ओर का होगा।

वक्त–वक्त की बात है...
ये कब किस के साथ है...
अपनी किस्मत अपने हाथों लिखो
बस सब कहने को ही साथ हैं............

मीठे अंगूर

एक भूखी लोमड़ी अंगूर के बाग में आई। रसभरे पके अंगूरों के गुच्छे देख उसकी भूख और बढ़ गई। लाख प्रयत्न करने पर भी अंगूर उसकी पहुँच से बाहर थे। कुछ सोचकर वह बाग से बाहर निकली तो भेड़िये ने कहा 'क्यों लोमड़ी बहिन, क्या अंगूर खट्टे हैं?' 'अभी खाये नहीं हैं भइया। खाकर अवश्य बताऊँगी अंगूर खट्टे हैं या मीठे।' कहकर लोमड़ी चली गई। थोड़ी देर बाद वही लोमड़ी आठ–दस अन्य लोमड़ियों के साथ बाग में आई। गोल बनाकर एक के ऊपर एक चढ़कर हर लोमड़ी ने बारी–बारी से छक कर अंगूर खाये। जाते समय भेड़िये को उस लोमड़ी ने बतलाया–'भैया, अंगूर बहुत स्वादिष्ट हैं, पर इन्हें खाने के लिये अपनों में एकता और सहकार होना आवश्यक है।'

किताबों से दोस्ती

आरिध्या गुबरेले
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

किताबें जो हमें हमसे मिलातीं
खुद की खुद से पहचान करातीं
लाख रहो तुम इस दुनिया से दूर
बस पढ़ते रहो इन किताबों को खूब
झलक तुम्हें इस दुनिया की
अपने आप नजर आ जायेगी
इस दुनिया में जाए बिना ही
इस दुनिया की पहचान आ जाऐगी
मत बनाओ किसी से तुम यारियां
इन किताबों से बना के रखो तुम नजदीकियां
किताबें हर पल एक नया सा एहसास देती हैं
बस तुम इन्हें अपना मानकर तो देखो
वो तुम्हें तुम्हारी मंजिल से आगे तक पहुँचा देती हैं
बिना पंखों के इन किताबों से उड़ना सीख जाओगे
आसमान की सैर पल–दो–पल में कर लौट आओगे
इन किताबों से न जाने कितना सीख जाओगे
बस दुनिया की भीड़ में अपनी अलग पहचान बनाके दिखा
क्या रखा है लोगों की बातों में
कुछ करना है हट के अगर
तो मन लगाकर देखो इन किताबों में।

सुन लो हिन्दुस्तान

डॉ. नीता गुप्ता
असि0 प्रो0, अंग्रेजी विभाग

मैं घर में पढ़ लूं रामायण
तुम घर में पढ़ो कुरान
मैं घर में कर लूं आरती
तुम घर में करो अजान
नहीं निकलना है घर से
यह सुन लो हिन्दुस्तान
बचा लो अपनी जान
रखना अपना ध्यान

लॉकडाउन की कीमत को जानी है दुनिया सारी
बनी नहीं कोई दवा इसकी ऐसी है यह बीमारी
इस छोटे से विषाणु से हम सब रखें अपना ध्यान
मैं घर में पढ़ लू रामायण
तुम घर में पढ़ लो कुरान
सुन लो हिंदुस्तान

चीन ने खेला दुनिया भर में देखो कैसा खेल
कोरोना वायरस के आगे सारे मजहब फेल
मंदिर मस्जिद सुनसान पड़े हैं, गुरुद्वारे हैं वीरान
मैं घर में पढ़ लूं रामायण, तुम घर में पढ़ लो कुरान
सुन लो हिंदुस्तान
रखना अपना ध्यान

बीत चुकी है नवरात्रि, चल रहा है अब रमजान
घर में ईद मना लेना पर रखना अपना ध्यान
मैं घर में पढ़ लूं रामायण
तुम घर में पढ़ लो कुरान
सुन लो हिंदुस्तान
रखना अपना ध्यान

धैर्य टूट चुके लोगों के और टूट चुका है सब्र
लगता है घर से बाहर निकलेंगे हम कब
नहीं दिखाएं जल्दबाजी तो सुखद होंगे परिणाम
मैं घर में पढ़ लूं रामायण तुम घर में पढ़ लो कुरान
सुन लो हिंदुस्तान रखना अपना ध्यान

जिम्मेदारी एक मिली है हम सबको, उसका फर्ज निभाएं
खुद भी इससे बचना है और अपनों को भी बचाएं
लॉकडाउन पालन करके अपनों का रखो ध्यान
मैं घर में पढ़ लूं रामायण
तुम घर में पढ़ लो कुरान
सुन लो हिंदुस्तान रखना अपना ध्यान

कोरोना से जो लड़ रहे उनका करो सम्मान
यह वो योद्धा हैं जो हमें बचाने की खातिर, दे रहे अपनी जान
नतमस्तक होना उनके समक्ष
जो हो चुके बलिदान
मैं घर में पढ़ लूं रामायण
तुम घर में पढ़ लो कुरान
सुन लो हिंदुस्तान
रखना अपना ध्यान

हिन्दी सी तकदीर

लेखक–मुहम्मद जुनैद
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

मीरा, केशव, जायसी, तुलसी, सूर कबीर।
किस भाषा की है भला, हिन्दी सी तकदीर।।
शब्द–शब्द संवेदना, अक्षर–अक्षर प्यार।
हर सुख से सम्पन्न है, हिन्दी सा संसार।।
अंकित जिनकी रोटियों पर, हिन्दी का है नाम।
हिन्दी उनके वास्ते, शब्द एक बेदाम।।
हिन्दी तो छोड़ी मगर, बन न सके अंग्रेज।
एक मुखौटा उम्र भर, रखते रहे सहेज।।
कथनी के कुछ अर्थ हैं, करनी के कुछ अर्थ।
सौ–सौ हिन्दी दिवस भी, हैं ऐसे में व्यर्थ।।
अरे परिन्दे छोड़कर, निज बोली अनमोल।
कब तक बोलेगा भला, तू उधार के बोल।।

अनूठा सूत्र

अर्जुन ने एक बार बाँसुरी से पूछा– "सुभगे! तुम्हें कृष्ण स्वयं हर समय ओंठों से लगाए रहते हैं। देखो हम सब उनकी कृपा पाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं, परंतु सफल नहीं होते; जबकि तुम बिना प्रयत्न किए ही उनके ओंठों पर रहते हो।"

"बिना प्रयत्न किए नहीं अर्जुन!" मुरली बोली–"मैंने भी प्रयत्न किया है। जानते हो मुझे मुरली बनने के लिए अपना असली रूप ही खो देना पड़ा है।"

अर्जुन को बात तब समझ में आई। बाँसुरी अपने आप में खाली थी। उसमें स्वयं का कोई स्वर नहीं गूँजता था। बजाने वाले के ही स्वर बोलते थे। बाँसुरी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह कभी बाँस रह चुकी है; क्योंकि न तो उसमें कोई गाँठ थी और न कोई अवरोध । अर्जुन को भगवान का प्यार पाने का अनूठा सूत्र मिल गया।

हिन्दी साहित्य परिषद : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–20, 2020–21

डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी
असि0 प्रो0, हिन्दी विभाग

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई के हिन्दी विभाग में संचालित हिन्दी साहित्य परिषद के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखते हुए उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पाठ्येत्तर गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों में स्नातक एवं परास्नातक के विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता रहती है। परिषद का गठन कक्ष संख्या आठ में दिनांक 28 सितम्बर 2019 को किया गया। पूरे सत्र में समस्त विद्यार्थियों ने सहयोगात्मक रूख के साथ समस्त कार्यक्रमों में भागीदारी की। 21 अक्टूबर 2019 को आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता, 20 नवम्बर 2019 को आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान छात्र–छात्राओं ने प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त 09 दिसम्बर 2019 को पूर्व विभाग प्रभारी डॉ. (श्रीमती) नीलम मुकेश ने "हिन्दी साहित्य में महिला विमर्श" विषय पर एक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने बताया कि सृष्टि के आरम्भ से ही महिलाओं ने अपनी जिम्मेवारियों को बखूबी निभाया है और आज भी निभा रहीं हैं। अंतर केवल यह आया है कि वे अब अपने आप को निरीह और मजबूर न समझकर आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी मानने लगीं हैं।

सत्रांत में आयोजित समापन समारोह दिनांक 12 फरवरी 2019 को कक्ष संख्या आठ में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में परास्नातक एवं स्नातक के छात्र–छात्राओं सहित समस्त विभागीय अध्यापक उपस्थित रहे। छात्र–छात्राओं ने अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन छात्रा काजल मिश्र (अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य परिषद) ने बड़ी दक्षता के साथ किया। इस अवसर पर विभाग प्रभारी डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय ने कहा कि आप लोग महाविद्यालय के वरिष्ठ और अनुशासित विद्यार्थी हैं अतः पूरे सत्र में आप लोगों ने अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन बखूबी किया। पूर्व विभाग प्रभारी डॉ. (श्रीमती) नीलम मुकेश ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे महाविद्यालय में छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक है, इस कारण छात्राएं, छात्रों की तुलना में ज्यादा जिम्मेवार ठहरतीं हैं। व्यवहारिक जीवन में भी छात्राएं पारिवारिक और वाह्य जगत में अब अपनी जिम्मेवारी को बखूबी समझने लगीं हैं। कार्यक्रम के अन्त में संबोधित करते हुए परिषद संयोजक डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी ने कहा कि जीत उसी की होती है जो प्रयास करता है। बिना प्रयास के कोई भी सफलता हमारी झोली में आकर स्वयं नहीं गिरती। साथ ही उन्होंने विभाग की ओर से समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। छात्रों ने भी सत्र में चली गतिविधियों से प्राप्त अनुभवों को अपने सहपाठियों संग बांटा और परिषद में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों से होने वाले अपने व्यक्तित्व विकास को भी अनुभव किया। साथ ही यह भी स्वीकार किया कि समय–समय पर आयोजित होने वाली व्याख्यानमाला से अनेक गंभीर पहलुओं को समझने का अवसर मिला। परास्नातक (पूर्वार्द्ध) के छात्र–छात्राओं ने परास्नातक (उत्तरार्द्ध) के छात्र–छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की और शिक्षकों से आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात अल्पाहार वितरित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में छात्र–छात्राओं ने एक–दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए विदा ली।

संस्कृत साहित्य परिषद् : गतिविधियाँ

सत्र–2019–2020, 20–21

डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य
असि० प्रो०, संस्कृत विभाग

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई के संस्कृत विभाग का बड़ा ही समृद्ध और स्मरणीय इतिहास रहा है। यहां के अध्येता आज भारत के बड़े संस्थानों में अध्ययन के साथ–साथ विभिन्न पदों पर आसीन होकर संस्कृत साहित्य की गौरवपूर्ण परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

डी.वी. कॉलेज के संस्कृत विभाग में विगत कई वर्षों से शैक्षणिक पद रिक्त थे जिसके कारण संस्कृत साहित्य का पठन–पाठन बाधित होने से विभाग भी लगभग शून्य हो गया था। अभी साल 2018 के अन्त में डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य की नियुक्ति असिस्टेण्ट प्रोफेसर के पद पर होने से विभाग में कक्षाओं और अध्ययन–अध्यापन का क्रम निरन्तरता के साथ चलने लगा है।

विभाग के सुचारु रूप से गतिशील होने के कारण सत्र 2019–20 के बी.ए. के प्रवेश में संस्कृत साहित्य पढ़ने वालों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। बी.ए. प्रथम वर्ष में कुल 75 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया जिसकी विगत वर्ष कुल 03 संख्या थी।

दिनांक 06–11–2019 को परिषद् का गठन

कई वर्षों के बाद विभाग के पुनः प्रारम्भ होने से संस्कृत साहित्य परिषद् 2019–20 का गठन दिनांक 06–11–2019 को अत्यन्त उत्साह के साथ किया गया। परिषद् का गठन एवं कार्यकारिणी का सर्वसम्मति से निर्वाचन डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य की देखरेख में चुनाव अधिकारी डॉ. कृपाशंकर यादव, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग द्वारा किया गया। पदाधिकारियों की सूची इस प्रकार है–

क्र.सं.	पदनाम	पदाधिकारी	कक्षा
1.	अध्यक्ष	भावना शुक्ला	बी.ए. द्वितीय वर्ष
2.	उपाध्यक्ष	चन्द्रकान्त	बी.ए. प्रथम वर्ष
3.	महामंत्री	आस्था वाजपेई	बी.ए. प्रथम वर्ष
4.	संयुक्त मन्त्री	शिवम्	बी.ए. प्रथम वर्ष
5.	कोषाध्यक्ष	शिवांगी	बी.ए. प्रथम वर्ष

6. कार्यकारिणी सदस्य :

1. नीलम　2. सुमित यादव　3. रोहिणी
4. ब्रजराज सिंह　5. रूपा　6. दीपक कुमार

परिषद् गठन के समय चुनाव अधिकारी ने परिषद् के महत्व और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह उपक्रम संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों को निरन्तर गतिशील और शैक्षिक रूप से समृद्ध करने का काम करेगा।

परिषदीय कार्यक्रम–

प्रथम कार्यक्रम के रूप में परिषद् के गठन के ठीक बाद दिनांक 14.11.2019 को बी.ए. प्रथम वर्ष और बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राओं के बीच परिषद् के द्वारा "निबन्ध लेखन प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था "संस्कृत की वैज्ञानिकता एवं वर्तमान उपयोगिता" इस विषय पर अनेकों विद्यार्थियों ने भाग लेकर निबन्ध लेखन प्रतियोगिता को सफल बनाया। इस अवसर पर उपस्थित हिन्दी विभाग के असिस्टेण्ट प्रोफेसर डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी ने निबन्ध का महत्व और हिन्दी आदि अनेकों भाषाओं के लिए संस्कृत भाषा की उपादेयता के विषय में विद्यार्थियों को बताया। निबन्ध लेखन के बाद संयोजक डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य ने भी वर्तमान आधुनिक सन्दर्भ में हो रहे संस्कृत के विस्तार और उपयोग पर विद्यार्थियों के मध्य चर्चा की।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी :

बी.ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के बौद्धिक उन्नयन और आगामी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के उद्देश्य से परिषद् द्वारा दिनांक 27.11.2019 को "वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी" का आयोजन किया गया जिसमें पाठ्यक्रम से सम्बन्धित परीक्षा के उपयोगी प्रश्नों को समाहित कर प्रतियोगिता हुई। जिसमें 25 प्रश्नों में से 21 प्रश्न प्राप्त कर छात्रा नीलम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रथम–	नीलम राजपूत	21 अंक
द्वितीय–	सोनम वर्मा	19 अंक
	शिवानी यादव	19 अंक
तृतीय–	आस्था वाजपेई	18 अंक
	दीपक पांचाल	18 अंक

इस प्रकार अनेकों विद्यार्थियों ने इसमें भाग लेकर अपने ज्ञान का आकलन किया। इसके साथ ही बी.ए.द्वितीय वर्ष के लिए भी वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी का आयोजन हुआ इसमें द्वितीय वर्ष की एकमात्र छात्रा भावना शुक्ला ने भी अच्छे अंक प्राप्त किए।

गायन कौशल के लिए "संस्कृत गीतगायन" और "सुभाषित पाठ प्रतियोगिता" का भी आयोजन किया गया। इसी बीच संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों ने अन्य विभागों के भी कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय कराया।

संस्कृत साहित्य परिषद् इसी प्रकार से आगे भी विद्यार्थियों के उन्नयन और उनकी प्रतिभा के उत्कर्ष के लिए कटिबद्ध है। विद्यार्थियों को आगामी वर्षों के लिए शुभकामनाएं।

ENGLISH ASSOCIATION : ANNUAL REPORT

SESSION : 2019-20, 2020-21

Dr. Sheelu Sengar
Asst. Prof., English Deptt.

The English Department is determined to stimulate and motivate the young enterprising minds to utilize their imaginative faculties by encouraging them to give free expression to their ideas through the participation in various literary programs organized under the banner of English Association of the college. With the motive of sharpening the literary, aesthetic and communicative skills of the students various literary activities, related to different literary genres have been organized time to time throughout the session.

The activities of English Association for the academic year 2019-20 were started by conducting a "National Level Essay Writing Competition" with the title 'Heartfulness Essay Writing Event (2019), which was organized by United Nation Information Centre (UNIC) of India and Bhutan in collaboration with Shriram Chandra Mission under the banner of English Association in the third week of August 2019 on the topic "All Love is Expansion, All Selfishness is Contraction" (Swami Vivekanand), an interesting topic related with the spreading of love for the ability to live in the society to stengthen the feeling of brotherhood whereas the selfishness is compression which makes anyone self-centered. As the main attraction of the contest was csh prizes so, in this regard, a notice was circulated on 21st August to all the college students inviting their participation in this contest. Near about 25 students in both languages (Hindi and English) submitted their essays within the due time as the dead line for the essay submission was on 7th September 2019 Out of them 4 students from English language and 3 students from Hindi language got the 'Certificate of Merit'

On 4th October 2019, the election of English Association was conducted in a democratic manner aiming at creating a sense of responsibility among the students. Following students were elected as the office bearers for the current academic year

President-Pratima Purwar (M.A. Final)

Vice-President-Shalini Rajpoot (M.A. Final)

Secretary-Sparsh Sharma (M.A. Previous)

Ministers for Cultural Activities-Mohini, Ambreen (M.A.) Previous)

After the formation of association Dr. Alka Rani Purwar, Head of the Departmet delivered a lecture on the topic "The Secret of Success." In her thought-provoking lecture, she said that we should develop our belief system in a positive way because it is our belief system that can break or make anyone. It can make one strongly mental or mentally strong. dr. Atul Prakash Budhoulia, convened the whole programme skillfully while Dr. Sheelu Sengar and Dr. S.M. Yadav share their views on this interesting topic.

A five-day fest 'Ruchi Mahotsava' was held in the college premises from 18th to 22nd january 2020 in the memory of 'Matu Shree Chitra Devi.' During this fest A 'Hobby Collection Exhibition' was organized by the English Department on 22nd January under the banner of Ruchi Mahotsav. The programme started with the ignition of the traditional lamp before the Goddess of Saraswati by the distinct hands of the chief guest Neelesh Kumari (Mahila Thana S.O. Orai), Dr. Harimohan Purwar, Patron of 'Ruchi Mahotsava,' Dr. Devendra Kumar, Honorary Secretary of the Committee of the Management of the college, Shri Anuj Garg, expert guest of the programme, Smt. Sandhya Purwar, special guest of the programe and principal Dr. Taresh Bhatia. Dr. Alka Rani Purwar, H.O.D. of the English Department and co-ordinator of Samaroh Samiti welcomed all the dignitaries by presenting them blooming bouquets of flowers. the exhibition was a great success for it s varied collections. Not only students but teaching and non-teaching staff also displayed their unique collections in the exhibition in which the Stamps collection by Anuj Garg, 3D collection by Smt. Sandhya Purwar and Phillumeny collection by Pratima Purwar were highly appreciated.

Chief guest, Neelesh Kumari in her amiable speech admired the display of students and encouraged them with her warm and motivating words. Dr. Hari Mohan Purwar, in his interactive speech with the students, gave much importance on the need for developing a hobby in our leisure time. However, everybody enjoyed this exhibition and all the participants were awarded with the certificates for their laudable performances. The whole programme was beautifully convened by the programme co-ordinator, Dr. Atul Prakash Budhoulia. Dr. S.M. Yadav contributed thoroughly in managing this big event. Finally, the programme was closed with a vote of thanks by Dr. Sheelu Sengar.

राजनीति विज्ञान परिषद : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–20, 2020–21

डॉ. नगमा खानम
संयोजिका, राजनीति विज्ञान परिषद

विगत कई दशकों से राजनीति विज्ञान विभाग के द्वारा छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु राजनीति विज्ञान परिषद का गठन किया जाता रहा है। इस वर्ष सत्र 2019–20 के लिए दिनांक 8 अक्टूबर 2019 को वर्तमान विभाग प्रभारी डॉ. नमो नारायण की एवं पूर्व–विभागाध्यक्ष डॉ. आदित्य कुमार सक्सेना की उपस्थिति में परिषद की कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें अध्यक्ष–आकाश राजपूत (MA II), उपाध्यक्ष–अमित कुमार (MAI) एवं राज (BAIII), सचिव–अनुरुद्ध प्रताप सिंह (BAIII), उपसचिव–सोनिका सैनी (BAII), कार्यक्रम सचिव–अंकित कुमार व अपर्णा तिवारी (MA I), कोषाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी–सत्येन्द्र गुप्ता (MA II) एवं अन्य कार्यकारिणी सदस्य–नरेन्द्र कुमार (MAI), प्रिंसी सैनी (BAII), राहुल यादव (BA I) मोहित यादव (BA I) शरद यादव (BA) को चुना गया।

राजनीति विज्ञान परिषद के द्वारा पिछले वर्षो की भांति की इस बार भी शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य विषय–बढ़ते यौन अपराध पुलिस और मानवाधिकार रखा गया। परिषद के द्वारा इस सत्र में निम्न कार्यक्रमों का आयोजन कराया गया–

प्रथम, संविधान ज्ञान प्रतियोगिता (11 जनवरी 2020), छात्रों को भारतीय संविधान के बारे में जागरूक करने और उन्हें एक सक्रिय व जागरूक नागरिक बनाने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 50–50 बहुविकल्पीय प्रश्नों के चार सेट बनाए गए। प्रतियोगिता में 200 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। प्रथम स्थान–राहुल याज्ञिक (BAII), द्वितीय स्थान–दीपक राजपूत (BAII) तथा तृतीय स्थान– मोहित यादव (BAII) ने प्राप्त किया।

द्वितीय, निबंध लेखन प्रतियोगिता (11 जनवरी, 2020) : विषय–"बढ़ते यौन अपराध : पुलिस और मानवाधिकार"

प्रथम स्थान–अनिरुद्ध प्रताप सिंह (BAIII) द्वितीय स्थान–राहुल याज्ञिक (BAII), तृतीय स्थान–निशी कुमारी (MAII) ने प्राप्त किया।

तृतीय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती (23 जनवरी, 2020) : कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हरीमोहन पुरवार जी द्वारा की गई जिसके मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध लेखक डॉ. प्रयाग नारायण त्रिपाठी को आमंत्रित किया गया।

चतुर्थ, सर्वेक्षण कार्यक्रम (24–30 जनवरी 2020) :– इस वर्ष बढ़ते यौन अपराध पुलिस और मानवाधिकार विषय पर सर्वेक्षण कराया गया, जिसमें विभाग के विद्यार्थियों ने उरई शहर के विभिन्न मोहल्लों में जाकर अलग–अलग वर्गों के लगभग 300 लोगों का सर्वेक्षण कर उपरोक्त विषय के संदर्भ में उनकी राय मांगी।

पंचम, मानवाधिकार एवं पर्यावरण विज्ञान प्रतियोगिता (1 फरवरी, 2020) :– मानवाधिकार एवं पर्यावरण संरक्षण के संबंध में विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को अनिवार्य विषय के लिए पहले से ही मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करने से इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राहुल साहू (B.Ed), द्वितीय स्थान राहुल याज्ञिक (BAII), तृतीय स्थान शिखा श्रीवास्तव (BAIII) ने प्राप्त किया। षष्ठम, चित्रकला एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता (3 फरवरी, 2020) : इस वर्ष परिषद की कार्यक्रम श्रंखला में इस प्रतियोगिता को पहली बार शामिल किया गया, जिसका विषय–"बढ़ते यौन अपराध : पुलिस और मानवाधिकार" रखा गया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनुप्रिया त्रिपाठी (BAI), द्वितीय स्थान–हुजैफा आलम (BAII), तृतीय स्थान–आकाश राठौर (BAII) ने प्राप्त किया। सप्तम, प्रदर्शनी कार्यक्रम (8 फरवरी, 2020) : "बढ़ते यौन अपराध : पुलिस और मानवाधिकार" विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती नीलेश कुमारी (थाना प्रभारी, महिला पुलिस थाना, उरई, जालौन) मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित की गई तथा राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के जिलाध्यक्ष श्री संजीव कुमार सक्सेना का भी विशेष आतिथ्य किया गया। परिषद की कार्यक्रम श्रंखला के अंतिम कार्यक्रम के रूप में तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। इसमें प्रथम स्थान–अनिरुद्ध प्रताप सिंह (BAIII), द्वितीय स्थान–राज (BAIII), तृतीय स्थान अंकित रावत (MAII) तथा सांत्वना पुरस्कार–शरद यादव (BAII) ने प्राप्त किया। परिषद का वार्षिक समारोह 10 फरवरी 2020 को डॉ. आदित्य कुमार सक्सेना (पूर्व प्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष) की उपस्थिति में संपन्न किया गया, जिसमें प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं गायत्री परिवार, उरई के आचार्य श्री घनश्याम शर्मा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। विभाग प्रभारी डॉ. नमो नारायण के निर्देशन में राजनीति विज्ञान परिषद के द्वारा कराए गए कार्यक्रमों की महाविद्यालय प्रबंधन समिति और प्राचार्य सहित सभी आचार्यों और गणमान्य अतिथियों के द्वारा भरपूर प्रशंसा की गई।

अमेरिका की एक बूढ़ी औरत के पास एक खेत था, लेकिन उसकी भूमि दलदली थी– उसमें कुछ भी पैदावार नहीं हो सकती थी। उसके पास एक आदमी आया। उसने कहा–"तुम इस खेत का क्या करोगी, इसे मुझे दे दो। यहाँ तो केवल मेंढ़क ही रह सकते हैं।" उस आदमी की बात सुनकर बुढ़िया ने उस भूमि पर मेंढ़क ही पालने शुरू कर दिए। उसने इससे संबंधित तमाम जानकारियाँ हासिल कीं, धीरे–धीरे उसका काम इतना बढ़ गया कि उसने आस–पास की दलदल वाली भूमि खरीदकर एक बड़ा फार्म बना लिया और उसमें भी मेंढ़क पालन प्रारंभ कर दिया। दूर–दूर से उसके मेंढ़कों की माँग आने लगी। जल्दी ही बुढ़िया बहुत धनवान हो गई। जो अवसर को पहचानकर उसका सही उपयोग करते हैं। वे सफलता अवश्य अर्जित करते हैं।

अर्थशास्त्र परिषद : गतिविधियाँ

सत्र–2019–20, 2020–21

श्रीमती वर्षा राहुल
विभाग प्रभारी, अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र विभाग में अर्थशास्त्र परिषद का गठन गतवर्ष की भाँति 06 सितम्बर 2019 को प्रातः 10:30 पर किया गया जिसमें एम.ए. प्रथम व द्वितीय वर्ष के सभी छात्र/छात्राओं ने भाग लिया तथा बी.ए. के तीनों वर्षों के छात्र/छात्रायें भी सम्मिलित रहे। इस परिषद में निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये।

अध्यक्ष	:	पारुल श्रीवास्तव (एम. ए., द्वितीय वर्ष)
उपाध्यक्ष	:	रूपाली पाँचाल (एम. ए., द्वितीय वर्ष)
	:	मोनिका श्रीवास्तव (एम. ए., प्रथम वर्ष)
मंत्री	:	प्रतिमा (एम. ए., प्रथम वर्ष)
संयुक्त मंत्री	:	ऋषभ शर्मा (एम. ए., प्रथम वर्ष)
कार्यक्रम सचिव	:	शिवम (एम. ए., प्रथम वर्ष)
	:	सुरभि मिश्रा (बी. ए., तृतीय वर्ष)

परिषद के गठन का उद्देश्य छात्र/छात्राओं में अभिव्यक्ति, तात्कालिक निर्णय क्षमता, अन्तर्निहित शक्तियाँ, तर्कशक्ति, स्मरण शक्ति एवं व्यक्तित्व की गुणवत्ता में वृद्धि करना होता है जिसके उन्नयन हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थियों के द्वारा किया जाता है, जिसमें विभाग का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है।

निबन्ध प्रतियोगिता– दिनांक 02 दिसम्बर 2019 को अर्थशास्त्र परिषद द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र/छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर निम्न में से किसी एक विषय पर निबंध लिखकर सहभागिता की।

1) महगाँई की समस्या

2) अर्थव्यवस्था पर बढ़ती जनसंख्या का प्रभाव।

3) युवाओं में बेरोजगारी की समस्या।

जिसमें निम्नलिखित छात्रा/छात्राओं द्वारा प्राप्त स्थान निम्नवत् हैं–

1. शुभम् भारती	(एम. ए., द्वितीय वर्ष)	– प्रथम स्थान
2. अजय प्रताप सिंह	(एम. ए., प्रथम वर्ष)	– द्वितीय स्थान
3. वर्षा	(बी. ए., द्वितीय वर्ष)	– तृतीय स्थान

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता–

दिनांक 03 दिसम्बर 2019 को अर्थशास्त्र परिषद के तत्वावधान में आर्थिक विषयों पर आधारित लिखित वस्तुनिष्ठ परीक्षा आयोजित की गई। जिसमें

प्रथम स्थान– 1) शिवि सोनी (बी. ए. प्रथम)

द्वितीय स्थान– 1) लक्ष्मीकान्त (एम. ए. प्रथम)

तृतीय स्थान– 1) मोनिका श्रीवास्तव (एम. ए. प्रथम)

2. अंकुर बाथम (बी. ए. IIIrd)

3) देवेश कुमार (बी. ए. प्रथम) ने प्राप्त किया।

संगोष्ठी– दिनांक 04 दिसम्बर 2019 को अर्थशास्त्र परिषद के अन्तर्गत अंतर्विषयक दृष्टिकोण को संज्ञान में रखते हुए छात्र हित में रक्षा अध्ययन, अर्थशास्त्र, भौतिक विज्ञान एवं एन.सी.सी. विभाग के संयुक्त तत्वाधान में निम्नलिखित विषय–

"जीवन कौशल : आज की आवश्यकता" पर संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें निम्नलिखित छात्र/छात्राओं ने स्थान प्राप्त किये।

प्रथम स्थान– अनिरुद्ध सिंह (बी.ए., तृतीय वर्ष)

द्वितीय स्थान– विवेक कुमार (बी.ए., द्वितीय वर्ष)

तृतीय स्थान– रूपाली पांचाल (एम. ए., द्वितीय वर्ष)

वाद–विवाद प्रतियोगिता–दिनांक 05 दिसम्बर 2019 को अर्थशास्त्र परिषद के अन्तर्गत अंतर्विषय दृष्टिकोण को संज्ञान में रखते हुए छात्र–हित में रक्षा अध्ययन, अर्थशास्त्र, भौतिक विज्ञान एवं एन.सी.सी. विभाग के संयुक्त तत्वाधान में निम्नलिखित विषय "सोशल मीडिया और हमारा दायित्व" पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्र/छात्राओं ने पक्ष–विपक्ष में अलग–अलग निम्न स्थान प्राप्त किये :–

	पक्ष	**विपक्ष**
प्रथम स्थान	रक्षा जादौन	गोपाल
द्वितीय स्थान	विवेक कुमार	देवकीनन्दन
तृतीय स्थान	प्रियंका कुशवाहा	मिनी गुप्ता

पुरस्कार वितरण–दिनांक 08 जनवरी 2020 को अर्थशास्त्र परिषद की ओर से सत्र के अन्त में विजेता छात्र–छात्राओं के लिए पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती वर्षा राहुल ने की। कार्यक्रम का संचालन छात्र अनिरुद्ध सिंह द्वारा किया गया। अन्त में डॉ. कृपाशंकर यादव ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त कर छात्र–छात्राओं को आगामी परीक्षा के लिए प्रेरित किया और कठिन परिश्रम करने को कहा।

भूगोल परिषद : गतिविधियाँ

सत्र 2019–20, 20–21

डॉ. गौरव यादव
संयोजक, भूगोल परिषद

भूगोल परिषद का गठन– भूगोल विभाग में प्रतिवर्ष की तरह सत्र 2019–20 में भूगोल परिषद का गठन दिनांक 30.11.2019 को M.A. I एवं M.A.II तथा B.A. के विद्यार्थियों किया गया जिसका उद्देश्य छात्रों में बौद्धिक, सामाजिक, तार्किक शक्तियों एवं प्रतिभाओं को सँवारना है।

परिषद के पदाधिकारियों की सूची :–

क्र.सं.	पदाधिकारियों के नाम	पद का नाम	कक्षा एवं वर्ग
1.	सागर शुक्ला	अध्यक्ष	(एम.ए., द्वितीय वर्ष)
2.	वागीशा खरे	उपाध्यक्ष	(एम.ए., प्रथम वर्ष)
3.	वन्दना	सचिव	(एम.ए., द्वितीय वर्ष)
4.	रिशु	उपसचिव	(एम.ए., प्रथम वर्ष)
5.	महरून निशा	कार्या. सदस्य	(एम.ए., द्वितीय वर्ष)
6.	वर्षा दौदेरिया	कार्या. सदस्य	(एम.ए., प्रथम वर्ष)
7.	शिखा श्रीवास्तव	कार्या. सदस्य	(बी.ए., तृतीय वर्ष)
8.	सुरभि मिश्रा	कार्या. सदस्य	(बी.ए., तृतीय वर्ष)
9.	शिवांगी	कार्या. सदस्य	(बी.ए., तृतीय वर्ष)
10.	अक्सा परवीन	कार्या. सदस्य	(बी.ए., तृतीय वर्ष)

परिषदीय कार्यक्रम : 1. भूगोल विभाग में दिनांक 05.12.19 को सभी छात्र/छात्राओं के द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें "पर्यावरणीय प्रदूषण को कैसे नियंत्रण करें" विषय पर विस्तार से चर्चा हुई जिसमें विभाग के पूर्व प्रभारी डा. आर. के. श्रीवास्तव ने छात्रों को प्रदूषण कम करने के अनेक टिप्स दिये। कार्यक्रम में अनेक छात्र/छात्राओं ने अपने विचार रखे तथा कार्यक्रम में डॉ. नमो नारायण, डॉ. साम्या बघेल, डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी आदि लोगों ने छात्रों से प्रश्नोत्तरी की तथा विस्तार से चर्चा की।

2. भूगोल विभाग में दिनांक 28.2.2020 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें M.A.I प्रथम वर्ष के छात्रों का M.A.II के छात्रों ने बैलकम पार्टी का आयोजन किया तथा M.A.II के छात्रों की विदाई एम.ए. प्रथम के छात्रों ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विजय कुमार यादव ने सभी छात्रों को अपने लक्ष्य को पाने के अनेक टिप्स दिये। कार्यक्रम में अनेक छात्रों ने अपने विचार रखे तथा विभाग प्रभारी श्री गौरव यादव ने छात्रों को भूगोल विषय में रुचि के लिए अनेक लक्ष्यों को उजागर किया।

शैक्षणिक सर्वे कैम्प एवं भ्रमण (टूर)

डॉ. मलिखान सिंह
असि. प्रो., भूगोल विभाग

1. एम.ए. प्रथम वर्ष (15.01.20 से 26.01.20)

अनिवार्य शैक्षणिक टूर उपरोक्त तिथियों में कर्नाटक राज्य के बैंगलुरू, मैसूर तथा तामिलनाडू राज्य के ऊटी तथा केरल राज्य के कोजीकोड (कालीकट) एवं निकटवर्ती क्षेत्रों का धरातल, अपवाह तंत्र, प्राकृतिक वनस्पतियाँ, कृषि, उद्योग, जनसंख्या एवं बस्तियाँ का विस्तार से अध्ययन किया। इस टूर का सफल मार्गदर्शन डॉ. मलिखान सिंह ने किया।

2. एम.ए. द्वितीय वर्ष (12.02.20 से 21.02.20)

अनिवार्य शैक्षणिक सर्वे कैम्प उपरोक्त तिथियों में हिमांचल प्रदेश के धर्मशाला, कांगड़ा जनपद तथा पंजाब के पठानकोट, अमृतसर जनपद तथा जम्मू कश्मीर के जम्मू जनपद तथा समीपवर्ती क्षेत्रों की भूमि की बनावट जलप्रवाह, वनस्पतियाँ, पर्यटकट, वागा वॉर्डर, हिमालय रेंज कृषि आदि का विस्तार से सर्वे किया तथा मानचित्रों की सहायता से विवरण दिया। इस सर्वे कैम्प का कुशल मार्गदर्शन श्री गौरव यादव एवं डॉ. मलिखान सिंह ने किया तथा कैम्प में सामग्री हेतु नवीन पाटकर ने सहयोग किया।

3. बी.ए. तृतीय वर्ष (19.12.19 से 24.12.19 तक)

अनिवार्य शैक्षणिक टूर उपरोक्त तिथियों में छिन्दवाड़ा, पंचमढ़ी मध्य प्रदेश के जनपदों में आयोजित किया गया जिसमें छात्रों ने भौम्याकार, जलप्रवाह, नदियों का मोड़, जलवायु, मिट्टियों, कृषि उद्योग, जनसंख्या, बस्तियों का विस्तार से अध्ययन किया। इस टूर का कुशल मार्गदर्शन श्री गौरव यादव तथा डॉ. मलिखान सिंह ने किया ।

संगीत परिषद : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–20, 20–21

डॉ. के.के. निगम
संयोजक, संगीत परिषद

नवीन सत्र के प्रारम्भ में महाविद्यालय के संगीत विभाग परिषद का गठन चुनाव द्वारा किया गया। डॉ. अलकारानी पुरवार की अध्यक्षता में व डॉ. के.के. निगम की देखरेख में सद्भावनापूर्ण माहौल में आपसी सामंजस्य के साथ सर्वसम्मति से सत्र 2019–20 के लिये परिषद गठित की गई जिसमें सोनम सविता M.A.(F) अध्यक्ष रीना ओमरे M.A. (F) उपाध्यक्ष, दीक्षा कटारे B.A.II सचिव, सत्यम अवस्थी, आकाश शुक्ला एवं सौम्या उदैनिया सम्मानित सदस्य चुने गये।

09 फरवरी शनिवार को बसंतोत्सव मनाया गया जिसमें पूजन के साथ मातु शारदे का स्तवन वन्दनाओं के साथ हुआ तथा सत्यम अवस्थी, दीक्षा कटारे, सोनम सविता आदि ने गायन कर माहौल को संगीतमय कर दिया। इस अवसर पर प्राचार्य की आशीषदायी उपस्थिति से छात्र–छात्राओं का मनोबल उत्तरोत्तर बढ़ा।

कार्यक्रम में डॉ. शीलू सेंगर, डॉ. गौरव यादव, डॉ. डी.के. गुप्ता, डॉ. शरत श्रीवास्तव, डॉ. सर्वेश कुमार शाडिल्य, डॉ. नगमा खानम व डॉ. नीति कुशवाहा की उपस्थिति प्रशंसनीय रही।

इतिहास परिषद : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–20, 2020–2021

डॉ. मंजू जौहरी
संयोजिका, इतिहास विभाग

दिनांक 5 अक्टूबर 2019 को विभाग प्रभारी डॉ. मंजू जौहरी द्वारा एम.ए. प्रथम व द्वितीय वर्ष एवं बी.ए. तीनों वर्ष के छात्र/छात्राओं की उपस्थिति में इतिहास परिषद का गठन हुआ जिसमें अध्यक्ष– सुमित सक्सैना (एम.ए.II) उपाध्यक्ष–शिवा अली (एम.ए.II) महामंत्री–शिवम झा (एम.ए.I) कोषाध्यक्ष–अलीजा (एम.ए.I) सर्वसम्मति से मनोनीत हुए।

दिनाँक 21 अक्टूबर 2019 को एम.ए. प्रथम व द्वितीय वर्ष व बी.ए. द्वितीय व तृतीय वर्ष के छात्र/छात्राआं की टीम बनाकर 'प्रश्न–मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें एम.ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को प्रथम स्थान, बी.ए. तृतीय वर्ष को द्वितीय स्थान व एम.ए. द्वितीय वर्ष को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

दिनांक 16 नवम्बर 2019 को 'जलियाँवाला बाग हत्याकांड' की शताब्दी पूर्ण होने पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें डी.वी. कालेज की इतिहास विभाग की पूर्व विभाग प्रभारी डॉ. शारदा अग्रवाल द्वारा विषय से सम्बन्धित ओजस्वी व्याख्यान दिया गया। अन्त में विभाग प्रभारी डॉ. मंजू जौहरी द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

21 जनवरी 2020 को विभाग द्वारा 'सिक्का प्रदर्शनी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्य भी हरिशंकर रावत (मुख्य अतिथि), अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेन्द्र कुमार, उपाध्यक्ष डॉ. हरिमोहन पुरवार, श्रीमती संध्या पुरवार व प्राचार्य द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. सर्वेश शांडिल्य (संस्कृत–विभाग) द्वारा किया गया व विभाग प्रभारी डॉ. मंजू जौहरी द्वारा अतिथियों का स्वागत व कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी। सभी छात्र/छात्राओं द्वारा सिक्कों का विशेष संग्रह प्रदर्शित किया गया। अन्त में छात्र/छात्राओं को प्रमाण–पत्र वितरित कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

दिनांक 7 जनवरी 2021 को 'विवेकानन्द जी के विचारों की प्रासंगिकता' विषय पर एक तत्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें एम.ए. व बी.ए. के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। अनेक छात्र/छात्राओं ने उपर्युक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। अन्त में पुरस्कार वितरण करके कार्यक्रम का समापन किया गया।

Zoology Association : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–2020, 2020–21

डॉ. आलोक पाठक
असि0 प्रो0, जन्तु विज्ञान विभाग

नवीन सत्र के 2019–20 जुलाई, अगस्त माह में महाविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग में एम.एस. सी. के विद्यार्थियों का भी प्रवेश प्रक्रिया सम्पन्न हुई। सत्र के प्रारम्भ में ही विभाग में तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए एक स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने सत्र 2018–2019 में एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान) पूर्ण करने वाले अपने वरिष्ठ साथियों को विदाई भी दी। यह कार्यक्रम प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में विभाग प्रभारी डॉ0 विजय कुमार यादव ने विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति प्रेरित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। संस्थापक अध्यक्ष डॉ0 विजय पाठक, डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव एवं प्रभात कुमार ने आशीष सम्बोधन दिया। स्वागत और विदाई के इस कार्यक्रम में विभाग परिवार के नवीन सदस्य डॉ. ब्रजनारायण व डॉ. रश्मि सिंह भी उपस्थित रहे।

सत्र के प्रारम्भ में ही विभाग में एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर व प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों की Zoology Association 2019–2020 का गठन डॉ. मनोज कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें कु. आस्था तिवारी (अध्यक्ष), अंकित राजपूत (उपाध्यक्ष) एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर से व कु. समता पटेल (सचिव), फुरकान (संयुक्त सचिव) एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर से लोकतांत्रिक विधि से चयनित हुए। (Zooloy Association) 2019–20 के चयनित पदाधिकरियों को शुभकामनाएँ देते हुए भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि Zoology Association के विद्यार्थी अपने विषय सम्बन्धी समस्याओं को आपसी समझ से दूर करते हुए समय–समय पर सामाजिक ज्वलन्त विषयों पर सेमिनार का भी आयोजन करें।

सितम्बर माह में महाविद्यालय में श्री रामचन्द्र मिशन एजुकेशनल ट्रस्ट के द्वारा 'प्रेम विस्तार है, स्वार्थ संकुचन–स्वामी विवेकानन्द' निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेने वाली एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा दीक्षा मारवाड़ी को सफल प्रतिभागी प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया।

पाठ्यक्रम गतिविधियों के अन्तर्गत प्रथम व तृतीय सेमेस्टर में 01.10.2019 से 18.10.2019 तक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के मध्य में नवरात्रि–दशहरा अवकाश के साथ विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रम के विभिन्न सेमिनार शीर्षक को प्रस्तुत करने का और पर्याप्त समय मिला।

विगत वर्ष की भाँति 05.11.2019 को महाविद्यालय में पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक था। 'ईमानदारी–एक जीवन शैली', इस भाषण प्रतियोगिता में तृतीय सेमेस्टर की छात्रा दीक्षा मारवाड़ी ने द्वितीय सांत्वना स्थान प्राप्त किया, जिसके लिए छात्रा को पुरुस्कृत भी किया गया।

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एम.एस.सी. विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसमें सभी छात्र–छात्रायें 17.11.2019 को मत्स्य बीज उत्पादन केन्द्र कोंच निरीक्षण के लिए गये। इस शैक्षिक भ्रमण में मत्स्य केन्द्र में उपस्थिति श्री सियाशरण कुशवाहा ने विद्यार्थियों को मत्स्य पालन की विस्तृत जानकारी दी। श्री कुशवाहा ने बताया कि 18 जून से केन्द्र में कतला, रोहू, नैन, सिल्वर कार्प व ग्रास कार्प मछलियों को Ovatide injection (Gonodotrophin Hormone) द्वारा कृत्रिम वर्षा के वातावरण में प्रजनन के द्वारा Finger lings (Fish Baby) तैयार किया जाता है। इस प्रकार अगस्त तक 30–35 लाख बीज तैयार हो जाते है जिन्हें जालौन, झाँसी, ललितपुर, बाँदा, चित्रकूट, औरैया, इटावा, आगरा, फिरोजाबाद जिलों में बेचा जाता है। यह एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष), डॉ. विजय कुमार यादव (विभाग प्रभारी) डॉ. आलोक पाठक, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता, डॉ. बृज नारायण, डॉ. रश्मि सिंह, श्री गोपाल कृष्ण, श्री राघवेन्द्र व श्री राजकुमार के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

जनवरी माह में महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी समिति के उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार जी की मातुश्री चित्रा देवी परवार की स्मृति में पाँच दिवसीय 'रुचि महोत्सव' का आयोजन किया गया। इस श्रृंखला में 20.01.2020 को जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा विभाग प्रभारी व सभी विभागीय सदस्यों के मार्गदर्शन में संख एवं जन्तु प्रतिरूप प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें बी.एस.सी. व एम.एस.सी. के अनेक विद्यार्थियों ने शंख, मॉडल व जन्तु प्रतिरूप का प्रदर्शन किया एवं सक्रिय भाग लिया। इस प्रदर्शनी में संग्रह विशेष के रूप में डॉ. पुरवार जी के अनूठे शंख संग्रह के अवलोकन का हम सभी को अवसर मिला। इस प्रदर्शनी में डॉ. देवेन्द्र कुमार जी (अवैतनिक मंत्री), डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव जी (पूर्व विभागाध्यक्ष) एवं श्री सन्तोष कुमार जी (सी.ओ. सिटी, उरई) की गरिमामय उपस्थिति ने हम सभी का मनोबल बढ़ाया। प्रदर्शनी के अन्त में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देर शंख एवं जन्तु प्रतिरूप संग्रह के लिए सम्मानित किया गया।

इस प्रकार विभिन्न गतिविधियों के साथ सत्र 2019–2020 अपने अन्तिम पड़ाव पर दस्तक दे रहा था, उससे पहले ही मार्च में कोरोना महामारी के कारण सरकार द्वारा लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। इस दौरान एम.एस.सी. के विद्यार्थी विभाग के शिक्षकों से अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समस्याओं को ऑनलाइन कार्यक्रम द्वारा हल कर रहे हैं। बहुत जल्द ही हम सभी इस कोरोना महामारी से मुक्त होंगे, इसी उम्मीद के साथ सत्र 2019–2020 की सेमेस्टर परीक्षाओं व उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी जन्तु विज्ञान स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विभाग की ओर से ढेरों शुभकामनाएँ।

कोरोना महामारी के कम होने एवं लॉक डाउन के खुलने पर महाविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग में एम–एस.सी. के विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ हुआ, सत्र के प्रारम्भ में ही तृतीय सेमेस्टर के छात्र/छात्राओं ने प्रथम सेमेस्टर के छात्र/छात्राओं के लिए एक स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें उन्होने सत्र 2019–2020 के वरिष्ठ विद्यार्थियों को विदाई भी दी। यह कार्यक्रम भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव के आतिथ्य, प्रभारी प्राचार्या डॉ. मन्जू जौहरी की अध्यक्षता एवं विभाग प्रभारी डॉ. विजय कुमार यादव के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए डॉ. मन्जू जौहरी ने कहा कि जब आप किसी कार्यक्षेत्र में जायें तो वहां का नियुक्ति पत्र या किसी भी प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि विभाग में जरूर दें, जिससे विभाग एक रिकार्ड तैयार कर सके और यह महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित हो सके कि हमारे बच्चे इतने अच्छे पदों पर कार्यरत हैं।

सत्र के प्रारम्भ में ही विभाग में एम.एस–सी. तृतीय सेमेस्टर व प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों को लेकर Zoology Association 2020–2021 का गठन डॉ मनोज कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

जिसमें फुरकान (अध्यक्ष), समता पटेल (उपाध्यक्ष) एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर से व आस्था चतुर्वेदी (सचिव), सत्यम पाल (संयुक्त सचिव) एम.एस–सी. प्रथम सेमेस्टर से लोकतांत्रिक विधि से चयनित हुए। Zoology Association 2020–2021 के चुने गये पदाधिकारियों को शुभकामनायें देते हुए भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने कहा सभी विद्यार्थी आपसी सामन्जस्य से अपनी पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं को दूर करें और विभाग में विभिन्न विषयों पर सेमिनार का आयोजन करें। ऐसोशियेशन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा अपने दायित्वों का सफल निर्वहन तभी होगा।

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एम.एस–सी. विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमें सभी विद्यार्थी 15/12/2020 को मत्स्य बीज उत्पादन केन्द्र, कोंच शैक्षिक भ्रमण के लिये गये। भ्रमण के दौरान मत्स्य केन्द्र में उपस्थित श्री सियाशरण कुशवाहा ने बताया कि मत्स्य बीज का उत्पादन जून अन्त से अगस्त माह तक प्रचुर मात्रा में होता है। इन मत्स्य बीजों में रोहू, कतला, नैन, ग्रास कार्प व सिल्वर कार्प प्रमुख होती है। मत्स्य विभाग कोंच से 30 लाख रुपये के Fingerling Fish Baby प्रति वर्ष बेचे जाते है। कुशवाहा जी ने मत्स्य पालन की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि इस व्यवसाय में कोई भी रुपये 8–10 लाख लगाकर व्यक्तिगत रूप से भी मत्स्य पालन कर सकता है। यह शैक्षिक भ्रमण डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष), डॉ. विजय कुमार यादव (विभाग प्रभारी), डॉ. आलोक पाठक, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता, डॉ. बृजनारायण, डॉ. रश्मि सिंह , श्री गोपालकृष्ण, श्री राघवेन्द्र राजपूत व श्री राजकुमार के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

पाठ्यक्रम गतिविधियों के अन्तर्गत एम.एस–सी. प्रथम व तृतीय सेमेस्टर में 16/12/2020 से 26/12/2020 तक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के विभिन्न शीर्षकों को भाषा और लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करते है। कुछ छात्र अपने सेमिनार का पावर प्वाइन्ट प्रेजेन्टेशन द्वारा भी प्रस्तुत करते हैं।

महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी समिति के उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार जी के विशाल संग्रह में से जीवाश्म रत्न एवं पत्थर प्रदर्शनी के अवलोकन का सौभाग्य 16/03/2021 का एम.एस–सी. प्रथम व तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों का प्राप्त हुआ, डॉ. पुरवार जी ने जीवाश्म रत्न व पत्थरों की रोचक जानकारी देते हुए बताया कि यह विभिन्न नदियों से संग्रहीत किये गये हैं, जिसमें प्राकृतिक कला कृतियाँ अंकित है। इस अनूठे संग्रह के अवलोकन के दौरान विभाग के प्राध्यापक डॉ. आलोक पाठक, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता व डॉ. बृजनारायण उपस्थित रहे।

दि. 20/03/2021 को 'विश्व गौरैया दिवस' पर विभाग में एम.एस–सी. विद्यार्थियों ने एक सेमिनार Love Sparrow का आयोजन किया। इस सेमिनार में गौरैया की विलुप्ति के कारण, बचाव और पारिस्थितिक तंत्र में महत्व पर विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इस सेमिनार को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. राम प्रताप जी ने कहा कि गौरैया हमारी संस्कृति का एक हिस्सा है क्योंकि इसका वर्णन हमारी लोक कथाओं में मिलता है, इसके बचाव का हम सभी को प्रयास करना चाहिए, विभाग प्रभारी डॉ. विजय कुमार यादव जी ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि यदि आप लोगों के घर पर स्थान हो तो पेड़ पौधे लगाकर इस विलुप्त होती चिड़िया के घोंसले बनाने में मदद कर सकते हैं।

कोरोना महामारी के बढ़ते प्रभाव के कारण अप्रैल माह में विभाग में Online Classes का प्रारम्भ किया गया, जो अनवरत जारी है तथा विद्यार्थी ऑनलाइन क्लासेस द्वारा अध्ययन कर रहे हैं। समय के साथ विकराल होती इस महामारी ने महाविद्यालय परिवार के अनेक सदस्यों को हमसे छीन लिया। जन्तु विज्ञान दुख की इस घड़ी में विभाग परिवार की ओर से भाव भीनी मौन श्रद्धांजलि।

गणित परिषद रिपोर्ट

सत्र 2019–20 एवं 2020–21

डा. सुरेन्द्र सिंह चौहान
प्रभारी, गणित विभाग

सत्र 2019–20 में दिनांक 20–08–2019 को विभाग में लोकतांत्रिक तरीके से गणित परिषद् का गठन किया गया। इस परिषद में विभिन्न पदों के लिए चुने गये पदाधिकारियों के नाम श्री नितेश कुमार (अध्यक्ष), श्री सूर्य प्रताप (उपाध्यक्ष), श्री नीरज कुमार (महामंत्री), श्री रामरूप (संयुक्त मंत्री), कु. अंचल बादल, कु. हलीमा परवीन, श्री विकास मिश्रा, कु. बुसरा परवीन, श्री अमन यादव (सदस्यगण) हैं।

परिषद के गठन के समय डॉ. एस.एस. चौहान, प्रभारी, गणित विभाग एवं डॉ. हरीश श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर, गणित विभाग उपस्थित रहे। इस सत्र में प्रवेश प्रक्रिया के पश्चात् बी.एससी. एवं एम. एससी. की कक्षायें माह अगस्त 2019 में प्रारम्भ की गई। एम.एससी. के छात्र/छात्राओं के विषय से सम्बन्धित सेशनल एवं सेमिनार माह दिसम्बर 2019 एवं मार्च 2020 में कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराये गये।

सत्र 2020–21 में दिनांक 02–12–2020 को गणित विभाग में लोकतांत्रिक तरीके से गणित परिषद का गठन किया गया। इस परिषद में विभिन्न पदों के लिए चुने गये पदाधिकारियों के नाम श्री हैरान (अध्यक्ष), श्री विवेक कुशवाहा (उपाध्यक्ष), कु. अंजली तिवारी (महामंत्री), कु. स्वेच्छा श्रीवास्तव (संयुक्त मंत्री), श्री निशांत, श्री निखिल वर्मा, कु. निधि राठौर, श्री अजय द्विवेदी, कु. अंजली देवी, कु. अरीबा फातिमा (सदस्यगण)।

सत्र 2020–21 में प्रवेश प्रक्रिया के पश्चात् बी.एससी. एवं एम.एससी. की कक्षायें माह नवम्बर 2020 में प्रारम्भ की गई। एम.एससी. के छात्र/छात्राओं के विषय से सम्बन्धित सेशनल एवं सेमिनार सम्पन्न कराये गये। दिनांक 22–12–2021 को महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की 133वीं जयंती राष्ट्रीय गणितज्ञ दिवस के अवसर पर गणित विभाग में आयोजित की गई। इस गोष्ठी में श्रीनिवास रामानुजन की जीवन शैली पर प्रकाश डाला गया। इसके साथ उनके द्वारा किये गये अभूतपूर्व शोध एवं उनके विलक्षण व्यक्तित्व पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया, विभाग प्रभारी डॉ. एस.एस. चौहान, प्राध्यापक डॉ. हरीश श्रीवास्तव एवं बी.एससी., एम.एससी. के छात्र/छात्रायें उपस्थित रहे।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एक शोध अध्ययन में यह प्रमाणित हुआ है कि जो लोग अधिक मात्रा में फल–सब्जियाँ खाते हैं, उनकी याददाश्त से जुड़ी परेशानियाँ कम होती हैं। रंगीन फलों और सब्जियों में विद्यमान एंटिऑक्सीडेंट्स तथा मैग्नीशियम दिमाग की कोशिकाओं के पुनर्निर्माण में मदद करते हैं। इसके अलावा ये शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर करने में भी कारगर हैं, कई बीमारियों में फायदेमंद हैं। लंबे समय तक प्रयोग करने से इसके फायदे होते हैं।

वनस्पति विज्ञान परिषद रिपोर्ट

सत्र 2019–20 एवं 2020–21

डॉ. आर.के. गुप्ता
प्रभारी, वनस्पति विज्ञान विभाग

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई के वनस्पति विज्ञान में संचालित वनस्पति विज्ञान परिषद् द्वारा छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक विकास के साथ–साथ सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों में स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों की पूर्ण सक्रियता रहती है।

दिनांक 02 फरवरी 2019 को World Wetland Day के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी को पूर्व प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने सारगर्भित व्याख्यान दिया। प्राचार्य डॉ. आनन्द कुमार खरे ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा संचालन सुश्री साम्या बघेल ने किया। डॉ. विजय कुमार यादव ने विषय प्रवर्तन किया तथा डॉ. रामकिशोर गुप्ता, विभाग प्रभारी ने Wetland Eco system के महत्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. नीलरतन, डॉ. गौरव यादव, डॉ. हर्ष कुमार गर्ग, डॉ. आलोक पाठक, डॉ. के. के. निगम एवं डॉ. मलिखान सिंह उपस्थित रहे। लगभग 60 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। दिनांक 30.5.2019 को एक Farewell Party का आयोजन प्राचार्य डॉ. आनन्द कुमार खरे के मुख्य अतिथि एवं डॉ. रामकिशोर गुप्ता की अध्यक्षता में किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी परिसर के डॉ. आर.के. वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि डी.वी.कालेज के वनस्पति विज्ञान विभाग की welcome एवं Farewell Party आयोजन की परम्परा प्रशंसनीय है। कार्यक्रम का संचालन छात्रा मनोरमा द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर डॉ. विजय कुमार यादव, अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान परिषद् एवं डॉ. नीति कुशवाहा उपस्थित रहे।

दिनांक 30 अगस्त 2019 मो M.Sc. IIIrd Sem. के विद्यार्थियों द्वारा नवागंतुक M.Sc I Sem. के विद्यार्थियों के लिए Welcome Party का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं प्राचार्य डा. तारेश भाटिया ने श्री भैयालाल (लैब न्याय) के सेवानिवृत्त होने पर शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विभाग के सभी प्राध्यापकों एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों ने श्री भैयालाल द्वारा दी गई सेवाओं को याद किया। इस कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं ने गीत, गजल, चुटकुले एवं प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत किये। डॉ. आर.के. गुप्ता, डॉ. वी.के. यादव, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. नीति कुशवाहा एवं डॉ. नील रतन ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के उपरान्त बोटनीकल सोसायटी की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से डा. वी.के. यादव को पुनः अध्यक्ष मनोनीत किया गया। दीपावली का अवकाश घोषित हो जाने के उपरान्त अन्तिम कार्य दिवस पर दिनांक 24.11.2019 को विभाग में दीपों को प्रज्ज्वलित कर दीपोत्सव मनाया गया।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता बनाये रखने के उद्देश्य से पर्यावरण जागरुकता संगोष्ठी श्रृंखला का आयोजन दिनांक 30.11.2019, 03.12.2019 एवं 04.12.2019 को किया गया। संगोष्ठी में विभिन्न विषयों यथा 'प्रदूषण का मानव जीवन पर प्रभाव' ग्लोबल वार्मिंग एवं ग्रीन हाउस प्रभाव', तथा 'प्लास्टिक का दुष्प्रभाव' पर विस्तृत चर्चा हुई। संगोष्ठी में उपस्थिति छात्र–छात्राओं को डॉ. आर.के. गुप्ता, डॉ. वी.के. यादव तथा डॉ. नीलरतन ने सम्बोधित किया। संचालन डॉ. नीति कुशवाहा ने किया। दिनांक 02. 12.2020 को प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया के मुख्य आतिथ्य में Welcome एवं Farewell Party का संयुक्त आयोजन किया गया। अध्यक्षता डा. आर. के. गुप्ता ने एवं संचालन छात्रा रक्षा कुशवाहा ने किया।

02 फरवरी 2021 को World Wetland Day पर एक संगोष्ठी का आयोजन प्राचार्य डॉ. राजन भाटिया के मुख्य आतिथ्य में किया गया। संगोष्ठी के विषय पर डा. वी.के. यादव ने व्याख्यान दिया। अध्यक्षता डॉ. आर.के. गुप्ता ने की तथा संचालन डॉ. प्रवीण कुमार ने किया। विश्व गौरैया दिवस के अवसर पर दिनांक 20 मार्च 2021 को एक परिचर्चा कराई गयी जिसमें प्राचार्य डॉ. रामप्रताप सिंह ने कहा कि मोबाइल आदि उपकरणों की तरंगों के कुप्रभाव से गौरैया का अस्तित्व खतरे में है। परिचर्चा में डॉ. आनन्द कुमार खरे , डॉ. आर.के. गुप्ता, डॉ. वी.के. यादव ने भाग लिया। संचालन डॉ. नीति कुशवाहा ने तथा आभार डॉ. प्रवीण कुमार ने किया और डॉ. नीलरतन का सहयोग सराहनीय रहा।

विभाग के समस्त शिक्षक महाविद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय उत्तरदायित्वों के प्रति समर्पित रहे। शोधकार्य में सक्रिय रहकर शोधपत्र प्रकाशित कराये गये। सोनम शर्मा को डॉ. वी.के. यादव के शोध निर्देशन में पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की गई। डॉ. आर.के. गुप्ता के शोध निर्देशन में सुप्रिया दीक्षित एवं घनश्याम पंजीकृत है।

ज्ञान–सम्पदा

संप्रदाय, मजहब, जाति, वर्ग एवं राष्ट्रीय दीवारों से निकलकर मानवीय सिद्धांतों विश्व बंधुत्व को प्रोत्साहन देने वाली यहाँ की ज्ञानसंपदा ने प्रत्येक धर्म एवं मजहब व्यक्तियों को प्रभावित किया है। औरंगजेब का भाई दाराशिकोह उपनिषदों के एक बार रसास्वादन के उपरांत उनकी मस्ती में इतना डूबा कि निरंतर छह माह तक काशी के पंडितों को बुलाकर उनकी व्याख्या सुनता रहा। दूसरों को भी उसका लाभ मिले– यह सोचकर उसने स्वयं फारसी में उपनिषदों का अनुवाद किया। दाराशिकोह के इस भाषांतर को फ्रेंच के विद्वान एन्क्विटिल डयूपैरो ने पढ़ा। उसकी रुचि इतनी बढ़ी कि सभी प्रमुख प्राच्यशास्त्रों, वेदों, उपनिषदों का अध्ययन कर डाला। फारसी अनुवाद के आधार पर उसने इनका लैटिन भाषा में अनुवाद किया। दाराशिकोह का फारसी अनुवाद एवं एन्क्विटिल का ईसाई अनुवाद अब भी मुसलिम एवं ईसाई जगत में अत्यंत श्रद्धा के साथ पढ़ा जाता है।

शिक्षक–शिक्षा विभाग (बी.एड.) : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–2021

डॉ. राजेश पालीवाल
असि0 प्रो0, शिक्षक–शिक्षा विभाग

सत्र 2019–20 में बी.एड. प्रथम वर्ष के प्रवेश 14 जून 2019 से प्रारम्भ होकर 3 जुलाई 2019 को पूर्ण हुए। बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों की सैद्धान्तिक कक्षायें 01 जुलाई 2019 से प्रारम्भ हुयी विश्वविद्यालय द्वारा सत्र 2018–19 की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षायें क्रमशः जुलाई एवं अगस्त माह में सम्पन्न हुयी। बी.एड. प्रथम वर्ष के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक वर्ष की भांति दिनांक 28/08/2019 से 31/08/2019 तक ओरिएन्टेशन कार्यक्रम विभाग द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें प्रथम दिवस पर प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया जी ने उद्घाटन सत्र में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए ओरिएन्टेशन कार्यक्रम को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया और मानसिक स्वास्थ्य पर अपना रोचक एवं महत्वपूर्ण व्याख्यान भी दिया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपना परिचय दिया। कार्यक्रम में डॉ. राजेश पालीवाल ने How to improve your self, Fit india movement & Yoga, डॉ. शैलजा गुप्ता ने Time Management, डॉ. बिजेन्द्र कुमार ने EPC, श्रीमती शशि तिवारी ने Social values डॉ. शैलजा गुप्ता ने C/Vs D, एवं Yoga & Exercise डॉ. विजय कुमार यादव ने Environment Issue पर विभिन्न सत्रों में अपने व्याख्यान दिए। Valendictru Se एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के विदाई समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों से पृष्ठ पोषण लिया। मुख्य अतिथि ने नवप्रवेशित एवं विभाग से विदा हुए विद्यार्थियों को आगामी जीवन के लिए शुभकामनायें एवं महत्वपूर्ण जीवनोपयोगी बातें बतायी। कार्यक्रम का समापन, अभार प्रदर्शन वन्देमातरम् गायन से हुआ। एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. रमेन्द्र कुमार गुप्त दिनांक 05 जुलाई 2019 को 17 वर्ष एवं एसोशिएट प्रोफेसर श्री योगेन्द्र बैचेन 10 जुलाई 2019 को 15 वर्ष की सेवा देने के बाद एकल स्थानान्तरण लेकर विभाग से विदा हो गये। डॉ. रमेन्द्र कुमार गुप्त जी नानकचन्द्र एंग्लो संस्कत महाविद्यालय, मेरठ एवं श्री योगेन्द्र बैचेन जी वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़ गये। महाविद्यालय एवं विभाग में शैक्षिक एवं अकादमिक गतिविधियों में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा। महाविद्यालय में शिक्षा विभाग के शोध विद्यार्थियों निधि शर्मा, संध्या पोरवाल, आरती शर्मा, सुरेन्द्र यादव, सतेन्द्र, रश्मि जादौन कृष्णपाल सिंह, अनिल कुमार सिंह ने अपने शोध कार्यों के साथ–साथ शिक्षण एवं प्रायोगिक अभ्यास कार्य में अपनी सहभागिता हर्षपूर्वक प्रदान की। खेल गतिविधियों में शारीरिक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री राजन भाटिया ने अविस्मरणीय योगदान देकर प्रतियोगिता को सम्पन्न कराया।

बी.एड.द्वितीय वर्ष के प्रवेश दिनांक 09/09/2019 से प्रारम्भ हुए एवं उनकी सैद्धान्तिक कक्षायें 12/09/2019 से विधिवत प्रारम्भ हुई। विभाग में दिनांक 25/09/2019 को डॉ. जितेन्द्र प्रताप ने असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। विद्यार्थियों में शिक्षण कौशल विकसित करने के लिए दिनांक 16/10/2019 से सूक्ष्म शिक्षण का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों को शिक्षण कौशल के विकास के लिए विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यान और अभ्यास कार्य दिये। विद्यार्थियों ने अपनी पाठ योजनाओं के माध्यम से प्रस्तुतियाँ दी उनकी प्रस्तुतियों का वीडियो बनाकर उन्हें दिखाया गया और उनकी कमियों को दूर करवाया गया। बी.एड. विद्यार्थियों को जिला विद्यालय निरीक्षक, जालौन, स्थान–उरई के दिनांक 29/10/2019 के पत्र के आधार पर नगर के इण्टरमीडिएट कॉलेजों में इण्टर्नशिप के लिए भेजा गया। इन्टर्नशिप के लिए डी.ए.वी. इण्टर कॉलेज, उरई एवं आचार्य नरेन्द्र देव इण्टर कॉलेज के प्रभारी डॉ. राजेश पालीवाल, आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, उरई की प्रभारी श्रीमती शशि तिवारी एवं सनातन धर्म इन्टर कॉलेज, उरई के प्रभारी डॉ. जितेन्द्रप्रताप रहे। बी.एड. द्वितीय की इन्टर्नशिप एवं पाठ योजना दिनांक 13/11/2019 एवं बी.एड. प्रथम वर्ष की इन्टर्नशिप दिनांक 10/11/2019 से प्रारम्भ हुई। बी.एड. प्रथम वर्ष की इन्टर्नशिप बी.एड. द्वितीय वर्ष की इन्टर्नशिप दिनांक को समाप्त हुई। महाविद्यालय के प्रबंध कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार ने अपनी माताजी की स्मृति में रुचि महोत्सव 2020 किया जिसमें शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षा विभाग द्वारा 21 जनवरी 2020 को आर्ट एण्ड क्राफ्ट प्रदर्शनी लगायी गयी। जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी रुचि के अनुसार Innovative वस्तुऐं प्रदर्शित कर सभी के अवलोकन हेतु नवाचारी रखी। दिनांक 27 जनवरी 2020 को निर्मल गंगा जागरूकता अभियान के अन्तर्गत आयोजित लेखन प्रतियोगिता में विभाग के विद्यार्थियों ने स्थान प्राप्त किये।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत दिनांक 11/02/2020 से 24/02/2020 तक हुई जिसमें बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा दिनांक 01/03/2020 अपने विषय से सम्बन्धित प्रदर्शन पावर पांइट एवं ओवर हेड प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रस्तुत किये गये जिसमें सहयोगी विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये।

विद्यार्थियों की वार्षिक खेल गतिविधियाँ 22 फरवरी 2020 को सम्पादित की गयी जिसका उद्घाटन कॉलेज के मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. आर.के. गुप्ता जी द्वारा किया गया और उन्होंने जीवन में खेल के महत्व पर व्याख्यान भी दिया। कार्यक्रम में विभाग प्रभारी डॉ. राजेश पालीवाल, श्रीमती शशि तिवारी, श्री राजन भाटिया ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जिसमें 800 मीटर दौड़ में छात्र वर्ग में क्रमशः संजीव कुमार यादव, शिवम कुमार और गौरव कुमार प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। 400 मीटर दौड़ में छात्रा वर्ग में प्रथम रश्मि एवं श्रुति द्वितीय स्थान पर रहीं। ऊँची कूद में छात्र वर्ग में प्रथम हरिश्चन्द्र, द्वितीय संजीत एवं अमित तृतीय स्थान पर रहे जबकि छात्रा वर्ग में रश्मि प्रथम, मीनू द्वितीय एवं कामिनी तृतीय स्थान पर रहीं। गोला फेंक वर्ग में संजयशील प्रथम, जितेन्द्र प्रताप द्वितीय एवं अनूप तृतीय जबकि छात्रा वर्ग में नम्रता प्रथम, रश्मि द्वितीय एवं दीक्षा तृतीय स्थान पर रहीं।

एथलेटिक्स की प्रतियोगिताओं के साथ बी.एड. प्रथम वर्ष आजाद क्रिकेट क्लब एवं बी.एड. द्वितीय वर्ष शिवाजी क्रिकेट क्लब के मध्य क्रिकेट के मध्य क्रिकेट मैच हुआ। जिसमें आजाद क्रिकेट क्लब के कप्तान गौरव कुमार एवं शिवाजी स्पोर्टस क्लब के कप्तान महेन्द्र सिंह थे। अम्पायर की भूमिका में मु0 वसीम रहे। आजाद क्लब की टीम में क्रिकेट मैच जीता जिसमें विद्यार्थियों की उल्लेखनीय भूमिका रही। कार्यक्रम के मध्य में विद्यार्थियों को स्वलपाहर वितरित किया गया।

25 फरवरी 2020 को विभाग के छात्र/छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति से सभी दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय के मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. आर.के. गुप्ता द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन करके किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने गीत, नाटक, यातायात जागरूकता, सामूहिक गीत, मोनो प्ले आदि प्रस्तुत किया।

2 मार्च 2020 को व्यावसायिक क्षमता संवर्द्धन के अन्तर्गत विभाग का शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम रखा गया जिसे प्रातः 6 बजे कॉलेज के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया जी ने झंडी दिखाकर लखनऊ के लिए रवाना किया। इस भ्रमण में 52 विद्यार्थियों ने साइंस सिटी, लखनऊ में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं मनोरंजन एवं अन्य दीर्घाओं का आनन्द लिया। इस भ्रमण में विद्यार्थियों की टोलियाँ बनाई गई जिसमें विद्यार्थियों ने जलपान, भोजन आदि की व्यवस्थाओं को बहुत ही अच्छे ढंग से पूर्ण किया। साइंस सिटी, लखनऊ के भ्रमण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों ने स्वयं जागरुक होकर समाज एवं विद्यार्थियों तक साइंस सिटी का संदेश पहुँचाने एवं भ्रमण करने के लिए जागरुक करने का संकल्प लिया। इस कार्यक्रम में मेरे साथ विभाग के प्राध्यापक श्रीमती शशि तिवारी, डॉ. विजेन्द्र कुमार, डॉ. जितेन्द्र प्रताप ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ प्रदान की। 04 मार्च 2020 को बी.एड. विभाग प्रभारी डॉ. शैलजा गुप्ता जी के निर्देशन में विभाग के विद्यार्थियों द्वारा शिव अखण्ड अनु. नारायण सिंह दिव्यांग विद्यालय ग्राम–मड़ोरा, कोंच रोड, उरई का भ्रमण किया जिसमें उन्होंने दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों की आवास, भोजन, किताबों आदि की जानकारी प्राप्त की। दिव्यांग विद्यार्थियों ने किताबों को पढ़कर संगीत को हारमोनियम् के साथ गाकर अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन कर देश व समाज के लिए अपनी महत्ता प्रदर्शित की। विभागीय विद्यार्थियों ने भी उनके साथ घुल मिलकर गीत संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया। विद्यालय के शिक्षक ने विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को अपने उद्बोधन से तृप्त किया। अन्त में विद्यार्थियों के साथ अपनी ग्रुप फोटो खिचवाकर मधुर स्मृतियों के साथ हम वापस अपने महाविद्यालय आ गये। अप्रैल माह में कोरोना लॉकडाउन की शुरू होने तक कक्षायें जारी रहीं हैं। लॉकडाउन के बाद विद्यार्थियों की ऑनलाइन कक्षायें संचालित की गई। बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थी विश्वविद्यालय द्वारा प्रोन्नत किये गये जबकि बी.एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों की लिखित एवं प्रयोगात्मक परीक्षाएं क्रमशः व 16–17 अक्टूबर 2020 में हुई। इस प्रकार यह सत्र कोरोना महामारी के कारण अक्टूबर में समाप्त हुआ।

मनोविज्ञान परिषद : गतिविधियाँ

सत्र : 2019–20, 2020–21

डॉ0 माधुरी रावत
असि0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग

दयानन्द वैदिक महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में संचालित परिषद के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखते हुए उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पठ्येत्तर गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों में स्नातक एवं परास्नातक के विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता रहती है। परिषद का गठन मनोविज्ञान विभाग में दिनांक 28 सितम्बर 2019 को किया गया। पूरे सत्र में समस्त विद्यार्थियों ने सहयोगात्मक रुख के साथ समस्त कार्यक्रमों में भागीदारी की। 20 नवम्बर 2019 को आयोजित भाषण प्रतियोगिता प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान छात्र–छात्राओं ने प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त 09 दिसम्बर 2019 को पूर्व विभाग प्रभारी डॉ. तारेश भाटिया ने "वैश्विक महामारी कोरोना काल में मानसिक स्तर का सही प्रबंधन" विषय पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने बताया कि इस महामारी में जनमानस पर सबसे ज्यादा प्रभाव मानसिक सोच पर पड़ रहा है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि इस महामारी में व्यक्ति को अपने शारीरिक स्तर को प्रबंधन के साथ –साथ मानसिक स्तर को भी प्रबल इच्छाशक्ति के साथ इस महामारी से सामना करना है।

दिनांक 15 फरवरी 2020 को आयोजित समापन समारोह मनोविज्ञान विभाग में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में परास्नातक एवं स्नातक के छात्राओं सहित समस्त विभागीय अध्यापक उपस्थित रहे। छात्र / छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन छात्रा सोनम गुप्ता (अध्यक्ष, मनोविज्ञान परिषद) ने बड़ी ही दक्षता के साथ किया। इस अवसर पर विभाग प्रभारी डॉ. माधुरी रावत ने कहा कि आप लोग महाविद्यालय के वरिष्ठ और अनुशासित विद्यार्थी है अतः पूरे मनोयोग से अपने मानसिक स्तर को सही रखने के साथ साथ और लोगों की समस्या को भी अपनी जिम्मेदारी समझना है। पूर्व विभाग प्रभारी डॉ. तारेश भाटिया ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे महाविद्यालय में छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक है, इस कारण छात्रों की तुलना में ज्यादा जिम्मेदार ठहरती है। व्यवहारिक जीवन में भी छात्राएं पारिवारिक और जगत में अब आनी जिम्मेदारी को बखूबी समझने लगी है। कार्यक्रम के अन्त में जब संबोधित करते हुए परिषद संयोजक डॉ. साम्या बघेल ने कहा कि जीत उसी की होती है जो प्रयास करता है। बिना प्रयास के कोई भी सफलता हमारी झोली में आकर स्वयं नहीं गिरती। साथ ही उन्होंने विभाग की ओर से समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। छात्रों ने भी सत्र में चली गतिविधियों से प्राप्त अनुभवों को अपने सहपाठियों संग बांटा और परिषद में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों से होने वाले अपने व्यक्तित्व विकास को भी अनुभव किया। साथ ही यह भी स्वीकार किया कि समय–समय पर आयोजित होने वाली गतिविधियों से अनेक गंभीर पहलुओं को समझने का अवसर मिला।

भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान–'भारत रत्न' प्राप्त देश के महान सपूतों की सूची

क्रमांक	विजेताओं का नाम	साल
01	सर्वपल्ली राधाकृष्णन	1954
02	चक्रवर्ती राजगोपालाचारी	1954
03	सी वी रमन	1954
04	भगवान दास	1955
05	एम. विश्वेश्वरय्या	1955
06	जवाहर लाल नेहरू	1955
07	गोविंद वल्लभ पंत	1957
08	धोंडो केशव कर्वे	1958
09	बिधान चंद्र रॉय	1961
10	पुरुषोत्तम दास टंडन	1961
11	राजेन्द्र प्रसाद	1962
12	जाकिर हुसैन	1963
13	पांडुरंग वामन काने	1963
14	लाल बहादुर शास्त्री	1966
15	इंदिरा गांधी	1971
16	वी.वी. गिरि	1975
17	के. कामराज	1976
18	मदर टेरेसा	1980
19	विनोबा भावे	1983
20	अब्दुल गफ्फार खान	1987
21	एमजी रामचंद्रन	1988
22	बीआर अम्बेडकर	1990
23	नेल्सन मंडेला	1990
24	राजीव गांधी	1991
25	वल्लभभाई पटेल	1991
26	मोरारजी देसाई	1991
27	अबुल कलाम आजाद	1992
28	जेआरडी टाटा	1992
29	सत्यजीत रे	1992
30	गुलजारीलाल नंदा	1997
31	अरुणा आसफ अली	1997
32	ए. पी. जे. अब्दुल कलाम	1997
33	एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी	1998
34	चिदंबरम सुब्रमण्यम	1998
35	जयप्रकाश नारायण	1999
36	अमर्त्य सेन	1999
37	गोपीनाथ बोरदोलोई	1999
38	रवि शंकर	1999
39	लता मंगेशकर	2001
40	बिस्मिल्लाह खान	2001
41	भीमसेन जोशी	2009
42	सीएनआर राव	2014
43	सचिन तेंडुलकर	2014
44	मदन मोहन मालवीय	2015
45	अटल बिहारी वाजपेयी	2015
46	प्रणब मुखर्जी	2019
47	भूपेन हजारिका	2019
48	नानाजी देशमुख	2019

राष्ट्रीय सेवा योजना

सत्र : 2019-2020

कार्यक्रम अधिकारी

डॉ. माधुरी रावत (प्रथम इकाई, छात्रा)

डॉ. नीलरतन (द्वितीय इकाई, छात्रा)

डॉ. नीति कुशवाहा (तृतीय इकाई, छात्रा)

महाविद्यालय में संचालित तीन (छात्रा) संकायों का विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 815.02.2020 को चयनित मलिन बस्तियों में किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.तारेश भाटिया जी ने सात दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन किया और सभी स्वयं सेविकाओं को संबोधित करते हुए शिविर को सफल बनाने के लिय अनुशासन, धैर्य, आपसी सहयोग को महत्वपूर्ण बताया। सभी स्वयं सेविकाएं अपने–अपने कार्यक्रम अधिकारियों के साथ अपनी–अपनी चयनित मलिन बस्तियों में जाकर समस्याओं को जाना और निवारण का प्रयास किया।

विशेष शिविर के द्वितीय दिवस की शुरुआत दिनांक 16.02.2020 को पतंजलि योग संस्थान की योग प्रशिक्षिका श्रीमती आरती के निर्देशन में योगाभ्यास से हुआ। मनोवैज्ञानिक सुश्री साम्या बघेल ने सभी स्वयं सेवकों को अपने जीवन में अनुशासन को उतारने एवं जीवन में आने वाली समस्याओं को मनोवैज्ञानिक तरीके से हल करने पर बल दिया।

विशेष शिविर के तीसरे दिवस 17/02/2020 में डी.वी. कालेज उरई की अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अलकारानी पुरवार ने स्वयं सेविकाओं को सशक्त के लिए चरणबद्ध युक्ति बतायी उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम वे शारीरिक रूप से मजबूत बने क्योंकि शरीर ही हर प्रकार सुख को प्राप्त करने का साधन है। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने हृदय को स्पर्श करने वाली भावुक स्वरचित कविता का पाठ भी किया। इस अवसर पर इतिहास विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. मंजू जौहरी, डॉ. नगमा खानम्, डॉ. शीलू सेंगर एवं साम्या बघेल उपस्थित रहीं।

विशेष शिविर के चतुर्थ दिवस 18.02.2020 में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. रश्मि महेश्वरी ने उत्तम स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी एवं जीवन में आने वाली शारीरिक समस्याओं एवं उनके बचने के उपाय बताये। स्वयं सेविकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं को सुना एवं उनका निराकरण किया। डॉ. रश्मि ने स्वयं सेविकाओं की सौन्दर्य समस्याओं एवं सौन्दर्य से जुड़े भ्रमों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. अलकारानी पुरवार, डॉ. मंजू जौहरी, डॉ. शीलू सेंगर, डॉ. नगमा खानम् उपस्थित रहीं।

पांचवे दिवस 19.02.2020 पर सभी स्वयं सेविकाएं नित्यक्रिया से निवृत्त होकर योगाभ्यास किया। जालौन जिला के मलेरिया अधिकारी डॉ. जी.एस. स्वर्णकार एवं संस्थान के कोआर्डिनेटर श्री सुनील कुमार गुप्ता ने स्वयं सेविकाओं को मलेरिया एवं फाइलेरिया जैसी बीमारियों से सुरक्षित रहने के

उपाय बताये। इस अवसर पर जलसंरक्षण, पर्यावरण, संरक्षण पर बल दिया गया। इसके बाद मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. मंजू जौहरी, डॉ. अलकारानी पुरवार, शशि तिवारी, डॉ. अक्षरा सिंह आदि उपस्थित रहीं।

षष्ठ दिवस 20.02.2020 पर मुख्य अतिथि वनस्पति विज्ञान विभाग के एसो.प्रो. डा. विजय यादव ने कहा कि आज हम विकास की दौड़ में इतने अंधे हो गये हैं। कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का दोहन कर रहे हैं उससे हम आने वाली पीढ़ियों के स्वयं शत्रु बनते जा रहे हैं। तत्पश्चात् सभी स्वयं सेविकाओं को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलायी। महाविद्यालय के प्रबंधकारिणी समिति के उपाध्यक्ष डा. हरिमोहन पुरवार एवं पत्नी श्रीमती संध्या पुरवार ने शिवरात्रि के विशेष अवसर को ध्यान में रखते हुए भगवान् शिव से सम्बन्धित प्राचीन मूर्तियों, कई प्रकार के रुद्राक्ष व शंखों का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी प्रदर्शित वस्तुओं के बारे में ऐतिहासिक जानकारी देकर सभी स्वयं सेविकाओं तथा उपस्थित गणमान्यों को लाभान्वित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया, डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय, डॉ. राजेश पालीवाल, डॉ. ह्रदयकान्त श्रीवास्तव, डॉ. श्रवण कुमार एवं हरेन्द्र सिंह प्रजापति उपस्थित रहे।

सातवे एवं विशेष शिविर 21.02.2020 के अंतिम दिवस पर स्वच्छता अभियान एवं पर्यावरण संरक्षण के नारे लगाते हुए रैली निकाली गयी। समापन सत्र के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया एवं वनस्पति विज्ञान विभाग के एसो प्रो. डॉ. विजय यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। शिविर में मातृभाषा दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। डॉ. नीति कुशवाह ने सात दिवसीय विशेष शिविर के सातों दिन की समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की। सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेविकाओं को पुरस्कृत किया गया। शिविर का समापन सभी अतिथियों द्वारा वृक्षारोपण के साथ किया गया। इस अवसर पर सभी प्राध्यापक, शिक्षणेतर कर्मचारी एवं सभी स्वयं सेविकाएं उपस्थित रहीं।

सच्ची समाज सेवा

न्यूजीलैंड की राजकुमारी डायना वालेसी उच्च शिक्षित और सुसंपन्न थीं। उन्हें पर्यटन का शौक था। हर साल संसार के मनोरम स्थानों को देखने के लिए वे प्रचुर धन व्यय करती थीं। बड़े होटलों में ठहरतीं थीं। तब उनकी आँखों में सुसंपन्न संसार का ही नक्शा था। एक प्रवास के दौरान वे भारत भी आईं। यहाँ के शहरों की स्थिति और देहातों की दशा में जमीन आसमान जैसा अंतर देखा। लौटीं तो उनका विचार बदल गया और उन्होंने भारत जैसे पिछड़े देश की सेवा करने की ठान ठानी।

वे न्यूजीलैंड छोड़कर भारत आ गईं और मुंबई के निकट एक देहात में बस गईं। उनसे सारे देश की सेवा करते तो न बन पड़ी, पर एक आदर्श उपस्थित किया कि संपन्न होग यदि निर्धनों को अपने परिवार में सम्मिलित कर लें तो समस्या सहज ही हल हो सकती है। डायना ने विवाह नहीं किया, पर निर्धनों के बच्चे गोद लेकर उन्हें सुयोग्य बनाना आरंभ कर दिया। मुंबई में श्रम करके आजीविका कमा लेती थीं और गोद लिए बच्चों के भरण पोषण में तल्लीन होकर प्रसन्न रहती थीं। वे आजीवन यहीं रहीं और उन्होंने समाज की सेवा करके एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना
सत्र : 2019-2020

श्री योगेश कुमार पाल
कार्यक्रम अधिकारी, चतुर्थ इकाई, छात्र

महाविद्यालय में संचालित एन.एस.एस. की चारों इकाइयों के स्वयं सेवकों के प्रवेश के पश्चात एक सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें स्वयं सेवकों को एन.एस.एस. के उद्देश्य, कर्तव्य, कार्यों, लाभों की विस्तार से चर्चा की गयी। उसके बाद सभी स्वयं सेवक कार्यक्रम अधिकारी श्री योगेश कुमार पाल के साथ अपनी चयनित मलिन बस्ती–ग्राम बोहदपुरा, ब्लाक डकोर, उरई में अनेक समस्याओं की जानकारी की और लोगों को जागरूक किया।

25 जनवरी 2020 को महाविद्यालय में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया ने राष्ट्रीय सेवा योजना की उपयोगिता को बताते हुए कहा कि राष्ट्र और समाज की सेवा में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. राजेश पालीवाल असि.प्रो. ने एन.एस.एस. के नियम और सिद्धान्तों को स्वयं सेवकों को बताया और कहा है कि यह ऐसी योजना है जो हमारे अन्दर अच्छे सदगुणों का विकास कर समाज में सहयोग की भावना जगाकर विकास का मार्ग अग्रसर करती है। 71 वें गणतंत्र दिवस का आयोजन महाविद्यालय में दिनांक 26 जनवरी 2020 को किया गया इस अवसर पर महाविद्यालय से प्रबन्धकारिणी के उपाध्क्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार ने कहा कि हम सब लोगों को आपस में मिलजुल कर रहना, भाईचारे की भावना रखनी चाहिए और उन महान वीर सपूतों के बताए गए सिद्धान्तों और नियमों को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

31 जनवरी 2020 को प्रस्तावित गंगा यात्रा के उपलक्ष्य में उच्च शिक्षा विभाग द्वारा निर्मल गंगा जागरूकता अभियान के अन्तर्गत गंगा की निर्मलता एवं पवित्रता को संरक्षित करने के सम्बन्ध में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डा. विजय यादव ने गंगा को स्वच्छ साफ रखने के उपाय स्वयं सेवकों को बताये एवं पवित्रता, शुद्धता पर बल देते हुए कहा कि यदि हम आपके जीवन में स्वच्छता अपनाते हैं तो हमें किसी प्रकार की बीमारियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

12 फरवरी 2020 को बनस्पति विज्ञान विभाग में एम.एड. विभाग के विभाग प्रभारी श्री सुरेन्द्र यादव ने स्वयं सेवकों को योग का हमारे जीवन में क्या महत्व है और योग के द्वारा कैसे हम अपना मानसिक और शारीरिक विकास कर सकते हैं इस पर विचार प्रस्तुत किये।

एन.एस.एस. के चतुर्थ इकाई (छात्र) का विशेष का आयोजन दिनांक 15.02.2020 से 21.02.2020 तक पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बोहदपुरा, ब्लाक डकोर, उरई में आयोजित किया गया। प्रथम एवं द्वितीय विशेष शिविर का उदघाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया ने की। प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया ने स्वयं सेवकों को जागरूक बनाने, व्यक्तित्व का विकास करने एवं लोगों को जागरूक करने पर बल दिया।

विशेष शिविर के दूसरे दिन गांधी महाविद्यालय से पधारे असि. प्रो. श्री धर्मेन्द्र कुमार ने कहा कि हमें अपने लक्ष्य स्वयं बनाने होंगे और समय के अनुसार अपने आपको उसी अनुरूप बनाना होगा। विशेष शिविर के तीसरे दिन बौद्धिक सत्र में डी.वी. कॉलेज, उरई के समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आनन्द खरे ने कहा कि शिक्षा की व्यवस्था समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। शिक्षक शिक्षा विभाग के असि.प्रो. डॉ. राजेश पालीवाल ने कहा कि एन.एन.एस. का उद्देश्य जनमानस में देश की सेवा की भावना जागृत करना है। विशेष शिविर ने चतुर्थ दिवस में शारीरिक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राजन भाटिया ने कहा कि सफलता प्राप्ति के लिए समय प्रबंधन का होना आवश्यक है हमें अपने जीवन की रूपरेखा स्वयं निर्मित करनी होगी। वनस्पति विज्ञान विभाग के असि. प्रो. डॉ. प्रवीन कुमार ने कहा कि अपने अन्दर के गुणों को बाहर निकलाना ही व्यक्ति की आत्मशक्ति की अशित्यक्त है। रसायन विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. विजय चौधरी ने स्वविकास, सहयोग की भावना और खुश रहने के लिए हमें वातावरण का निर्माण करना होगा। विशेष शिविर के पांचवे दिन डा. विजय यादव ने अपने विचारों के द्वारा स्वयं सेवकों को बताया कि जंगल के पेड़ पौधों को काटने से हमारे पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है जिसमें हमारे वायुमण्डल में बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं और हमारा पर्यावरण प्रदूषण हो रहा है। डॉ. शरद श्रीवास्तव ने अनुशासन और समर्पण की बात पर बल दिया। डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी ने कहा कि सेवा की शुरूआत स्वयं से ही करनी चाहिए जब ऐसी भावना हमारे अन्दर विकसित हो जायेगी तो हम समाज और देश को एक दिशा दे सकते हैं। विशेष शिविर के छठवें दिन संज्ञानात्मक और प्रेरणात्मक बौद्धिक चर्चा में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय ने कहा कि हमारा आहार–विहार विचार खानपान जितना शुद्ध होगा हमारा मन उतना ही स्वच्छ और सुन्दर होगा। विशेष शिविर के अन्तिम दिवस में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समापन अवसर पर स्वयं सेवकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। समापन अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया जी ने कहा कि अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का उद्देश्य विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषा को बढ़ावा देना है। अतिथियों के समक्ष स्वयं सेवकों द्वारा रक्तदान, नाटक और स्वच्छता पर विचार प्रस्तुत किये गये। प्राचार्य एवं अतिथियों के समक्ष कार्यक्रम अधिकारी श्री योगेश कुमार पाल ने शिविर के सातों दिनों की प्रगति आख्या प्रस्तुत की। वहीं प्राचार्य द्वारा स्वयं सेवकों से शिविर के अनुभवों की जानकारी ली गयी। अंत में कार्यक्रम अधिकारी द्वारा सभी अतिथियों का एन.एस.एस. छात्र इकाई की ओर से आभार व्यक्त किया गया और विशेष शिविर के समापन की घोषणा की गयी। सभी स्वयं सेवक सुनहरी यादों के साथ अपने–अपने घर को विदा हो गये।

त्याग

सार बात है–त्याग। त्याग के बिना कोई पूरे ह्रदय से दूसरों के लिए कार्य नहीं कर सकता। त्यागी पुरुष सबको समदृष्टि से देखता है। तब फिर तुम अपने मन में यह भावना क्यों पोसते हो कि पत्नी–पुत्र दूसरों की अपेक्षा तुम्हारे अधिक अपने हैं ? तुम्हारे दरवाजे पर साक्षात् नारायण एक दीन भिखारी के रूप में भूखों मर रहा है। उसको कुछ न कुछ देकर क्या तुम केवल अपनी पत्नी और बच्चों की चटोरी रसना की तृप्ति में ही लगे रहोगे ? क्यों, यह तो पाशविक है।

राष्ट्रीय सेवा योजना

सत्र 2020–2021 की प्रगति आख्या एवं कार्यक्रम

(महाविद्यालय में संचालित चारों इकाइयों की समग्र रिपोर्ट)

कार्यक्रम अधिकारी :

1. डॉ. माधुरी रावत, असि. प्रो.	मनोविज्ञान विभाग	(प्रथम इकाई)
2. डॉ. सुरेन्द्र मोहन यादव, असि. प्रो.	अंग्रेजी विभाग	(द्वितीय इकाई)
3. डॉ. नीता गुप्ता, असि. प्रो.	अंग्रेजी विभाग	(तृतीय इकाई)
4. डॉ. सुरेन्द्र यादव, असि. प्रो.	शिक्षक शिक्षा विभाग	(चतुर्थ इकाई)

सामान्य कार्यक्रम एवं एकदिवसीय शिविरों का स्वरूप :–

महाविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की चारों इकाइयों के स्वयंसेवक एवं स्वयं सेविकाएँ अपने–अपने कार्यक्रम अधिकारी के साथ वर्ष : 2020–2021 में एन.एस.एस. की सभी इकाइयों द्वारा क्रियान्वित किए जाने वाले सामान्य कार्यक्रमों की सूची बनाई साथ ही इसके उद्‌देश्य एवं लक्ष्यों पर विस्तार से चर्चा की।

5 मार्च 2020 को महिला दिवस पर स्वयं सेविकाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत ने अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. शरत् श्रीवास्तव एवं डॉ. अतुल प्रकाश बुधौलिया ने शोषित महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थिति बनाने पर विशेष जोर दिया।

21 मार्च 2020 को 'विश्व वन दिवस' पर सभी स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाएँ महाविद्यालय में एकत्रित हुए और अपनी पृथ्वी एवं वन सम्पदा को सुरक्षित रखने की शपथ ली। इस अवसर पर डॉ. विजय कुमार यादव वनस्पति विज्ञान विभाग ने कहा कि जितनी भी प्राकृतिक वनस्पतियाँ हैं वह एक चादर की तरह ढके रहती हैं।

1 अप्रैल 2020 को राष्ट्रीय सेवा योजना के सक्रिय स्वयं सेवक और स्वयं सेविकाएँ एवं एन.एस.एस. कक्ष में एकत्रित हुए तत्पश्चात सभी स्वयं सेवक अपने कार्यक्रम अधिकारियों के साथ मलिन बस्ती में गए वहां पर कोविड 19 पर और भारत सरकार के दिशा निर्देशों पर विस्तृत चर्चा की।

7 अप्रैल 2020 को चारों इकाइयों के स्वयं सेवकों ने अपने कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत, डॉ. नीता गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र मोहन यादव एवं श्री सुरेन्द्र यादव के साथ जाकर मलिन बस्तियों में मास्क वितरण किया।

1 मई 2020 को चारों इकाइयों के सभी स्वयं सेवक महाविद्यालय के एन.एस.एस. कक्ष में एकत्रित हुए। कोविड–19 के कारण चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारियों ने स्वयं सेवकों की टोलियां बनाई। विश्व मजदूर दिवस पर कार्यक्रम अधिकारियों ने स्वयं सेवकों को मजदूरों के सम्मान की भवना रखने के लिए प्रेरित किया।

19 मई 2020 को मास्क बैंक की स्थापना की गयी ताकि महाविद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को निःशुल्क वितरित किया जा सके।

1 जून 2020 को महाविद्यालय की चारों इकाइयों के स्वयं सेवकों द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश सरकार के शासनादेश के अनुसार 21 जून 2020 को महाविद्यालय की रा.से.यो. की चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारी, स्वयंसेवक, स्वयं सेविकाओं को सामाजिक दूरी का पालन कराते हुए योगाभ्यास कराया गया।

1 जुलाई से 7 जुलाई तक वन महोत्सव के अन्तर्गत 1 जुलाई 2020 को प्रातः 10.30 बजे रा.से.यो. के स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाएँ महाविद्यालय में एकत्रित हुए। कोविड–19 की परिस्थितियों को देखते हुए कार्यक्रम अधिकारियों ने सात दिनों की रूपरेखा तैयार की। 7 जुलाई को वृहद वृक्षारोपण के तहत 250 वृक्ष लगाये गये।

6 अगस्त 2020 को महाविद्यालय में रा.से.यो. के सभी स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाओं ने कार्यक्रम अधिकारियों के निर्देशानुसार एक सभा का आयोजन किया जिसमें कोविड–19 के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। रसायन विज्ञान विभाग के असि. प्रोफेसर डॉ. शरत् श्रीवास्तव ने बताया कि कोविड–19 एक ऐसी बीमारी है जो कि एक मानव से दूसरे मानव में फैलती है।

4 सितम्बर को रा.से.यो. के स्वयं सेवक और स्वयं सेविकाओं ने एक गोष्ठी का आयोजन करने की रूपरेखा बनाई। 5 सितम्बर 2020 को शिक्षक दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. मन्जू जौहरी ने बताया कि शिक्षक दिवस क्यों और किसके जन्म दिन पर मनाया जाता है।

14 सितम्बर से चल रहे 'स्वच्छता पखवाड़े' के अंतर्गत 26 सितम्बर को एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय 'स्वच्छता ही सेवा' था।

2 अक्टूबर 2020 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 152 वीं जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय में एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र मोहन यादव ने महात्मा गाँधी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके सिद्धान्तों एवं विचारों से सभी स्वयं सेवकों और स्वयं सेविकाओं को अवगत कराया। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डा. माधुरी रावत ने स्वच्छता के माध्यम से समाज की सेवा के बारे में बताया।

15 अक्टूबर को 'विश्व हाथ धुलाई दिवस' पर महाविद्यालय में एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसने कोविड–19 नामक बीमारी पर विस्तृत चर्चा हुई जिसमें कई महाविद्यालयों के प्राध्यापकगण उस सेमीनार से जुडे रहें।

कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया ने किया और कहा कि साबुन से 20 सेकेण्ड तक हाथ धोने से इस खतरनाक विषाणु को कम किया जा सकता है।

अक्टूबर माह में महाविद्यालय में साबुन बैंक की स्थापना की गयी जिसका शुभारम्भ प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया ने किया जिससे कि कालेज आने वाले छात्रों एवं अभिभावकों को निःशुल्क वितरित किया जा सके एवं उनका हाथ धुलाया जा सके।

1 नवम्बर को मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय में जूड़ो–कराटे का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.तारेश भाटिया ने किया। अंग्रेजी विभाग की प्रभारी डॉ. अलकारानी पुरवार ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारी बेटियां किसी से कम नहीं अब हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर कार्यकर रहीं हैं।

14 नवम्बर को बाल दिवस के उपलक्ष्य में रा.से.यो. की चारों इकाइयों की ओर से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यक्रम अधिकारी श्री सुरेन्द्र यादव ने पं. जवाहर लाल नेहरू को समाजवाद का प्रहरी बताया।

1 दिसम्बर 2020 को प्रातः 10.00 बजे सभी स्वयं सेवक और स्वयंसेविकाएँ विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रांगण में उपस्थित हुए। इस अवसर पर वनस्पति विज्ञान विभाग के असि.प्रो. डा. हर्ष गर्ग ने कहा कि एड्स एच.आई.वी. नामक विषाणु से होता है।

21 दिसम्बर 2020 को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई जी के जन्म दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उसी क्रम में अटल जी के भाषण का आनलाइन एवं आफ लाइन प्रसारण किया गया। 25 दिसम्बर को मैत्री खेलों का आयोजन किया गया।

1 जनवरी 2021 रा.से.यो. की चारों इकाइयों का कालेज के सेमीनार हाल में 'मिशन शक्ति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

12 जनवरी 2021 को महाविद्यालय की चारों इकाइयों का एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसका मुख्य कार्यक्रम महाविद्यालय के सेमीनार हाल में स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती के अवसर पर 'राष्ट्रीय युवा दिवस' था। राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन 'पढ़े जालौन, बढ़े जालौन' था कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत ने किया एवं श्री सुरेन्द्र यादव ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

15 जनवरी को दयानन्द वैदिक कॉलेज के सेमीनार हाल में साप्ताहिक युवा महोत्सव के अन्तर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें छात्र–छात्राओं ने देश भक्ति एवं नृत्य की आकर्षक प्रस्तुतियों से खूब मोहा।

15 जनवरी 2021 को दयानन्द वैदिक कॉलेज के चारों इकाइयों के समस्त स्वयं सेवकों और स्वयं सेविकाओं एवे नेहरू युवा केन्द्र, जालौन के संयुक्त तत्वावधान जागरूकता रैली निकाली गयी एवं सामान्य द्वितीय एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जागरूकता रैली का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजन भाटिया ने रा.से.यो. को हरी झण्डी दिखाकर डी.वी.सी. कालेज के गेट से रवाना किया। जागरूकता रैली महाविद्यालय के मुख्य परिसर से प्रारम्भ होकर इलाहाबाद बैंक मुख्य शाखा, नीलम लॉज, माहिल तालाब एवं घंटाघर से होते हुए विभिन्न स्थानों पर गयी। 17 जनवरी को डी.वी.सी. में चल रहे रा.से.यो. के शिविर में छात्राओं की रंगोली प्रतियोगिता हुई। इसमें महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक मौजूद रहे। दयानन्द वैदिक कॉलेज के सेमीनार हाल में रा.से.यो. के राष्ट्रीय युवा सप्ताह का समापन सदर विधायक गौरी शंकर वर्मा ने किया। उन्होंने कहा कि समाज में आज महिलाएँ पुरुषों के साथ बराबरी का दायित्व निभा रही हैं।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एन.एस.एस. के बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के समन्वयक डॉ. मुन्ना तिवारी ने कहा युवा शक्ति को विवेक की आवश्यकता है।

25 जनवरी 2021 को महाविद्यालय की चारों इकाइयों का तृतीय एक दिवसीय शिविर राष्ट्रीय मातृ दिवस के रूप में मनाया गया। इस दौरान सभी को अपने अधिकारों के साथ–साथ जिम्मेदार नागरिक बनने की भी बात कही गयी।

4 फरवरी 2021 को चौरा–चौरी शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक रैली का आयोजन किया गया जिसका आरम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजन भाटिया ने हरी झण्डी दिखाकर किया। इस अवसर पर चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत, डॉ. सुरेन्द्र मोहन यादव, डॉ. नीता गुप्ता एवं श्री सुरेन्द्र यादव के निर्देशन में रैली महाविद्यालय परिसर से होकर माहिल तालाब, घण्टाघर मच्छर चौराहा पर पहुँचकर शहीद भगत सिंह स्मारक पर पहुँची। वहाँ पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजन भाटिया और सभी प्राध्यापक मौजूद रहे व प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया।

6 फरवरी को राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण इकाई के तत्वाधान में दयानन्द वैदिक कॉलेज के रा.से.यो. कार्यक्रम के दौरान संगोष्ठी हुई। जिला तम्बाकू नियंत्रण इकाई की सलाहकार तृप्ति यादव ने कहा तम्बाकू से कैंसर जैसी घातक बीमारी होती है। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी श्री सुरेन्द्र यादव व डॉ. माधुरी रावत ने तम्बाकू सेवन न करने की शपथ दिलाई। इस दौरान काउन्सलर महेश कुमार, सोशल वर्कर दिनेश कुमार, डॉ. नीता गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र मोहन, डॉ. के.के. निगम 'मुस्कराएगा इण्डिया' के जिला प्रतिनिधि के.के. गुप्ता मौजूद रहे।

11 फरवरी 2021 को पं. दीनदयाल उपाध्याय के सपनों का भारत पर एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया जिसमें छात्र शिवि प्रथम, रानी वर्मा द्वितीय और प्रियांशु तृतीय स्थान पर रहे। निर्णायक मंडल में डा. शैलजा गुप्ता, डॉ. रश्मि सिंह एवं डॉ. राजेश पालीवाल रहे।

13 फरवरी 2022 को पं. दीनदयाल उपाध्याय के सपनों का भारत के अंतर्गत एक काव्य पाठ का आयोजन किया गया जिसकी थीम सामाजिक समरसता एवं न्याय पर आधारित थी जिसमें उज्मा परवीन शबनूर फातिमा, कृतिका शर्मा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रही। निर्णायक मण्डल में डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय, डॉ. मन्जू जौहरी रही।

15 फरवरी 2021 को इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें तान्या निगम श्रृद्धा पटेल द्वितीय और रानी वर्मा द्वितीय, तृतीय स्थान पर रही। निर्णायक मण्डल में डॉ. हर्ष गर्ग, डॉ. अतुल प्रकाश बुधौलिया मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेन्द्र यादव ने किया इस अवसर पर रा.से.यो. के सूत्री कार्यक्रम अधिकारी मौजूद रहे।

16 फरवरी 2021 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपनों का भारत कार्यक्रम का समान महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजन भाटिया ने माता सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में सामाजिक समरसता बढ़ाने की बात पर जोर दिया। इस अवसर पर चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत, श्री सुरेन्द्र यादव, डॉ. नीता गुप्ता एवं डॉ. सुरेन्द्र मोहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. प्रवीण सिंह, डॉ. शिवराग मिश्रा, डा0 नीरज द्विवेदी, डा. शीलू सेंगर आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

23 फरवरी 2021 को चारों इकाइयों के स्वयं सेवक और स्वयं सेविकाएँ महाविद्यालय के रा.से.यो. कक्ष में उपस्थित हुए और 24 फरवरी 2021 से 2 मार्च 2021 तक चलने वाले विशेष शिविर के आयोजन के बारे में विस्तृत रूप से कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा दिशा निर्देश दिया गया।

1. प्रथम दिवस की प्रगति आख्या :– 24.02.2021 को महाविद्यालय में संचालित चारों इकाइयों तीन (छात्र) का विशेष शिविर का आयोजन चयनित मलिन बस्तियों में किया गया जिसका उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजन भाटिया ने किया तथा सभी स्वयं सेवकों को संबोधित करते हुए शिविर को सफल बनाने के लिए अनुशासन धैर्य आपसी सहयोग आदि प्रमुख घटकों के बारे में बताया। सभी स्वयं सेवकों ने अपने–अपने कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत (प्रथम इकाई) डॉ. सुरेन्द्र मोहन यादव (द्वितीय इकाई) डॉ. नीता गुप्ता (तृतीय इकाई) श्री सुरेन्द्र यादव (चतुर्थ इकाई) के साथ अपनी चयनित मलिन बस्तयों में जाकर उनकी प्रमुख समस्याओं को जाना और उनके निवारण का प्रयास किया।

2. द्वितीय दिवस की प्रगति आख्या :– दिनांक 25.02.2021 को दयानन्द वैदिक कॉलेज के चारों इकाइयों के सात दिवसीय विशेष शिविर के दूसरे दिन का शुभारम्भ भूगोल विभाग के असि.प्रो. डॉ. मलिखान सिंह बघेल कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत, श्री सुरेन्द्र यादव, डॉ. नीता गुप्ता एवं डॉ. सुरेन्द्र

मोहन यादव द्वारा माँ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। डॉ. मलिखान सिंह द्वारा रा.से.यो. के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया तथा उन्होंने अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाने पर बल दिया।

3. तृतीय दिवस की प्रगति आख्या—डी.वी. कालेज के सेमीनार हाल में एन.एस.एस. विशेष शिविर के तीसरे दिन का शुभारम्भ स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. रेनू चन्द्रा, पत्रकार अनिल कुमार शर्मा कार्यक्रम अधिकारी डा. माधुरी रावत, श्री सुरेन्द्र यादव, डा. नीता गुप्ता व डॉ. सुरेन्द्र मोहन ने सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया। इस अवसर पर डॉ. रेनू चन्द्रा ने कहा व्यक्ति बड़ा या छोटा पैसों के बल पर नहीं होता बल्कि वह अपने संस्कारों से होता है।

4. चतुर्थ दिवस की प्रगति आख्या— 27.02.2021 दयानन्द वैदिक कॉलेज के रा.से.यो. सात दिवसीय विशेष शिविर के चतुर्थ दिन की शुरूआत प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना की कृष्णा गुप्ता, वीरांगना महिला कल्याण एवं उत्थान झांसी के मनोज कुमार, कविता देवी, सुनीता देवी द्वारा किया गया। इस अवसर पर कविता और सुनीता ने स्वयं सेविकाओं को सैनेटरी पैड के इस्तेमाल के बारे में बताया। महिला जागरूकता एवं स्वच्छता के अन्तर्गत स्वयं पर्यावरण संबधित जागरूकता रैली निकाली गयी। इस अवसर पर चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित रहे।

5. पंचम दिवस की प्रगति आख्या—28.02.2021 को दयानन्द वैदिक कॉलेज में चल रहे सात दिवसीय विशेष शिविर के सातवे दिन की शुरूआत चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा मलिन बस्तियों में प्रेरणात्मक कार्य से हुई प्रथम एवं चतुर्थ इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत एवं श्री सुरेन्द्र यादव ने स्वयं सेवकों के साथ वृद्धाश्रम में समाजसेवी एवं चित्रकार रोहित विनायक के साथ पहुंचकर बुजुर्गो का हाल चाल जाना। द्वितीय एवं तृतीय इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डा. नीता गुप्ता एवं डॉ. सुरेन्द्र मोहन ने छात्राओं के साथ कांशीराम कालोनी एवं घनश्याम बस्ती में मतदाता जागरूकता रैली निकाली।

6. षष्ठम दिवस की प्रगति आख्या :—01.03.2021 को दयानन्द वैदिक कॉलेज के रा.से.यो. के सात दिवसीय विशेष शिविर के छठवें दिन की शुरूआत समाज सेवा संबंधित संकल्प के साथ प्रारम्भ की गयी। उरई में रोहित विनायक द्वारा चलाये जा रहे प्रभु आदर्श कार्यक्रम के तहत अस्पताल में भर्ती मरीजों को मात्र 51/— में वितरित किये जा रहे भरपेट भोजन के सेवा कार्य में स्वयं सेवकों ने सहयोग किया। असि. कमाण्डेंट होमगार्ड श्री विनोद कुमार शाक्य ने स्वयं सेवकों को प्रशासनिक सेवाओं में सफलता पाने के लिए कई टिप्स दिए। अर्थशास्त्र विभाग के असि. प्रो. डॉ. कृपाशंकर यादव द्वारा मानव उपयोगिता पर चर्चा कर उनकी महत्ता बताई। जन्तु विज्ञान विभाग के असि. प्रो. डा. मनोज कुमार गुप्ता ने पर्यावरण स्वच्छता के बारे में बताया। मलिन बस्तियों में चलाये जा रहे चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारियों डॉ. माधुरी रावत, श्री सुरेन्द्र यादव, डा. नीता गुप्ता एंव डा. सुरेन्द्र मोहन द्वारा दहेज प्रथा, बाल विवाह, मिशन शक्ति, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं तथा नशामुक्ति के प्रति जागरूक किया।

7. सप्तम दिवस की प्रगति आख्या :— दिनांक 02.03.2021 को डी.वी. कालेज उरई मे रा.से.यो. के सात दिवसीय विशेष शिविर का सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ समापन हो गया। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से पधारे राज्य योग निरीक्षक शैलेन्द्र आर्य, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत, श्री सुरेन्द्र यादव, डॉ. नीता गुप्ता व डॉ. सुरेन्द्र मोहन ने सरस्वती प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया। राज्य योग निरीक्षक ने स्वयं सेवकों और स्वयं सेविकाओं को योग के महत्व के बारे में करके दिखाया और बताया। प्राचार्य डॉ. राजन भाटिया ने स्वयं सेवकों को ईमानदारी पूर्ण जीवन जीने की सलाह दी। डॉ. राम किशोर गुप्ता, डॉ. राजेशचन्द्र पाण्डेय, डॉ. विजय यादव, डॉ. अलकारानी परवार, डॉ. रामप्रताप सिंह, डॉ. साम्या बघेल ने अपने विचार रखे। श्री सुरेन्द्र यादव ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। रंगारंग कार्यक्रमों के साथ सात दिवसीय विशेष शिविर सम्पन्न हुआ।

रोवर–रेंजर वार्षिक रिपोर्ट

सत्र : 2019–20

डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी
रोवर प्रभारी

कॉलेज में संचालित रोवर–रेंजर की चारों यूनिट की प्रवेश प्रक्रिया के उपरान्त दिनांक 21 सितम्बर 2019 को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों को रोवर–रेंजर के इतिहास से अवगत कराते हुए गणवेश से परिचित कराया गया। दिनांक 30 नवम्बर 2019 को आयोजित एक दिवसीय शिविर में गणवेश आवंटन एवं पहनने का ढंग और उसके महत्व से रोवर–रेंजर को अवगत कराया गया। दिनांक 11 जनवरी 2020 को आयोजित एक दिवसीय शिविर में समस्त रोवर–रेंजर को प्रवेश/निपुण का पांच दिवसीय जांच एवं प्रशिक्षण शिविर हेतु तैयारियों की जानकारी दी गई। महाविद्यालय परिसर में दिनांक 31 अक्टूबर 2019 को पटेल जयन्ती, 19 नवम्बर 2019 को सड़क सुरक्षा सप्ताह, दिनांक 17 से 22 जनवरी 2020 तक आयोजित 'रुचि महोत्सव' सहित अनेक कार्यक्रमों में रोवर–रेंजर ने बढ़–चढ़ कर सहभागिता की।

दयानन्द वैदिक कॉलेज के पुस्तकालय परिसर में रोवर–रेंजर ने प्रवेश/निपुण का पांच दिवसीय जांच एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 24 जनवरी से 28 जनवरी 2020 तक किया गया, जिसमें दयानंद वैदिक कॉलेज के 45 रोवर–रेंजर तथा गांधी महाविद्यालय उरई के 33 रोवर–रेंजर ने सहभागिता की। इस पांच दिवसीय जांच एवं प्रशिक्षण शिविर के रोवर प्रशिक्षक श्री मुकेश बाबू सक्सेना, जिला ट्रेनिंग कमिशनर (स्काउट) जालौन तथा रेंजर प्रशिक्षिका सुश्री कविता वर्मा, ट्रेनिंग काउंसलर (गाइड) झांसी के कुशल नेतृत्व में रोवर–रेंजर को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस दिनांक 24 जनवरी 2020 को मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया द्वारा शिविर का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षकों द्वारा ध्वज शिष्टाचार, नियम स्काउट एवं गाइड, प्रतिज्ञा, झंडा गीत आदि की शिक्षा रोवर–रेंजर को दी गई। द्वितीय दिवस दिनांक 25 जनवरी 2020 को ध्वज शिष्टाचार, बीपी सिक्स, स्काउट एवं गाइड आंदोलन का इतिहास, गांठबंधन तथा कैंप फायर आदि की जानकारी दी गई। कैंप फायर के दौरान रोवर–रेंजर ने नाटक, लोकगीत आदि के द्वारा शिविर में जागरूकता को बढ़ाने का प्रयास किया।

दिनांक 26 जनवरी 2020 को तृतीय प्रशिक्षण दिवस में दयानंद वैदिक कॉलेज, मुख्य परिसर में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में रोवर–रेंजर ने सहभागिता की। तत्पश्चात पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता जागरूकता रैली महाविद्यालय मुख्य परिसर से अंबेडकर चौराहे तक निकाली गई। इसके उपरांत बिना बर्तन के रोवर–रेंजर ने स्वादिष्ट भोजन भी बनाया। प्रशिक्षकों द्वारा गणवेश (वर्दी) परिचय देते हुए उसकी जांच भी की गयी। अंत में अब तक दिए गए प्रशिक्षण की मौखिक जांच परीक्षा का आयोजन भी किया गया।

शिविर के चतुर्थ दिवस दिनांक 27 जनवरी 2020 को प्रशिक्षकों द्वारा रोवर–रेंजर से टेंट लगाने, प्राथमिक चिकित्सा आदि की जानकारी दी गई। 'निर्मल गंगा अभियान' के तहत एक गोष्ठी हुई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हरीमोहन पुरवार, उपाध्यक्ष, प्रबंधकारिणी कमेटी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. विजय यादव, अध्यक्ष, पर्यावरण समिति ने अपनी सहभागिता की। डॉ0 हरीमोहन पुरवार ने रोवर–रेंजर द्वारा बनाए गए टेंट,गैजेट्स आदि का निरीक्षण किया और विद्यार्थियों की कुशलता को सराहा।

शिविर के समापन दिवस दिनांक 28 जनवरी 2020 को मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री पूनम संधू, ए. एस.ओ.सी, झांसी मंडल उपस्थित रहीं। विशिष्टि अतिथि के रूप में कॉलेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान मौजूद रहे। समापन दिवस पर सर्वधर्म प्रार्थना, दीक्षा संस्कार, राष्ट्रगान तथा शिविर विसर्जन किया गया। समापन दिवस पर रोवर–रेंजर टीम ने नाटक, राष्ट्रीय गीत, लोकगीत आदि प्रस्तुत किए। सभी सहभागी रोवर–रेंजर को मेडल देकर पुरस्कृत किया गया। गांधी महाविद्यालय से आए रोवर प्रभारी डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं रेंजर प्रभारी डॉ. ममता अग्रवाल को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। पांच दिवसीय शिविर की आख्या डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी, शिविर संयोजक एवं रोवर प्रभारी ने प्रस्तुत की। शिविर के दौरान मंच संचालन डॉ0 श्रवण कुमार त्रिपाठी, प्रभारी रोवर तथा सभी अतिथियों का स्वागत एवं आभार डॉ0 अलकारानी पुरवार, रेंजर प्रभारी ने दिया। शिविर संचालन में रेंजर प्रभारी डॉ. शीलू सेंगर ने शिविर संचालन में अप्रतिम सहयोग प्रदान किया।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान सत्र में दिनांक 06 से 12 सितम्बर 2019 तक उ0प्र0 भारत स्काउट और गाईड, प्रादेशिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज में आयोजित "बेसिक एवं एडवांस रोवर / रेंजर लीडर प्रशिक्षण शिविर" में कॉलेज के डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी एवं डॉ0 श्रवण कुमार त्रिपाठी ने बेसिक रोवर लीडर कोर्स में सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त कर दक्षता प्रमाण–पत्र ग्रहण किया।

अपाला

महर्षि अत्रि की एक पुत्री थी। नाम था उसका अपाला। कुछ बड़ी हुई तो उसके शरीर पर श्वेत कुष्ठ हो गया। बहुत उपचार करने पर भी अच्छा न हुआ, वरन बढ़ता गया। पुत्री विवाह–योग्य हुई तो वर खोजा गया। उस विदुषी के ज्ञान की प्रशंसा सुनकर अनेक वर आए, पर श्वेत दागों को देखकर वापस लौट गए। ऋृषि–शिष्य वृताश्व ने बिना कुछ पूछताछ किए ही भावावेश में पाणिग्रहण कर लिया।

बाद में वृताश्व ने जब चर्म दोष देखा तो वे उदास हो गए। कभी ऋषि को, कभी अपाला को, कभी अपने को दोष देने लगे। किसी पर भार बनने की अपेक्षा अपाला अपने पिता के यहाँ वापस लौट गई। उसने अपना समस्त ध्यान अध्ययन एवं तप के लिए नियोजित कर दिया। उसकी प्रवीणता ने उसकी गणना वरिष्ठ ऋषियों में कराई। चर्म दोष की तुलना में ज्ञान और चरित्र की गरिमा भारी पड़ी।

रोवर-रेंजर वार्षिक रिपोर्ट

सत्र : 2020—21

डॉ. शीलू सेंगर
रेंजर प्रभारी

सत्र 2020—21 में रोवर—रेंजर की प्रभारी डॉ. अलकारानी पुरवार एवं डॉ. शीलू सेंगर तथा रोवर प्रभारी डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी एवं डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी द्वारा अपनी—अपनी इकाईयों का निर्धारित प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए गठन किया गया। सत्र पर्यन्त रोवर—रेंजर द्वारा संचालित गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है—

सत्र का आरम्भ दिनांक 28 अगस्त 2020 को वृक्षारोपण कार्यक्रम के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के रोवर—रेंजर ने कोरोना से बचाव के नियमों का पालन करते हुए महाविद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में वृक्षारोपण किया गया एवं वृक्ष संरक्षण का संकल्प लिया।

अक्टूबर माह में दिनांक 17 से 25 के मध्य आयोजित 'मिशन शक्ति' अभियान के अन्तर्गत एक जागरूकता रैली निकाली गई, जिसमें महाविद्यालय की रेंजर्स ने स्लोगन आदि के माध्यम से आमजन को जागरूक किया। साथ ही साथ नारी सुरक्षा, नारी सम्मान एवं नारी स्वाबलंबन से संबंधित विभिन्न महिला पुलिस अधिकारियों के वक्तव्य, संगोष्ठी एवं जूडो—कराटे प्रशिक्षण आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की रेंजर्स ने बड़ी मात्रा में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

दिनांक 15 दिसंबर 2020 को महाविद्यालय में निपुण प्रमाण—पत्र प्राप्त रोवर—रेंजर के लिए एक दिवसीय राज्यपाल पुरस्कार हेतु तैयारी शिविर का आयोजन बगिया परिसर स्थिर सेमिनार हाल में किया गया। शिविर में मुख्य रूप से झांसी मंडल की सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर सुश्री पूनम संधू जी द्वारा रोवर—रेंजर को राज्यपाल पुरस्कार हेतु प्रारंभिक जानकारी दी गई और उपस्थित रोवर—रेंजर से विमर्श के उपरान्त राज्यपाल पुरस्कार तैयारी शिविर का समय और रूपरेखा की तैयार की गई। इसी क्रम में दिनांक 4 से 6 जनवरी 2021 के मध्य त्रिदिवसीय राज्यपाल तैयारी शिविर महाविद्यालय के बगिया परिसर स्थित सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। शिविर के प्रथम दिन ए.एस.ओ.सी., झांसी सुश्री पूनम संधू जी ने उपस्थित सभी रोवर—रेंजर को विधिवत प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण शिविर में राज्य पुरस्कार से संबंधित पाठ्यक्रम, गतिविधियां यथा फाइल तैयार करना, गणवेश की महत्ता, प्रतीकों के अर्थ व महत्व प्रमुख रहे। शिविर के दूसरे दिन प्रशिक्षक श्री बृजेन्द्र झा ने बी.पी.सिक्स, गांठबंधन, ध्वज शिष्टाचार, शिविर संचालन, तम्बू निर्माण आदि का प्रशिक्षण दिया। शिविर के अंतिम दिन एक लिखित परीक्षा प्रयोग तौर पर आयोजित की गई जिसमें उपस्थित सभी रोवर—रेंजर ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। शिविर के अंतिम चरण में प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया के समक्ष ध्वज शिष्टाचार, सहित अनेक गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। शिविर में महाविद्यालय के रोवर—रेंजर के अतिरिक्त गांधी महाविद्यालय, उरई, सनातन धर्म बालिका

महाविद्यालय, उरई एवं मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच के सभी राज्यपाल पुरस्कार हेतु आवेदित रोवर–रेंजर ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

दिनांक 13 जनवरी 2021 को महाविद्यालय के पुस्तकालय परिसर में एक दिवसीय प्रारम्भिक शिविर लगाया गया जिसमें प्रवेश एवं निपुण के सभी रोवर–रेंजर को शिविर संचालक रोवर–रेंजर लीडर्स द्वारा स्काउट–गाईड के गठन, इतिहास सहित विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया।

महाविद्यालय परिसर में आयोजनों के क्रम में 72 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी 2021 को महाविद्यालय की रोवर–रेंजर की चारों ईकाइयों द्वारा एक संयुक्त सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन टी. टी. हॉल में किया गया, जिसमें सभी रोवर–रेंजर एवं सभी इकाई प्रभारी प्राचार्य महोदय के नेतृत्व में उपस्थित हुए। इस अवसर पर समस्त रोवर–रेंजर को सहभागिता प्रमाण पत्र भी वितरित किया गया।

इसी क्रम में 4 फरवरी 2021 को चौरी–चौरा शताब्दी समारोह के शुभारंभ के अवसर पर एक नगर भ्रमण रैली आयोजित की गई। इस अवसर पर भाषण, देशभक्ति गीत, स्लोगन आदि देशभक्ति कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए जिसमें सभी रोवर–रेंजन ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

जनपद के अपर पुलिस अधीक्षक डॉ. अवधेश सिंह एवं महिला थाना प्रभारी नीलेश कुमारी के नेतृत्व में दिनांक 8 मार्च 2021 को 'मिशन शक्ति' कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय की कुशल रेंजर्स को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सत्र 2020–21 की गतिविधियों को जारी रखते हुए रोवर–रेंजर का पांच दिवसीय, प्रवेश व निपुण प्रमाण पत्र हेतु प्रशिक्षण एवं जांच शिविर का आयोजन दिनांक 13 से 17 मार्च 2021 के मध्य गांधी महाविद्यालय, उरई में आयोजित किया गया। इसमें महाविद्यालय की रोवर–रेंजर की चारों इकाइयों ने रोवर लीडर डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी एवं रेंजर लीडर डॉ. शीलू सेंगर के निर्देशन में शिविर में सहभागिता की। शिविर के प्रशिक्षक श्री मुकेश बाबू सक्सेना, डॉ. अर्चना व्यास, श्री बृजेंद्र झा ने शिविर को सामूहिक शिष्टाचार, समूह व्यवहार, ध्वज शिष्टाचार, झंडा गीत, बीपी सिक्स, व्यायाम गाँठबंधन, प्राथमिक चिकित्सा, बिना बर्तन भोजन का निर्माण, कैम्प फायर, नक्शा अध्ययन आदि भौतिक प्रशिक्षण के साथ–साथ निबंध व पोस्ट प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। शिविर के समापन कार्यक्रम का शुभारंभ आजादी की 125वीं वर्षगांठ से संबंधित कार्यक्रम ' अमृत महोत्सव' के साथ हुई। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में जनपद जालौन की जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिले के जिला विद्यालय निरीक्षक भगवत पटेल जी उपस्थित रहे। अपने उदबोधन में जिलाधिकारी महोदया ने सभी रोवर–रेंजर को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए युवाओं को अपनी पूरी क्षमता एवं शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। जिला विद्यालय निरीक्षक भगवत पटेल ने स्काउट और गाइड के संस्थापक लार्ड बेडेन पावेल को याद करते हुए कहा कि रोवर–रेंजर में देश सेवा का भाव हमेशा ही निहित रहता है, इसीलिए यह देश ही नहीं वैश्विक स्तर का सबसे बड़ा सेवा प्रदाता संगठन कहा जाता है। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के उपस्थिति रोवर–रेंजर के लीडर्स एवं रोवर व रेंजर को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। शिविर में महाविद्यालय के लगभग 50 रोवर–रेंजर ने सहभागिता की।

वीमेन सेल की प्रगति आख्या

सत्र : 2019–2021

डॉ. शैलजा गुप्ता
प्रभारी, वीमेन सेल

वीमेन सेल का उद्देश्य छात्राओं के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करना एवं उन्हें समाज की दिशा के अनुसार एक सशक्त आत्मनिर्भर इकाई बनाना है। इसी लक्ष्य की सार्थकता को ध्यान में रखते हुए दिनांक 25.11.2019 को आयोजित संगोष्ठी में नारी सशक्तीकरण, पर्यावरण जागरूकता, आत्मसुरक्षा आत्मनिर्भरता आदि अनेक पहलुओं पर विचार कर निर्णय लिया गया कि उपर्युक्त पहलुओं पर छात्राओं को एकत्रित कर उन्हें देश का सजग और कुशल प्रहरी बनाया जाय तभी देश की प्रगति सकारात्मक रूप में संभव है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये दिनांक 6.3.2020 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. रेनू चन्द्रा, श्री रतन कुमार, पूर्व डी.आई.जी. एवं अध्यक्ष वी. फाइन्डेशन, डा. देवेन्द्र कुमार, श्री अनिल कुमार सिंदूर, श्रीमती सारिका आनन्द आदि उपस्थित रहे जिन्होंने बताया कि महिला स्वयं एक सशक्त व्यक्तित्व है जिसकी स्वयं में अहसास करके वह परिवार, समाज व देश को प्रगतिशील दिशा प्रदान कर सकती है। इसके उपरान्त IGNOU के एक कार्यक्रम में छात्राओं को बताया गया कि भविष्य में आत्मनिर्भर बनने हेतु उपयोगी शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है जिसके लिए IGNOU द्वारा बहुत सारे कोर्सेज संचालित हो रहे है जो आपके आत्मनिर्भर बनाने में अत्यन्त उपयोगी हैं।

दिनांक 12.01.2021 को Online संगोष्ठी आयोजित की गयी और विवेकानन्द जी की जयंती मनायी गयी जिसे युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसमें अनेक छात्राओं के अपने विचार प्रस्तुत किये तथा यह बताया कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर असीमित ऊर्जा है जिसका यदि सही दिशा में उपयोग किया जाये तो सफलता निश्चित रूप से समयान्तर्गत प्राप्त होती है इसके लिये एकाग्रता, कर्मठता, ईमानदारी व असीम उत्साह आवश्यक है। वीमेन सेल अनवरत प्रयासरत है कि छात्राओं को जागरूक व सचेत कर उन्हें समसामयिक प्रगति की दिशा की ओर अग्रसर किया जाये।

संघं शरणं गच्छामि

बात उन दिनों की है, जब कौशल नरेश बौद्ध धर्म को राजधर्म बनाना चाहते थे। उन्होंने मुख्य श्रमण से पूछा–"संघं शरणं गच्छामि, के अनुसार बुद्ध मतानुयायी को बौद्ध विहारों में भिक्षु संघ के साथ रहना होगा क्या ?" प्रधान भिक्षु ने कहा–"राजन्! संघ शब्द के वल भिक्षु संघ तक सीमित नहीं। यह तो सामाजिकता का पर्याय है। व्यक्ति कितना भी विद्वान और कितना भी धर्मपरायण हो, पर यदि समाजनिष्ठ नहीं हो तो वह समस्या पैदा करने ाला ही बन जाता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे समाज को लक्ष्य करके आचरण और मर्यादाओं का निर्धारण करना आना ही चरित। सामूहिकता, संगठन, संघबद्धता की अनिवार्यता यह सूत्र बतलाता है।"

Report of the Environment Committee (2019-20)

Samya Baghel
Member
Environment Committee

The Environment committee of the college has taken up the task of keeping the college campus clean and green for which all the members have been active throughout the year to achieve set goals. The activities of the committee began with plantation as part of the 'Van Mahotsav' from July 1-7-2019. A seminar was also organized by the committee in which detailed discussions were held for the conservation of the environment. In the seminar, Dr. Taresh Bhatia, the Principal emphasized the need to keep the surroundings green. Chief guest Dr. Anil Kumar Srivastava Ex. Principal urged everyone to consider the earth as their own mother and take care of plants as we take care of our own children and discussed the benefits of plantation. He focused specifically on the tropical forests and pointed out that tropical forests cover approximately 7% dry land area on earth. These forests provide goods and services including timber, food, fodder, medicines, hydrological cycle, shelter, culture, aesthetic and recreational activities to the tune of billion US dollars per year. Dr. Vijay Yadav pointed towards the fact that a single tree after surviving for about 100 years provides goods and services worth 64 lacs, as oxygen worth Rs. 11 lacs, fertilizers and prevention of soil erosion worth Rs. 12.8 lacs, absorption of air polution worth Rs. 21 lacs, shelter to animals, birds and fruits, flowers worth Rs. 10.6 lacs, medicines etc. worth Rs. 8.6 lacs etc. The faculty and staff members were made aware about the conservation of forests. The role of trees in carbon sequestration and balancing the environment was also pointed out. The environment committee inspired everyone to keep their surroundings green by planting and coserving trees.

The efforts of the commitee got a boost following an order from the state government to plant trees in an election mode. Under the supervision of the environment committee, a massive plantation drive was carried out within and around the college campus and library on 9th August, 2019. The planation was organized to mark the 77th anniversary of the 'Quit India moverment'. Among the 151 indigenous trees that were planted, Neem, Kanji, Pakhar, Sahjan, Amla Sagaun,

Seasame and Shami were the main varieties. Dr. Vijay Yadav highlighted the specific importance of native plant species and specifically emphasized the importance of tropical trees in comparison to the temperate onces for Bundelkhand region. The election mode plantation drive saw active participation from the faculty, non-teaching staff and students of the college. Honorary secretary Dr. Devendra Kumar, Principal Dr. Taresh Bhatia, Ex. Principal Dr. Anil Kumar Srivastava, Dr. R.K. Gupta, Dr. Anand Kumar Khare, Dr. Alka Rani Purwar, Dr. Rajesh Chandra Pandey, Dr. Madhuri Rawat marked the occasion with their presence.

The environment committee is also tasked with creating awareness on various days and occasions related to the environment. In this regard, World Ozone day was observed on September 16, 2019 On the occasion, the undegraduate and postgraduate students were made aware about the ozone layer depletion and ongoing efforts for its recovery by Dr Vijay Yadav, Dr. Praveen Kumar, Dr. Neel Ratan, Mr. Surendra Yadav, Mr. Gaurav Yadav and Ms. Samya Baghel in different sessious spread over the day. Similarly, during the World Wildlife Week from October 2-8, 2019 various interactive sessions were held with students so that they understood the importance of diverse wildlife found in India.

The environment committee with the support of faculty, staff and students of the college has been and will continue to strive towards creating a clean and green campus. Special thanks are due to all members of the committee for making their effort to convert all programs into a grand success.

वाह्यावरण

सत्य और असत्य नाम के दो भाई थे। सत्य स्वच्छ और सुंदर, असत्य मलिन और देखने से ही अप्रिय लग रहा था। जहाँ जाता असत्य ठुकराया और दुतकारा ही जाता, इसलिए उसने सत्य से ईर्ष्यावश बदला लेने का निश्चय कर लिया।

एक बार दोनों तीर्थयात्रा पर निकले, वहाँ भी यही स्थिति रही। सत्य का तो सम्मान होता; क्योंकि वह सुंदर लगता और असत्य का अनादर; क्योंकि न उसके वस्त्र साफ थे और न आकृति।

घूमते–घूमते बदरीनाथ पहुँचे। स्नान के लिए एक सरोवर में उतरे। सत्य देह मल–मलकर स्नान करने में लगा रहा, उसने यह भी न देखा कि इस बीच असत्य चुपचाप उसके कपड़े पहनकर भाग गया। बाहर निकलने पर सत्य को विवश हो असत्य के कपड़े पहनने पड़े। तब से दोनों बराबर घूम रहे हैं और हर व्यक्ति के पास जाते हैं, पर असत्य की पूजा होती है, क्योंकि उसने सत्य के कपड़े पहन लिए हैं और सत्य अब दर–दर मारा–मारा फिर रहा है।

समारोह समिति की संक्षिप्त आख्या
(2019–2020)

डॉ. अलकारानी पुरवार
मुख्य समारोह अधिकारी

गत् वर्षों की भांति सत्र 2019–2020 में भी महाविद्यालय की समारोह समिति के निर्देशन में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनका विवरण निम्नवत् है :–

1. **योग कार्यक्रम**–पंचम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दिनांक 21 जून 2019 को महाविद्यालय के पुस्तकालय सभागार में एक योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें योग प्रशिक्षक श्री महेन्द्र विक्रम सिंह के नेतृत्व में योग के विभिन्न आसनों का प्रशिक्षण ग्रहण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने योगासनों एवं प्राणायामों की क्रियाविधि एवं उनसे होने वाले लाभों के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस कार्यक्रम में एन0सी0सी0 की 58वीं बटालियन के एस0एम0 अनिल चाहर, पी0आई0 स्टाफ इन्दर सिंह, थर्ड ऑफीसर जितेन्द्र कुमार वर्मा एवं एन0सी0सी0 प्रभारी ले0डॉ0 रामप्रताप सिंह के नेतृत्व में प्रिंसी वर्मा, दीप्ति कुशवाहा, सुरजीत सहित अनेक कैडेट्स ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। प्राचार्य डॉ0 आनन्द कुमार खरे ने अपने उद्बोधन में कहा कि योग जीवन को न केवल निरोगी बनाता है बल्कि व्यक्ति के आत्मबल, बुद्धिबल, शारीरिक बल में भी असीम वृद्धि करता है। इस अवसर पर डॉ0 तारेश भाटिया, डॉ0 विजय कुमार यादव, डॉ0 आलोक पाठक, डॉ0 हर्ष गर्ग, डॉ0 हृदयकान्त श्रीवास्तव, श्री अनन्त खरे, श्री अरुणलाल, श्रीमती संगीता सिंह आदि अनेक कर्मचारियों ने सहभागिता कर योगाभ्यास किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी ने किया।

2. **'वन महोत्सव' समारोह**– दिनांक 05 जुलाई 2019 को 'वनमहोत्सव' के अन्तर्गत पर्यावरण समिति द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया ने कहा कि हम सभी को अपने परिसर के आस–पास वृक्षारोपण कर संरक्षण करना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि वृक्षारोपण के बाद पौधे की बच्चों की तरह देखभाल व सुरक्षा करने से ही इन आयोजनों का उद्देश्य पूरा होगा। पर्यावरण समिति के संयोजक डॉ0 विजय कुमार यादव ने कम्प्यूटर प्रजेन्टेशन के माध्यम से वृक्षारोपण के लाभ व न करने पर होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला। वनस्पति विज्ञान के प्रभारी डॉ0 आर0के0 गुप्ता ने वैदिक काल से उपलब्ध पौधों के धार्मिक महत्व की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन पर्यावरण समिति के उपसंयोजक डॉ0 प्रवीण कुमार व आभार प्रदर्शन समिति के सदस्य श्री गौरव यादव ने किया। इस अवसर पर डॉ0 अलकारानी पुरवार, डॉ0 मंजू जौहरी, डॉ0 शैलजा गुप्ता, डॉ0 परमात्मा शरण गुप्ता, डॉ0 वर्षा राहुल, श्री सुरेन्द्र यादव आदि अनेक शिक्षक एवं शिक्षणेतर कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

3. **वृक्षारोपण महाकुम्भ 2019**– 'भारत छोड़ो आन्दोलन 'की 77वीं वर्षगांठ के अवसर पर महाविद्यालय में

'वृक्षारोपण महाकुम्भ 2019' मनाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण समिति के संयोजक डॉ0 विजय कुमार यादव ने बताया कि वृक्ष ग्लोबल वार्मिंग, जैव–विविधता, भूमि संरक्षण एवं प्रदूषण कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी ने कहा कि हम सभी को पौधों के संरक्षण में अपनी महत्वपूर्व भूमिका निभानी चाहिए जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके। इसके उपरान्त महाविद्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार के पौधे जिनमें नीम, पाखर, इमली, ऑवला, सागौन, शीशम एवं शमी आदि पौधों का रोपण महाविद्यालय के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार, प्राध्यापक डॉ0 आर0के0 गुप्ता, डॉ0 आनन्द कुमार खरे, डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय आदि प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं एन0सी0सी0 तथा रोवर्स / रेंजर के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में जनपद के वृक्षारोपण उच्च शिक्षा नोडल अधिकारी प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्र यादव एवं डॉ0 मलिखान सिंह बघेल की कुशल सहभागिता रही।

4. **स्वतन्त्रता दिवस समारोह**– विगत वर्षों की भॉति इस वर्ष भी महाविद्यालय में 15 अगस्त 2019 को स्वतन्त्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। माननीय प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार जी द्वारा प्रातः 08 बजे महाविद्यालय परिसर में ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा उच्च शिक्षा निदेशक के सन्देश का वाचन किया गया। इसी क्रम में डॉ0 हरीमोहन पुरवार जी ने अपने उद्‌बोधन में देश के शहीदों को नमन करते हुए उनके देश की ख़ातिर किये गए बलिदानों को याद किया। प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी ने सभी से देश के प्रति अपने कर्तव्यों को भली–भॉति निर्वहन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अलका रानी पुरवार ने किया। अन्त में मिष्ठान्न वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

5. **जश्न–ए–आज़ादी कार्यक्रम**–दिनांक 16 अगस्त 2019 को 73वें जश्न–ए–आज़ादी के अवसर पर इन्टैक, उरई चैप्टर के संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय के पुस्तकालय सभागार में एक मुद्रा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वागत् उद्‌बोधन में प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुये कहा कि इस प्रेरणादायी प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान एवं सृजनात्मक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होगी। प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष एवं इन्टैक के संस्थापक अध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार ने तिरंगे को भारतमाता का चिह्न बताते हुये इसका दिल से सम्मान करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सन्तोष कुमार (सी0ओ0 सिटी, उरई) ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को आत्मसात करने तथा उसके संरक्षण की बात कही। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 शैलजा गुप्ता एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण एवं छात्र–छात्रायें उपस्थित रहे।

6. **'फिट इंडिया मूवमेन्ट' कार्यक्रम**– महाविद्यालय के सेमिनार हॉल मे दिनांक 29 अगस्त 2019 को भारत सरकार द्वारा आयोजित 'फिट इंडिया मूवमेन्ट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत भारत सरकार के खेल एवं मानव संसाधन विभाग द्वारा आयोजित इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली से दूरदर्शन द्वारा सजीव प्रसारण एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा दिलाई जाने वाली 'फिटनेस शपथ' के द्वारा हुआ। संगोष्ठी का आरम्भ करते हुये बी0एड0 विभाग के छात्र वैभव शुक्ला व छात्रा रश्मि ने फिटनेस पर अपने विचार प्रस्तुत किये। 'कुपोषण से जंग– सुपोषण के संग' इस

उद्घोष के साथ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 सुरेन्द्र सिंह चौहान ने फिटनेस एवं खेलों के महत्व के बारे में बताया। इस अवसर पर मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ0 आर0के0 गुप्ता एवं डॉ0 विजय कुमार यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में डॉ0 शैलजा गुप्ता ने उपस्थित सभी लोगों को प्राणायाम व योगाभ्यास कराया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया।

7. **गांधी एवं शास्त्री जयन्ती समारोह**—विगत् वर्षों की भॉति इस वर्ष भी दिनांक 02 अक्टूबर 2019 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्व0 लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती धूमधाम से मनायी गयी। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी द्वारा सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत आयोजित भाषण प्रतियोगिता 'वर्तमान समय में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता" के विजयी प्रतिभागियों अनिरुद्ध प्रताप सिंह प्रथम, यशवर्धन पटसारिया द्वितीय और जितेन्द्र कुमार तृतीय को पुरस्कृत किया गया। तत्पश्चात कार्यालय भवन में पूज्य संत श्री भवानीशंकर चच्चा जी की स्मृति में हवन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा प्रसाद वितरण हुआ। इस अवसर पर समस्त महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

8. **राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह**— दिनांक 31 अक्टूबर 2019 को शिक्षक—शिक्षा विभाग परिसर स्थित साभार में 'राष्ट्रीय एकता दिवस' का शुभारम्भ माँ सरस्वती एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा पर प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया द्वारा माल्यार्पण किया गया। सभागार में उपस्थित सभी लोगों को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' की शपथ दिलाने के पश्चात अपने उद्बोधन में प्राचार्य जी ने कहा कि राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करते समय हमें पटेल जी की शिक्षाओं को ध्यान में रखते हुये पूर्ण सजगता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। डॉ0 आनन्द कुमार खरे ने कहा कि सरदार पटेल के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय थे। डॉ0 विजय कुमार यादव ने कहा कि पटेल जी क्षेत्रीय विकास पर बहुत जोर देते थे। डॉ0 राम प्रताप ने कहा कि राष्ट्रीय एकता की अक्षुण्णता के लिए हम सभी नागरिकों को जिम्मेदारी निभानी चाहिए। इस अवसर पर अनेक छात्र—छात्राओं ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी ने एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 राजेश पालीवाल द्वारा किया गया।

9. **भाषण प्रतियोगिता**— पावरग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लि0 (भारत सरकार का उद्यम) के प्रायोजकत्व में दिनांक 5 नवम्बर 2019 को 'ईमानदारी : एक जीवनशैली' विषय पर महाविद्यालय में एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में श्री एम0के0 गुप्ता (जू0इं0) द्वारा प्रतियोगिता का उद्देश्य एवं पावरग्रिड कॉरपोरेशन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर पावरग्रिड कॉरपोरेशन पर आधारित एक टेलीफिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यलय के लगभग 50 छात्र / छात्राओं ने प्रतिभाग कर अपने मौलिक एवं उत्कृष्ट विचार प्रस्तुत किए, जिसमें वागीशा खरे ने प्रथम, अनिरुद्ध प्रताप सिंह ने द्वितीय, यशवर्धन पटसारिया ने तृतीय एवं काजल मिश्रा व दीक्षा मारवाड़ी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोक कुमार राय (उप—महाप्रबन्धक) एवं कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया

उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल की भूमिका डॉ0 आनन्द कुमार खरे, डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय एवं श्री राम अवतार मीना ने निभायी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अलकारानी पुरवार एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया।

10. **सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम–** दिनांक 19 नवम्बर 2019 को महाविद्यालय के पुस्तकालय सभागार में 'सड़क सुरक्षा जागरूकता' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती सोमलता यादव (ए0आर0टी0ओ0, उरई) ने सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित व्यावहारिक लापरवाहियों से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि श्री संतोष कुमार (सी0ओ0 सिटी उरई) ने सड़क दुर्घटनाओं के लिए अभिभावकों को जागृत व संवेदनशील होने की जरूरत पर ज़ोर दिया। विशिष्ट अतिथि श्री मनोज कुमार सिंह (ए0आर0टी0ओ, प्रवर्तन) ने सड़क दुर्घटनाओं के लिए लापरवाही एवं अस्त–व्यस्त जीवन शैली को जिम्मेदार बताया। विशिष्ट अतिथि श्री अमित कुमार (पी0टी0ओ0) ने फर्स्ट एड बाक्स के प्रयोग से अवगत कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया ने सड़क सुरक्षा के सभी नियमों का गम्भीरता से पालन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में छात्र/छात्राओं द्वारा लघु नाटक प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम संचालन डॉ0 शैलजा गुप्ता द्वारा किया गया।

11. **संविधान दिवस–** दिनांक 26 नवम्बर 2019 को सेमिनार हॉल में संविधान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्त डॉ0 आदित्य कुमार ने भारतीय संविधान पर विस्तृत चर्चा की एवं बताया कि संविधान ने सर्वोच्च शक्तियाँ जनता में निहित की हैं, अतः जनता को इसमें आस्था होनी चाहिए। प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया ने भी संविधान में आस्था रख संवैधानिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का संकल्प दिलाया। डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा संविधान की शपथ दिलायी गयी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नगमा खानम द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के अनेक शिक्षक, शिक्षणेतर कर्मचारी एवं छात्र/छात्राऐं उपस्थित रहे।

12. **जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता**–परिवहन विभाग जालौन द्वारा दिनांक 28 नवम्बर 2019 को महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में "ब्राजीलिया डिक्लेरेशन के दृष्टिगत् सड़क दुर्घटनाओं में 2020 तक त्वरित कमी लाने हेतु उठाए जाने वाले कदम" विषय पर जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर स्वागत् उद्बोधन देते हुए प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा हेतु युवाओं में जागरूकता लाने के उद्देश्य से किये जा रहे ये प्रयास निश्चित ही कारगर साबित होंगे। इस प्रतियोगिता में जालौन जिले के लगभग 26 महाविद्यालयों से चुने हुए 46 प्रतिभागियों में अपना भाषण कौशल से दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु विचार प्रकट कर अनेक सुझाव दिये। निर्णायक मण्डल की भूमिका में प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया, ए0आर0टी0ओ0 सोमलता यादव एवं पी0टी0ओ0 अमित कुमार जी द्वारा निभाई गई। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु0 वागीशा खरे, द्वितीय स्थान दीपिका दैपुरिया एवं तृतीय स्थान अनिरुद्ध प्रताप सिंह ने प्राप्त किया, जिनको प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि बाद में जिला प्रशासन द्वारा प्रदान किया जाना था। इस अवसर पर अपने उद्बोधन

में श्रीमती सोमलता यादव ने कहा कि सरकार द्वारा ब्राजीलिया डिक्लेरेशन के सुझावों को अपने देश में लागू कर बहुत ही अच्छा कार्य किया है। पी0टी0ओ0 अमित कुमार ने कहा कि सरकारें अपने स्तर पर प्रयास करती हैं लेकिन उनको सार्थक बनाना नागरिकों का दायित्व होता है। मुख्य समारोह अधिकारी डॉ0 अलकारानी पुरवार ने कहा कि नियम बोझ नहीं होते हैं। अपितु वे हमारे जीवन की सुरक्षा हेतु निर्धारित किये जाते हैं। इस प्रतियोगिता को सम्पन्न कराने में डॉ0 श्रवण कुमार त्रिपाठी, कु0 साम्या बघेल, डॉ0 सर्वेश कुमार शांडिल्य, डॉ0 नीति कुशवाहा, श्री नमो नारायण आदि ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 शैलजा गुप्ता एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया।

13. **अटल बिहारी वाजपेयी जयन्ती समारोह**– भारतरत्न माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 96 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक 25 दिसम्बर 2019 को महाविद्यालय में एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की माननीय प्रबन्धकारिणी समिति के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार, अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार, प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया एवं समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री मा0 अटलबिहारी वाजपेयी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उपस्थित अतिथियों ने माननीय अटल जी के उत्कृष्ट राजनैतिक विचारों एवं साहित्य लेखन के माध्यम से दलीय भावनाओं से ऊपर उठकर देशहित के लिए कार्य करने की शैली की भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। तत्पश्चात् महाविद्यालय में एक भावना मैत्री क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया।

14. **31 वें राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह** 2020 का उद्घाटन कार्यक्रम–इसी क्रम में दिनांक 11 जनवरी 2020 को पुस्तकालय सभागार में 31वें सड़क सुरक्षा सप्ताह 2020 का उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। पी0टी0ओ0 अमित कुमार एवं संभागीय परिवहन अधिकारी श्री मनोज कुमार सिंह ने अपने–अपने वक्तव्यों में उत्तर प्रदेश में सड़क दुर्घटना सबसे ज्यादा होने पर चिंता व्यक्त की। अपर पुलिस अधीक्षक डॉ0 अवधेश कुमार ने कहा कि हमें संकल्प लेना होगा कि सड़क सम्बन्धित नियमों का उल्लंघन न तो स्वयं करना है न ही दूसरों को करने देना है। अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार ने कहा कि सड़क सुरक्षा अन्तर्मन की जागृति से ही लाना संभव है। मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी श्री प्रमिल कुमार जी ने यातायात नियमों का निष्ठावान् होकर पालन करने पर जोर दिया। इस अवसर पर जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्रा कु0 वागीश खरे (डी0वी0 कालेज, उरई) कु0 दीपिका दैपुरिया (जमुना देवी नरेशचन्द्र महाविद्यालय, उरई) एवं अनिरुद्ध प्रताप सिंह (डी0वी0 कालेज, उरई) को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सड़क सुरक्षा जागरुकता सम्बन्धी एक प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक बी0एड0 छात्र/छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। अन्त में उपस्थित समस्तजनों को सड़क से सुरक्षा सम्बन्धित नियमों की शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 शैलजा गुप्ता द्वारा किया गया।

15. **रुचि महोत्सव**–दयानन्द वैदिक कालेज, उरई के पुस्तकालय सभागार में दिनांक 17–22 जनवरी को मातुश्री चित्रादेवी पुरवार की स्मृति में पांच दिवसीय "रुचि महोत्सव" का आयोजन किया गया।

(क) दीप प्रदर्शनी–प्रथम दिवस अर्थात् 17 जनवरी 2020 को समाजशास्त्र विभाग द्वारा दीप संग्रह प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन ए0डी0एम0 श्री प्रमिल कुमार सिंह, महोत्सव के संरक्षक डॉ0 हरीमोहन पुरवार, प्रबन्धकारिणी कमेटी के माननीय अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार, प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया, प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य डॉ0 राकेश गुप्ता श्री विश्वनाथ पुरवार, विभाग प्रभारी डॉ0 आनन्द खरे द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस प्रदर्शनी में अनेकों छात्र/छात्राओं ने अपने–अपने दीप संग्रहों का प्रदर्शन कर सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। इस दीप प्रदर्शनी में डॉ0 हरीमोहन पुरवार एवं श्रीमती संध्या पुरवार के अनूठे दीप संग्रह–जिसमें श्वेतदीप, रक्तदीप, एकमुखी दीप, द्विमुखी दीप, त्रिमुखी दीप, बहुमुखी दीप आदि। विभिन्न दीप एवं अनेकानेक क्राफ्ट वर्क से सुसज्जित दीप विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे।

(ख) आर्ट एवं क्राफ्ट प्रदर्शनी–रुचि महोत्सव के द्वितीय दिवस अर्थात् 18 जनवरी 2020 को शिक्षक–शिक्षा विभाग एवं शिक्षाशास्त्र विभाग के सहयोग से 'आर्ट एवं क्राफ्ट प्रदर्शिनी' का शुभारम्भ जिला कारागार अधीक्षक श्री सीताराम शर्मा द्वारा किया गया। इस प्रदर्शिनी में छात्र/छात्राओं द्वारा निष्प्रयोज्य सामग्री (वेस्ट मटेरियल) का उपयोग करते हुये अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। इसमें अनेक छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की। बी0एड0 विभाग प्रभारी डॉ0 शैलजा गुप्ता एवं अन्य विभागीय शिक्षकों ने भी इस प्रदर्शिनी में विशेष योगदान दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 राजेश पालीवाल द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में विशेषज्ञ अतिथि श्रीमती मंजू गुप्ता का आर्ट एवं क्राफ्ट संकलन उल्लेखनीय रहा।

(ग) शंख एवं प्रतिरूप प्रदर्शनी– मातृश्री चित्रादेवी पुरवार की स्मति में आयोजित रुचि महोत्सव के तृतीय दिवस अर्थात् 20 जनवरी 2020 को जन्तुविज्ञान विभाग द्वारा शंख एवं "जन्तु प्रतिरूप प्रदर्शनी" का शुभारम्भ सी0ओ0 सिटी श्री संतोष कुमार द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में जन्तु विज्ञान के विद्यार्थियों सहित सभी शोधछात्रों ने सक्रिय सहभागिता की और कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। विभाग प्रभारी डॉ0 विजय यादव ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया एवं सुश्री साम्या बघेल ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर डॉ0 हरीमोहन पुरवार एवं श्रीमती संध्या पुरवार का अनूठा शंख संग्रह विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

(घ) सिक्का प्रदर्शनी– रुचि महोत्सव के चतुर्थ दिवस अर्थात् 21 जनवरी 2020 को इतिहास विभाग द्वारा "सिक्का एवं मुद्रा प्रदर्शनी" का शुभारम्भ प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य श्री हरिशंकर रावत, विशेषज्ञ अतिथि श्री अयूब अहमद खां द्वारा किया गया। स्वागत भाषण देते हुए डॉ0 मन्जू जौहरी ने कहा कि अर्थव्यवस्था किसी भी देश की रीढ़ होती है। और अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है मुद्रा। उन्होंने आगे कहा कि इस प्रदर्शनी के संरक्षक डॉ0 हरीमोहन पुरवार जी की प्रेरणा से सिक्कों के समृद्ध इतिहास की जानकारी हमें उपलब्ध हो रही है। इस प्रदर्शनी में अनेकों छात्र/छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता की। इस कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ0 सर्वेश कुमार शाण्डिल्य द्वारा किया गया एवं विशेषज्ञ अतिथि के रूप में श्री अयूब अहमद खां का सिक्का संकलन सराहनीय रहा।

(ड) रुचि संग्रह प्रदर्शनी— रुचि महोत्सव के अन्तिम दिन अर्थात् 22 जनवरी 2020 को अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित "रुचि संग्रह प्रदर्शनी" का शुभारम्भ महिला थाना प्रभारी श्रीमती नीलेश कुमारी द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में विशेषज्ञ अतिथि के रूप में श्री अनुज गर्ग ने अपने डाक–टिकट संग्रह एवं श्रीमती संध्या पुरवार ने 3 डी संग्रह का प्रदर्शन ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाया इस प्रदर्शनी में कुल 38 छात्र/छात्राओं सहित अनेक शिक्षकों एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों ने अपने रुचि संग्रहों का प्रदर्शन कर सक्रिय सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अतुल प्रकाश बुधौलिया द्वारा किया गया। नया पैराग्राफ मातुश्री चित्रादेवी की स्मृति में आयोजित पांच दिवसीय "रुचि महोत्सव" महाविद्यालय प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार के संरक्षकत्व एवं अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। उनकी प्रेरणा से ही छात्र/छात्राओं, शिक्षकों एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों सहित सभी सहभागियों को प्रतिदिन प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। बच्चों में छिपी सर्जनात्मक एवं संग्रहात्मक प्रतिभाओं को उभारने एवं अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से आयोजित "रुचि महोत्सव" अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में काफी हद तक सफल रहा। इस कार्यक्रम में वैदिक समिति के अनेक सदस्यों एवं शहर के प्रतिष्ठित एवं प्रबुद्धजनों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही जिसमें डॉ0 राकेश गुप्ता, श्री राधेरमण पुरवार, श्री विश्वनाथ पुरवार, श्री के0के0 गहोई, श्री राकेश अग्रवाल आदि प्रमुख हैं।

16. प्रतिभा सम्मान समारोह—दिनांक 23 जनवरी 2020 को महाविद्यालय पुस्तकालय सभागार में "डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया की स्मृति" में आयोजित "प्रतिभा सम्मान समारोह" का आयोजन हुआ जिसमें विगत दो सत्रों 2017–18 एवं 2018–19 के मेधावी छात्र/छात्राओं को सम्मानित किया गया। स्वागत उद्बोधन में प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया ने अपने पिता डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया के उल्लेखनीय व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डॉ0 देवेन्द्र कुमार ने पुरस्कृत विद्यार्थियों को बधाई देते हुये उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। विशिष्ट अतिथि डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि ऐसी प्रतिभाओं से समस्त महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित होता हैं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार ने कहा कि ऐसे प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान अन्य छात्रों के लिए प्रेरणादायी साबित होगा। समारोह में सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में सत्र 2018–19 के परास्नातक स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त विद्यार्थियों प्रतीक्षा कटारे (संगीत विभाग), दीक्षा अग्रवाल (अंग्रेजी विभाग) एवं प्रांजल गुप्ता (गणित विभाग) को सम्मानित किया गया। इसी क्रम में सत्र 2018–2019 एवं 2017–18 में महाविद्यालय में अपने–अपने वर्ग में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले एवं पाठ्येतर गतिविधियों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले उत्कृष्ट विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् NET/JRF परीक्षा उत्तीर्ण सत्येन्द्र गुप्ता (राजनीति विज्ञान), शुमरा अंसारी (भूगोल), मानसी गुप्ता (संगीत) एवं कु0 काजल मिश्रा (हिन्दी), को विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 शैलजा गुप्ता एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अलकारानी पुरवार द्वारा किया गया।

17 गणतन्त्र दिवस समारोह— विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय में 26 जनवरी 2020 को गणतन्त्र दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। मा0 प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन

पुरवार द्वारा प्रातः 10 बजे महाविद्यालय परिसर में ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात् डॉ0 सर्वेश कुमार शांडिल्य द्वारा उच्चशिक्षा निदेशक का संदेश वाचन किया गया। इस अवसर पर मा0 प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य डॉ0 राकेश गुप्ता, श्री सत्यप्रकाश खरे, श्री कैलाश खरे एवं पूर्व प्राचार्य डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव उपस्थित रहे। उपस्थित सभी अतिथियों ने अपने उद्बोधन में देश के शहीदों को नमन करते हुये सभी से अपने कर्तव्यों का भलीभांति निर्वहन करने का आवाहन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। अन्त में मिष्ठान वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

18. **निर्मल गंगा जागरुकता गोष्ठी**– दिनांक 27 जनवरी 2020 को पुस्तकालय परिसर में उ0प्र0 सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम "निर्मल गंगा जागरुकता अभियान" विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये डॉ0 हरीमोहन पुरवार जी ने कहा कि गंगा हमारी माँ ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति को द्योतक भी है और वाहक भी है। उसकी निर्मलता को कायम रखना हमारा नैतिक दायित्व है। पर्यावरण समिति के संयोजक डॉ0 विजय कुमार यादव ने कहा कि गंगा हमारे देश की सांसों में बसती है और उनका संरक्षण ही हमें आगाह करेगा कि हम अगली पीढ़ी को क्या देकर जा रहे हैं। डॉ0 अलकारानी पुरवार ने कहा कि जिस प्रकार नवान्य के पारण के लिए अग्निदेव प्रथम पूज्य हैं और क्रमबद्ध ढंग से पर्यावरण के प्रत्येक जीव के लिए हमारी संस्कृति में भोज्य प्रणाली है, उसी प्रकार हमारे देश की नदियाँ हैं जो आरम्भ से अन्त तक विभिन्न संस्कृतियों की वाहक है। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 श्रवण कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्यरूप से रोवर/रेंजर छात्र/छात्रायें, प्रभारी एवं प्रशिक्षकगण उपस्थित रहे।

19. **महिला सशक्तिकरण संगोष्ठी**–दिनांक 06 मार्च, 2020 को महाविद्यालय की वीमेन सेल एवं वूमेन एम्पावरमेन्ट फाउण्डेशन, कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में एक महिला सशक्तिकरण संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उक्त संस्था के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री रतनकुमार श्रीवास्तव (पूर्व डी0आई0जी) ने कहा कि महिलाओं के कार्यस्थल पर होने वाले किसी तरह के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए कानून बहुत सख्त है, बस जरूरत है कि पीड़ित महिला अपनी आवाज उठाये। विशिष्ट अतिथि श्री अवधेश सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक ने कहा कि लड़कों को परिवार में यह संस्कार दिये जाने चाहिए कि वह समाज की प्रत्येक लड़की को सम्मान की दृष्टि से देखे। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही डॉ0 रेनू चन्द्रा ने कहा कि हर बेटी को अच्छी शिक्षा दी जाए ताकि वह आर्थिक रूप से सशक्त हो सके, इससे उसकी आवाज में बुलंदी आएगी। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एवं प्रबन्धकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार, ए0डी0आर0 के प्रदेश समन्वयक श्री अनिल शर्मा, संस्था के उपाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री अनिल सिंदूर, प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर महाविद्यालय के तमाम शिक्षक एवं शिक्षणेतर साथियों के साथ समाजसेवी सारिका आनंद, श्रीमती अलका अग्रवाल आदि उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अलकारानी पुरवार ने एवं आभार प्रदर्शन डॉ0 शैलजा गुप्ता ने किया। इस दौरान कई छात्र–छात्राओं ने मुख्य अतिथि से सवाल भी पूंछे, जिसका उन्होने विस्तार से जवाब दिया।

समारोह दृश्य श्रव्य समिति आख्या
(2020-2021)

डॉ. राजेश पालीवाल
संयोजक, समारोह दृश्य श्रव्य समिति

वर्ष 2020–21 कोरोना काल से प्रभावित वर्ष रहा जिसमें महाविद्यालय में निम्नलिखित कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

स्वतन्त्रता दिवस समारोह 15 अगस्त 2020 :– महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस पर प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार व प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया ने झण्डा फहराया। समारोह दृश्य–श्रव्य समिति की उपसंयोजिका डॉ0 माधुरी रावत ने निदेशक, उच्च शिक्षा से प्राप्त संदेश का वाचन किया जिसमें विशेष रूप से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया। माननीय कार्यक्रम अध्यक्ष जी ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उपस्थित लोगों से महाविद्यालय के विकास के लिए अपना उच्चतम योगदान देने की अपील की। प्राचार्य जी द्वारा उपस्थित जन समुदाय को स्वतन्त्रता दिवस की बधाई दी गई।

गाँधी एवं शास्त्री जयन्ती समारोह 2020 :–इस राष्ट्रीय पर्व पर सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी ने झण्डा फहराया। प्राचार्य जी ने उपस्थित जन समूह को गाँधी एवं शास्त्रीजी के बताये रास्ते पर चलने की बात रखी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 माधुरी रावत असिस्टेण्ट प्रोफेसर मनोविज्ञान विभाग ने किया इसके बाद प्रशासनिक भवन के कार्यालय में महाविद्यालय की परम्परानुसार हवन कार्यक्रम एवं महाविद्यालय का स्थापना संकल्प वाचन आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया एवं शिक्षा था शिक्षणत्तर कर्मचारियों ने सहभाग किया। इस पावन अवसर पर महाविद्यलय के प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डा0 हरीमोहन पुरवार जी के अद्वितीय संग्रह की प्रदर्शनी पुस्तकालय के सभागार में 09 बजे उद्घाटित हुई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन अपर जिलाधिकारी श्री पी0के0 सिंह जी द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में लगे सिक्का, डाक–टिकट एवं चित्रों को देखकर सभी महानुभावों ने देश प्रेम की प्रेरणा ली और संग्रह की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

विश्व हाथ धुलाई दिवस दिनांक 15/10/2020 :– उ0प्र0 शासन की मंशानुसार 15 अक्टूबर 2020 को विश्व हाथ धुलाई दिवस पर 12.00 बजे से बेबिनार महाविद्यालय में आयोजित किया गया। बेबिनार का विषय 'सभी के लिए हाथ स्वच्छता' (Hand Hygiene for all) था। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 तारेश भाटिया जी ने कोरोनाकाल में हाथों की स्वच्छता के महत्व को बताया। डॉ0 राजेश पालीवाल ने दिन प्रतिदिन के जीवन में हाथों की स्वच्छता से विभिन्न रोगों से बचने की बात रखी क्योंकि 90 प्रतिशत बीमारियाँ संक्रमित हाथों से होती है। डॉ0 रश्मि सिंह ने पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन के माध्यम से हाथों की स्वच्छता से विश्व एवं भारत में फैलने वाले रोगों और इनसे बचने के लिए महत्वपूर्ण बातें बतायी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 माधुरी रावत ने किया। इस कार्यक्रम में शिक्षकों के साथ–साथ विद्यार्थियों ने भी अपनी सहभागिता प्रदर्शित की। इस अवसर पर महाविद्यालय स्तर पर साबुन बैंक की स्थापना की गई। साबुन बैंक के माध्यम से उरई नगर की मलिन बस्तियों में साबुन वितरित किये गये।

भारत रत्न माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जन्म दिवस कार्यक्रम :– शासन के पत्र संख्या–5706/सत्तर–3–2020 उच्च शिक्षा अनुभाग–3 दिनांक 17 दिसम्बर 2020 के अनुसार महाविद्यालय में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हुई प्रतियोगिताओं में चित्रकला में प्रथम स्थान तान्या निगत बी.ए. प्रथम वर्ष ने द्वितीय स्थान आकांक्षा यादव बी.एस. सी. द्वितीय वर्ष एवं तृतीय स्थान सुषमा बी.ए., द्वितीय वर्ष ने प्राप्त किया। निबन्ध प्रतियोगिता में प्रगति एम.ए. प्रथम वर्ष ने प्रथम, जबकि प्रगति मिश्रा बी.ए. प्रथम वर्ष तथा अनिरुद्ध प्रताप सिंह ने संयुक्त सत्र से द्वितीय स्थान पर रहे। तृतीय स्थान नेहा बी.ए. तृतीय वर्ष ने प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में ऑन लाईन काव्य पाठ का भी आयोजन किया गया। जिसमें विवेक कुमार, अमित कुमार, प्रियंका, नेहा राजपूत, श्रद्धा, वर्षाराज आदि ने स्वरचित काव्य पाठ किया।

गणतंत्र दिवस समारोह– 26 जनवरी 2021 को महाविद्यालय में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार जी ने झण्डा फहराया। इस अवसर पर माननीय अवैतनिक मंत्री जी ने केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यो की सराहना की एवं गणतंत्र दिवस की बधाई दी तथा उपस्थित प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य, प्राचार्य, शिक्षकों शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को राष्ट्र को सर्वोपरि रखकर निर्माण में अपना–अपना महत्वपूर्ण योगदान देने की बात की ताकि हम विश्व के अग्रणी देशों में शामिल हो सकें एवं महाविद्यालय के विकास के लिए निरन्तर कार्य करते रहें। प्राचार्य श्री राजन भाटिया ने इस अवसर पर देश के वीर सपूतों को याद करते हुए महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में कम्प्यूटर, इन्टरनेट एवं स्मार्ट कक्ष के विस्तार की बात रखी। उच्च शिक्षा निदेशक से प्राप्त संदेश का वचान डॉ0 माधुरी रावत ने किया। इस संदेश में शासन से उ0प्र0 के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयासों को सम्मिलित किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ0 राजेश पालीवाल ने किया।

चौरी चौरा शताब्दी समारोह :– चौरा चौरी शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में दिनांक 04 फरवरी 2021 को एक भव्य आयोजन किया गया। कोरोना काल की गाइड लाइन को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम महाविद्यालय के समारोह स्थल पर प्राचार्य जी एवं शिक्षक तथा विद्यार्थी उपस्थित हुए। इस अवसर पर डॉ0 राजेश पालीवाल ने चौरी चौरा की ऐतिहासिक घटना एवं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 माधुरी रावत ने किया। कार्यक्रम के अगले चरण में शहीदों के स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्राचार्य श्री राजन भाटिया ने रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया। इस रैली में एन.सी.सी., एन.एस.एस., रोवर–रेंजर के कार्यक्रम अधिकारी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। सर्वप्रथम इलाहाबाद बैंक के आगे बढ़े हुए माहिल तालाब पर गाँधी जी की प्रतिमा पर माल्यापर्ण हुआ तत्पश्चात यह रैली भगत सिंह चौराहे की ओर गई। फिर गाँधी चबूतरा पर देश भक्ति के नारे एवं गीत दौहराये गए। तत्पश्चात शहीद भगत सिंह चौराहे पर शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव की प्रतिमा पर माल्यापर्ण एवं श्रृद्धा सुमन अर्पित किये फिर यह विद्यार्थियों और प्राध्यापकों का समूह देशभक्ति के वातावरण से मुख्य सड़क को अभिसिंचति करता हुआ वापस आकर राष्ट्रभक्ति के नारों के साथ महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर सम्पन्न हुआ। 23 मार्च 2021 को सेमिनार हॉल में पर बी0एड0 के विद्यार्थियों द्वारा चौरी चौरा की घटना पर अभूतपूर्व नाट्य प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी "सीखने के लिये सर्वोत्तम वातावरण एवं छात्रों का सहयोग : नवीन शिक्षा नीति के संदर्भ में"

डॉ. नमो नारायण
असि0 प्रो0, राजनीति विभाग

दिनांक 05 सितम्बर 2020 को शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर उच्च शिक्षा निदेशालय, प्रयागराज के निर्देशन में IQAC दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई के द्वारा "सीखने के लिए सर्वोत्तम वातावरण एवं छात्रों का सहयोग : नवीन शिक्षा नीति के संदर्भ में" विषय पर एक दिवसीय वेब सगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस वेब संगोष्टी की संरक्षक आदरणीय प्रो. वन्दना शर्मा, उच्च शिक्षा निदेशक, प्रयागराज, मुख्य अतिथि डॉ. संध्यारानी, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, झांसी एवं दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया के निर्देशन में विषय के मर्मज्ञ वक्ताओं ने अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किये। वक्ताओं में दयानन्द वैदिक कॉलेज के शिक्षक शिक्षा विभाग के पूर्व उपाचार्य प्रो. रामनिवास मानव, दयालबाग एजूकेशन इंस्टीटयूट, आगरा के डॉ. अरुण कुमार कुलश्रेष्ठ, पं. जे.एन. पी.जी. कॉलेज, बांदा के डॉ. ओमकार चौरसिया, सदानंद डिग्री कॉलेज फतेहपुर से डॉ. यीश नारायण द्विवेदी, डी.वी. कॉलेज, उरई के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय तथा समाजशास्त्र विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार खरे ने वेब संगोष्टी के निर्धारित विषय पर अपने–अपने बहुमूल्य विचार रखे।

बेव संगोष्ठी के प्रथम वक्ता प्रो. रामनिवास मानव ने सीखने के वातावरण में भौतिक वातावरण (आधारभूत संरचना), एकेडमिक वातावरण (कुशल मैनेजमेंट, योग्य प्राचार्य व प्राध्यापक) तथा कक्षा के वातावरण (शिक्षार्थी, शिक्षक व पाठ्यक्रम) के महत्व को स्पष्ट करते हुए शिक्षकों के लिए लोकतांत्रिक ढंग से शिक्षण कार्य करने के महत्व को समझाया। साथ ही नई शिक्षा नीति 2020 के समावेशी आयामों को स्पष्ट किया। डा. यीश नारायण द्विवेदी जी ने शिक्षा के निजीकरण की समस्या, उच्च शिक्षा में भर्ती प्रणाली की भ्रष्ट व्यवस्था तथा भारतीय संस्कृति और मूल्यों की शिक्षा में स्थापना को विशद रूप में प्रस्तुत किया। डॉ. द्विवेदी का स्पष्ट अभिमत था कि सुयोग्य शिक्षा के अभाव में राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक मूल्यों का क्षय होता है और राष्ट्रीय भावना स्थापित नहीं होती है, नई शिक्षा नीति 2020 में निहित भावना इन सब कमियों को दूर करती हुई दिखाई देती है। इसमें सतत मूल्यांकन परीक्षा प्रणाली में सुधार, स्ट्रीम की लोचशीलता आदि महत्वपूर्ण प्रावधान है। डॉ. राजेशचन्द्र पाण्डेय ने नई शिक्षा नीति को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहते हुए उसके बहुविध पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पहली बार क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम तैयार करने तथा संविधान की 8वीं अनुसूची की 22 भारतीय भाषाओं के लिए अलग–अलग अकादमियों की स्थापना करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसमें पाठ्यक्रम केन्द्रित शिक्षा के द्वारा रचनात्मकता और तार्किकता पर जोर दिया गया है। डॉ. आनन्द कुमार खरे ने कहा

कि अभी जो शिक्षा दी जा रही है उसमें वेतन और पैकेज प्राथमिकता पर रहते हैं यही कारण है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था ईमानदार डॉक्टर, इंजीनियर और प्रशासनिक अधिकारी नहीं दे पाई है। नई शिक्षा नीति के सभी उपांगों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक और नैतिक मूल्यों की कमी को दूर करने की ईमानदार कोशिश की गई। दयालबाग शिक्षण संस्थान के प्रो.ए.के. कुलश्रेष्ठ ने 21वीं सदी की चुनौतियों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम के निर्माण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि कौशल आधारित अधिगम तथा विश्लेषणात्मक अधिगम के साथ संपोषणीय और समावेशी शिक्षा व्यवस्था को स्थापित किया जाए। उनका मत था कि अभी तक शिक्षा व्यवस्था में सैद्धान्तिक ज्ञान पर अधिक जोर दिया जाता था जबकि नई शिक्षानीति में सिद्धान्त विज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान, पाठ्यक्रम में विविधता और स्थानीयता सामुदायिक सहभागिता, क्यों और कैसे पर जोर, अवधारणात्मक समझ, तार्किकता, विशिष्ट क्षमताओं की पहचान करना तथा तकनीक के प्रयोग पर जोर दिया गया है। डॉ. ओमकार चौरसिया ने बताया कि समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को अब तक प्राप्त नहीं किया जा सका है। नई शिक्षा नीति 2020 में इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा पर सरकार द्वारा जीडीपी का 06 प्रतिशत खर्च करना, शिक्षा व्यवस्था में स्ट्रीम की लोचशीलता अर्थात् कला संकाय के विषयों के साथ विज्ञान विषय तथा विज्ञान के विषयों के साथ कला के विषय का अध्ययन करना, स्नातक के प्रथम द्वितीय और तृतीय वर्ष के लिए प्रमाण पत्र, डिप्लोमा और डिग्री कोर्स के आधार पर नया निर्धारण 10+2+3 के स्थान पर 5+3+3+4 आदि विषयों को विशद रूप में प्रस्तुत किया। साथ ही उन्होंने कहा कि अब सरकारें मानव को संसाधन नहीं अपितु नागरिक समझेगी इसको मानव संसाधन विकास मंत्रालय के नाम परिवर्तन शिक्षा मंत्रालय के रूप में देखा जा सकता है।

इस वेब संगोष्ठी के अतिथियों का स्वागत एवं परिचय डी.वी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया के द्वारा किया गया। प्राचार्य जी ने शासन एवं उच्च शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा नई शिक्षा नीति 2020 के लिए वेब सेमिनार का निर्देशन देने एवं यू.जी.सी. द्वारा शिक्षकों को शिक्षक दिवस पर अवर टीचर हीरोज ट्विट पर टैग करने के लिए मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहित करने की प्रशंसा की। वेब संगोष्ठी के संयोजक डॉ. राजेश पालीवाल ने कहा कि देश की संस्कृति एवं सभ्यता को बचाए रखने के लिए नई शिक्षा नीति में महत्वपूर्ण समावेशी बिन्दुओं का उल्लेख किया है। इन प्राविधानों को केन्द्र के लिए राज्य सरकारों द्वारा शीघ्र लागू करने ज्ञान के साथ–साथ नवाचार कौशल, आचरण, आदि में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो सकता है। इस सम्पूर्ण वेब संगोष्ठी का संचालन संगोष्ठी के सचिव डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य द्वारा किया गया।

उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार में महान शक्तिशाली अस्त्र है। इसको हर कोई नहीं चला सकता। केवल शारीरिक योग्यता, इसके लिए कोई योग्यता नहीं। यदि ईश्वर में जीती–जागती श्रद्धा न हो, तो दूसरी योग्यताएँ बिलकुल निरूपयोगी हैं।

–महात्मा गांधी

सेवानिवृत्त

DR. TARESH BHATIA

Joining : 01/08/1981 **Retirement :** 30/06/2021

Personal Details :-

Father's Name	: Late. Dr. Kailash Chandra Bhatia
Wife	: Dr. Saroj Bhatia
Date of Birth	: 7th March, 1959
Designation	: Ex Principal & Associate Professor, Post Graduate & Research Deptt. of Psychology, Dayanand Vedic P.G. College, Orai (UP)
Educational Qualifications	: M.A. Ph.D (Psychology) 1987 from Agra University, Agra.
Teaching Experience	: About 40 Years.
Research Experience	: 106 Students have submitted their field study reports and 16 awarded.
Seminar Organised	: UGC Seminar on "Stress & Coping" organised by the Deptt. Of Psychology. D.V. (P.G.) College, Orai on 17-18 Dec. 2005.

Publications

* Research paper : About 25 research papers, articles etc. are published in different journals .

*Psychological Test : About 50 psychological test are constructed & standardized.

Books

*"Social Tension : Different Aspects" (1994) (Edited Book) Divya Prakashan, Lucknow,

*Adhunik Vigyapan Aur Jan Sampark (2000) Takshila Prakashan, New Delhi.

* Modern Psychological Statistics (2010), Lavanya Prakashan, Orai (U.P.)

*Adhunic Sankhikiya Vidhiya (2018), Agrawal Publication, Agra

Associate Editor

*Associate Editor Indian Explorer Journal of Social Science & Humanities.

* Editorial Advisory Board, Shodh-Dhara (Research journal)

Life Member

* The Indian Science Congress Association.

* Council of Behavioural Scientists.

* Indian Journal of Psychology & Mental Health.

* Psycho-Linguistics Association of India (PLAI).

*Community Psychology Association of India.

*Indian Psychometric & Education Research Association.

* Praachi Psycho-Cultural Research Association.

Ex. Member

*Member Executive Council, Academic Council & Convenor

*Board of Studies (Psychology) Bundelkhand University, Jhansi.

नाम	:	**श्री अनन्त कुमार खरे**
पिता का नाम	:	स्व. श्री चन्द्रकृष्ण खरे
माता का नाम	:	श्रीमती सत्यवती श्रीवास्तव
पत्नी का नाम	:	श्रीमती रीना खरे
पुत्र एवं पुत्रवधु	:	मुदित खरे–मल्लिका खरे (सॉफ्टवेयर इंजीनियर)
पुत्री	:	ऋषिराज खरे
शैक्षिक योग्यताएं	:	बी.ए., एम.ए. (इतिहास)
जन्मतिथि	:	15.09.1959
कार्यभार ग्रहण की तिथि	:	22.01.1981
सेवा निवृत्ति की तिथि	:	14.09.2019
सेवा निवृत्ति के समय धारित पद	:	कार्यालय अधीक्षक
नाम	:	**श्री कौशल किशोर द्विवेदी**
पिता का नाम	:	स्व. श्री खेमचन्द्र
माता का नाम	:	श्रीमती सियारानी
पत्नी का नाम	:	स्व. श्रीमती ऊषा देवी
पुत्रगण	:	श्री सत्येन्द्र द्विवेदी (एम.ए.) श्री अमित कुमार (बी.एस.सी.) श्री साकेत कुमार (बी.एस.सी.)
पुत्री	:	श्रीमती रुचि
शैक्षिक योग्यताएं	:	एम.ए. (संस्कृत, इतिहास), बी.एड.
जन्मतिथि	:	01.07.1958
कार्यभार ग्रहण की तिथि	:	11.09.1985
सेवा निवृत्ति की तिथि	:	30.06.2018
सेवा निवृत्ति के समय धारित पद	:	पुस्तकालय सहायक
नाम	:	**श्री जगदीश यादव**
पिता का नाम	:	स्व. श्री रामाधार यादव
माता का नाम	:	स्व. श्री चन्द्रावती यादव
पत्नी का नाम	:	श्रीमती किरन यादव
पुत्र एवं पुत्रवधू	:	श्री ओमप्रकाश यादव– शालिनी यादव श्री राजेश यादव– पूजा यादव
शैक्षिक योग्यता	:	5वीं पास
जन्मतिथि	:	15.07.1959
कार्यभार ग्रहण की तिथि	:	21.09.81
सेवा निवृत्ति की तिथि	:	14.07.2019
सेवा निवृत्ति के समय धारित पद	:	लैब ब्याय (बी.एड., विभाग)

स्मृतिशेष
डॉ. यामिनी

1 अक्टूबर को उदयपुर (राजस्थान) में डॉ. यामिनी का जन्म हुआ। आपके पिता उच्च शिक्षा प्राप्त और माता एक विदुषी महिला थीं। आपके पति डॉ. जी.पी. श्रीवास्तव भौतिक विज्ञान विभाग, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई से सेवानिवृत्त हुए। आपने एम.ए. (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से किया एवं पी–एच.डी. की उपाधि विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से प्राप्त की। आपके दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई में अध्यापन कार्य 1967 में आरम्भ किया तथा जून 2002 में रीडर एवं विभाग प्रभारी, हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त हुईं।

डॉ. यामिनी बुन्देलखण्ड बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की विद्या–परिषद एवं कार्यकारिणी परिषद, कला संकाय की सम्मानित सदस्य रहीं एवं उन्होंने हिन्दी विषय की पाठ्यक्रम समिति, शोध समिति की संयोजिका के रूप में भी अपनी सेवाएं प्रदान कीं। शोध निर्देशिका के रूप में 04 शोध छात्र–छात्राओं को पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने में सहयोग प्रदान किया। सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी आप साहित्य सृजन में सक्रिय रहीं आपके 'अन्तर्मन से', 'उन्मुक्त प्रवाह', 'कबीर : एक जीवन्त स्पंदन' कुछ लम्बा एक अहसास' आदि अनेक पुस्तकें लिखीं। आप आजीवन साहित्य सेवा एवं समाज सेवा में संलग्न रहीं और अपने अनेकों उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए आपका देहावसान दिनांक 18.12.2020 को हो गया।

स्मृतिशेष

डॉ0 राजेन्द्र कुमार निगम

कार्यभार ग्रहण तिथि : 18 / 07 / 1977

सेवानिवृत्त–30 / 06 / 2017

पिता : श्री कृष्ण गोपाल निगम (सहायक रजिस्ट्रार कानूनगो, तहसील बांदा)

शिक्षा :

हाईस्कूल–1968 प्रथम, माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश

इण्टर– 1970 द्वितीय, इलाहाबाद बोर्ड

बी.एससी–1972 द्वितीय, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर

एम.एससी–1974 प्रथम, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

शोधकार्य–सिक्ख सैन्य पद्धति पर 'विशेष अध्ययन'

जन्मतिथि–02.07.1954

सेवा प्रारम्भ करने की तिथि–18.07.1977

सेवानिवृत्ति की तिथि–19.07.2016

स्वर्गारोहण तिथि– 20.04.2021

अपनी सरलता व सौम्यता के कारण एक अलग ही पहचान बनाने वाले डॉ0 राजेन्द्र कुमार निगम जी का जन्म 2 जुलाई सन 1954 में बाँदा जिले में हुआ था। आपके पिता श्री गोपाल निगम पेशे से सहायक रजिस्ट्रार कानूनगो, तहसील बाँदा में तैनात थे। राजेन्द्र जी ने प्रारम्भिक शिक्षा बाँदा से अर्जित की। सन् 1972 में आपके कानपुर विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. की परीक्षाा उत्तीर्ण की। जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से एम.एस.सी. उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप शोधकार्य में संलग्न रहे। उसी दौरान 18 जुलाई 1971 को आपने महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक सैन्य विज्ञान के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। आपने कॉलेज में कई कमेटियों जैसे अनुशासन समिति, छात्र कल्याण समिति, परीक्षा समिति इत्यादि में 17.07.2016 तक सफलतापूर्वक कार्य करते हुए सेवानिवृत्त हुए। अपने विषय के प्रखर विद्वान् रहे। डॉ0 राजेन्द्र निगम शिक्षकों के ही नहीं बल्कि छात्र / छात्राओं के बीच में भी अपने आर्कषक व्यक्तित्व के कारण बहुत लोकप्रिय रहे और इन्हीं लोकप्रियताओं के बीच आप जैसे महान् व्यक्तित्व का निधन कोरोना की दूसरी लहर में 20 अप्रैल 2021 को हो गया।

स्मृतिशेष
डॉ. आनन्द कुमार खरे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, अपने सरल व्यक्तित्व से सभी को स्वाभाविक रूप से आकर्षित एवं प्रभावित करने वाले डॉ. आनन्द कुमार खरे जी का जन्म 01 अगस्त, 1961 में जनपद हमीरपुर के राठ कस्बे में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा गृह–जनपद राठ में ही सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् राठ से ही आपने स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने परास्नातक की परीक्षा जनपद जालौन, के दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई से पूर्ण की। उसके बाद सन् 1988 में डी.वी. कालेज में ही आपने समाजशास्त्र विभाग के प्रवक्ता पद पर कार्यभार ग्रहण किया। अध्यापन के साथ–साथ ही आपने बुंदेलखंड विश्वविद्यालय से पीएच.डी की उपाधि अर्जित की। सन् 1995 में आप मध्यप्रदेश के श्री लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव की सुयोग्य पुत्री निशा श्रीवास्तव के साथ विवाह सूत्र में बंध गए। एक पुत्र और एक पुत्री के पिता होने का सौभाग्य आपने प्राप्त किया। आपका अकादमिक क्षेत्र कई उपलब्धियों से भरा है। आपके शोधपत्र कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपके निर्देशन में कुल 06 शोधार्थियों ने शोध उपाधि प्राप्त की। इसके साथ ही महाविद्यालयों की विभिन्न समितियों में आपने सदस्य एवं संयोजक के रूप में उत्तरदायित्व का निर्वहन किया। दिनांक 4/2/2018 से 27/6/2019 तक आपने महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य के पद का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। आपके ही कार्यकाल में महाविद्यालय को पहली बार जनपद जालौन का नोडल केन्द्र बनाया गया। आप बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी के अध्ययन के पाठ्यक्रम समिति के सदस्य भी रहे। अपने आकर्षक एवं उदात्त व्यक्तित्व से सभी को मोहित करने वाले डॉ. आनन्द खरे जी को कोरोना वायरस की द्वितीय लहर ने अपना ग्रास बना लिया एवं दिनांक 8/5/2021 को आप अपने सेवाकाल के दौरान ही पंचतत्व में विलीन हो गये।

स्मृतिशेष

डा. योगेन्द्र 'बेचैन'

डॉ0 योगेन्द्र 'बेचैन' का जन्म 70 के दशक में उ.प्र. के बिजनौर जिले में हुआ था। चार भाई–बहनों में ये सबसे बड़े थे। इनके माता–पिता पेशे से शिक्षक थे। ये बचपन में बहुत शरारती थे। अतः इनके माता–पिता ने इनका उपनाम 'बेचैन' रख दिया। शरारती होने के बावजूद भी ये पढ़ने में बहुत तेज थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक पाठशाला से हुई। हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ इन्होंने यू.पी. बोर्ड से बी.एससी. और एम.एससी. की परीक्षाएँ बरेली विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। शिक्षा के क्षेत्र में रुचि होने के कारण इन्होने शिक्षाशास्त्र में बी.एड. और एम.एड. की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने की उत्कृष्ट जिजीविषा के चलते इन्होंने यू.जी.सी. नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली से शिक्षा शास्त्र में एम.फिल. (प्रथम श्रेणी) में उत्तीर्ण किया। सन् 2005 में उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद से चयनित होकर श्री योगेन्द्र दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई में सहायक प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। दयानन्द वैदिक महाविद्यालय में सन् 2005 से 2019 तक इन्होंने असिस्टेन्ट प्रोफेसर और फिर एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। डा. योगेन्द्र ने शिक्षक–शिक्षा विभाग में यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित सेमिनार, क्रांफ्रेंस और कार्यशालाओं का सफलतापूर्वक आयोजन कराने के साथ ही कॉलेज के विकास के लिए यू.जी.सी. से करीब एक करोड़ की धनराशि स्वीकृत कराने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन किया। आप सन् 2014–16 तक माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड इलाहाबाद में सदस्य के तौर पर कार्यरत रहे। माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, में 2 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त बाद आप महाविद्यालय वापस लौट आए। डॉ. योगेन्द्र सन् 2019 में स्थानान्तरण कराके वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ़ चले गए। आपके परिवार में पत्नी और दो पुत्र हैं। श्री 'बेचैन' का देहान्त अप्रैल 2020 में अलीगढ़ में हुआ।

स्मृतिशेष

श्री सुबोध कुमार सरोज

श्री सुबोध कुमार का जन्म दिनांक 15.05.1989 को उत्तर प्रदेश के जिला प्रतापगढ़ के गाँव सूबेदार का पुरवा के एक कृषक परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री विश्वनाथ सरोज एवं माता का नाम श्रीमती चिन्तामणी है। यह अपने चारों भाई–बहनों में सबसे बड़े थे। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती सुशीला देवी है एवं इनके एक पुत्र व पुत्री हैं। आप स्वभाव से अत्यन्त शांत, हंसमुख तथा अपने कार्य के प्रति जिम्मेदार, लगनशील तथा कर्तव्यनिष्ठ रहे।

इन सभी गुणों से भरे उत्तम व्यक्तित्व श्री सुबोध कुमार सरोज को काल की अनिश्चित एवं अपरिहार्य गति ने अपना ग्रास बनाया। अतः एक आकस्मिक एवं अत्यन्त दुःखद दुर्घटना में आपका देहावसान दिनांक 08.10.2020 को सेवाकाल के दौरान हो गया। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव के ही प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। माध्यमिक एवं स्नातक की शिक्षा जिला–मुख्यालय प्रतापगढ़ की ही संस्था से प्राप्त की। इन्होंने दिनांक 30/10/2014 को दयानन्द वैदिक कालेज, उरई में कार्यालय सहायक के पद पर सेवा देना प्रारम्भ किया था। एक शिक्षणेतर कर्मचारी के रूप में आपका कार्यकाल सुखद एवं स्मरणीय कहा। श्री सुबोध जी की स्मृतियां हमेशा महाविद्यालय परिवार को स्पन्दित करती रहेंगी।

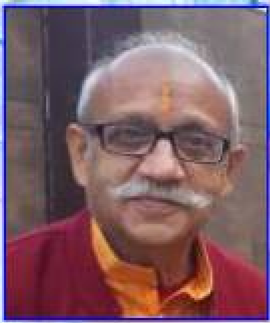

डॉ. हरीमोहन पुरवार
अध्यक्ष/उपाध्यक्ष

प्रो० (डॉ०) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य

डॉ. देवेन्द्र कुमार
अवैतनिक मंत्री/प्रबन्धक

प्रबन्धकारिणी कमेटी

1.	डॉ0 हरीमोहन पुरवार	अध्यक्ष/उपाध्यक्ष
2.	डॉ0 देवेन्द्र कुमार	अवैतनिक मंत्री/प्रबन्धक
3.	श्री इन्द्रजीत सिंह यादव	सदस्य
4.	श्री हरीशंकर रावत	सदस्य
5.	श्री राजेन्द्र कुमार खरे	सदस्य
6.	डॉ0 दिलीप सेठ	सदस्य
7.	श्री सत्यप्रकाश खरे	सदस्य
8.	डॉ0 राकेश गुप्ता	सदस्य
9.	श्री कैलाश खरे	सदस्य
10.	प्राचार्य	पदेन सदस्य
11.	शिक्षक प्रतिनिधि सदस्य	
12.	शिक्षक प्रतिनिधि सदस्य	
13.	शिक्षक प्रतिनिधि सदस्य	
14.	शिक्षणेतर कर्मचारी प्रतिनिधि सदस्य	

- "वेदों की ओर लौटो" यह उन्नत एवं स्थिर जीवन का सर्वश्रेष्ठ नारा है।
- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–अर्थात् सारे संसार को सबसे पहले श्रेष्ठ मानव बनाओ।
- 'स्वराज्य' मानव की विचारशक्ति, तर्कशक्ति, वैज्ञानिक चेतना के अस्तित्व का मूल आधार है।
- हमारा स्वतन्त्र विचारना, बोलना और कर्त्तव्यपालन करना प्रमुख धर्म है, इसी से हम पुनः वैभवशाली, शक्तिशाली, सुसम्पन्न, सदाचारी और महान् बन सकते हैं।
- संसार का उपकार करना, अपनी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये।
- कार्य (क्या करना चाहिए) अकार्य (क्या नहीं करना चाहिए) के संघर्ष की परिस्थिति में धर्मग्रन्थों का प्रमाण रूप में आश्रय लेना चाहिए।
- कर्म सिद्धान्त का ज्ञान, पुनर्जन्म तथा सन्यास भावना अपने जीवन दर्शन के स्तम्भ होते हैं।
- 'सनातन हिन्दू धर्म' प्राणिमात्र के प्रति संवेदना रखने वाला शाश्वत और अनन्तकाल तक स्थायी धर्म है।
- भारतीय दर्शन मत–मतांतरों की अविद्या को मिटाये, वैदिक साहित्य के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करे, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करे।
- आधुनिक इतिहास ग्रन्थों में ईश्वर और ऋषियों की निन्दा की गई है जो ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं दिखाई देती।

स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति
और स्वदेशोन्नति के अग्रदूत एवं
वैचारिक आन्दोलन, शास्त्रार्थ एवं
व्याख्यान के पुरोधा–

स्वामी दयानन्द सरस्वती
(1824–1883)